ज्योतिष जीवन दर्पण

Name - Sample

Date - 18/12/1973 **Time - 01:45:00**

POB - Ballia (up), INDIA

Longitude - 084:10:00 E

Latitude - 025:45:00 N

MindSutra Software Technologies

www.mindsutra.com, www.webjyotishi.com

Contact - 9818193410, 9350247058

© Mindsutra's StarLight Premium 11

श्री गणेशाय नमः

नवग्रह स्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरुप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूं। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूं। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूं। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूं। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूं। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूं। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूं। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूं। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्रीपुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

ज्योतिष सारिणी

मुख्य विवरण

लिंग	पुरूष
जन्म दिनांक	18 दिसम्बर 1973
जन्म समय	01:45:00
जन्म दिन	मंगलवार
जन्म स्थान	Ballia (up)
राज्य	
देश	INDIA
अक्षांश	025:45:00 N
रेखांश	084:10:00 E
स्थानीय समय संस्कार	00:06:40 hrs
स्थानीय समय	01:51:40 hrs
समय क्षेत्र	05:30 E
समय संशोधन	00:00:00
सांपातिक काल	07:36:55 hrs
इष्ट काल	47: 52: 16 Ghati

पंचांग विवरण

विक्रम संवत	2030
शक संवत	1895
संवत्सर	प्रमादी
ऋतु	हेमन्त
मास	पौष
पक्ष	कृष्ण
वार	सोमवार
तिथि	नवमी
नक्षत्र (पद)	हस्ता (2)
योग	सौभाग्य
करन	गरिज

अवकहड़ा चक्र

पाया	स्वर्ण
वर्ण	वैश्य
वश्य	द्विपद
योनि	महिष (स्त्री)
गण	देव
नाड़ी	आदि
रज्जु	कंठ
तत्व	अग्नि
तत्वाधिपति	मंगल
विहग	वायस
नाड़ी पद	मध्य
वेध	शतभिषा
आद्याक्षर	श
दशा बैलेंस	चन्द्रमा – 5व05मा026दि0
वर्तमान दशा	शनि–बुध–बुध
भयात	27: 30: 35 Ghati
भभोग	61: 31: 25 Ghati
सूर्य राशि (वैदिक)	धनु
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	धनु
अयनांश	N.C.Lahiri
अयनांश मान	023:29:36
देकानेट	3
फेस	VI
सूर्योदय	06:36:32AM
सूर्यास्त	05:03:05PM
जन्मदिन का ग्रह	चन्द्रमा
जन्मसमय का ग्रह	शनि

लग्न
कन्या

राशि
कन्या

नक्षत्र – पद
हस्ता – 2

लग्नाधिपति
बुध

राशिपति
बुध

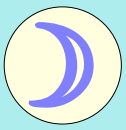

नक्षत्रपति
चन्द्रमा

घात चक्र

भद्रा अशुभ मास	शनिवार अशुभ वार	1 अशुभ प्रहर
मिथुन अशुभ राशि	मीन अशुभ लग्न	5, 10, 15 अशुभ तिथि
श्रावण अशुभ नक्षत्र	सुकर्मन अशुभ योग	कौलव अशुभ करन

शुभ बिन्दु

9 मूलांक	5 भाग्यांक	3, 9 मित्रांक
2, 4 शत्रु अंक	18, 21, 23, 27, 30, 32, 36, 39 शुभ वर्ष	बुधवार, शुक्रवार शुभ दिन
बुध, शुक्र शुभ ग्रह	मंगल, गुरू अशुभ ग्रह	धनु, मीन, वृष, कर्क मित्र राशि
धनु, मीन, वृष, कर्क मित्र लग्न	पन्ना शुभ रत्न	पन्नी, संगपन्ना, मरगज शुभ उपरत्न
हीरा भाग्य रत्न	गणेश अनुकूल देवता	कांसा शुभ धातु
हरित शुभ रंग	उत्तर दिशा	सूर्योदय के 2 घंटे बाद शुभ समय
शक्कर, हाथीदांत, कपूरस शुभ पदार्थ	मूंग (साबुत) शुभ अन्न	घी शुभ द्रव्य

ग्रह स्थिति (पराशरी)

सूर्य	धनु 02:15:49 मूला (1) सम राशि	चन्द्रमा	कन्या 16:00:57 हस्ता (2) मित्र राशि
मंगल	मेष 04:42:18 अश्विनी (2) स्व नक्षत्र	बुध (अ.)	वृश्चिक 19:51:24 ज्येष्ठा (1) स्व राशि
गुरू	मकर 17:56:39 श्रवण (3) स्व नक्षत्र	शुक्र	मकर 13:00:16 श्रवण (1) नीच राशि
शनि (व.)	मिथुन 08:12:33 अरिद्रा (1) मित्र राशि	राहु	धनु 05:10:35 मूला (2) मित्र राशि
केतु	मिथुन 05:10:35 मृगशिर (4) सम राशि	हर्षल	तुला 03:20:59 चित्रा (4) सम राशि
नेपच्यून	वृश्चिक 14:20:41 अनुराधा (4) सम राशि	प्लूटो	कन्या 13:11:14 हस्ता (1) सम राशि
लग्न	कन्या 28:15:29 चित्रा (2) ---	10वां कस्प	मिथुन 28:56:27 पुनर्वसु (3) ---

ग्रह स्थिति (पराशरी)

ग्रह	व/अ	राशि	अंश	नक्षत्र	पद	कारक	विशेष
AC लग्न		♍ कन्या	28:15:29	चित्रा (14)	2		
☉ सूर्य		♐ धनु	02:15:49	मूला (19)	1	दारा	मित्र राशि
☽ चन्द्रमा		♍ कन्या	16:00:57	हस्ता (13)	2	भ्रात्रि	स्व नक्षत्र
♂ मंगल		♈ मेष	04:42:18	अश्विनी (1)	2	ज्ञाति	स्व राशि
☿ बुध	अ.	♏ वृश्चिक	19:51:24	ज्येष्ठा (18)	1	आत्म	स्व नक्षत्र
♃ गुरू		♑ मकर	17:56:39	श्रवण (22)	3	अमात्य	नीच राशि
♀ शुक्र		♑ मकर	13:00:16	श्रवण (22)	1	मात्रि	मित्र राशि
♄ शनि	व.	♊ मिथुन	08:12:33	अरिद्रा (6)	1	अपत्या	मित्र राशि
☊ राहु		♐ धनु	05:10:35	मूला (19)	2		सम राशि
☋ केतु		♊ मिथुन	05:10:35	मृगशिर (5)	4		सम राशि
⚷ हर्षल		♎ तुला	03:20:59	चित्रा (14)	4		सम राशि
♆ नेपच्यून		♏ वृश्चिक	14:20:41	अनुराधा (17)	4		सम राशि
♇ प्लूटो		♍ कन्या	13:11:14	हस्ता (13)	1		सम राशि

नोट : – (व.) – वक्री, (अ.) – अस्त

लग्न कुण्डली

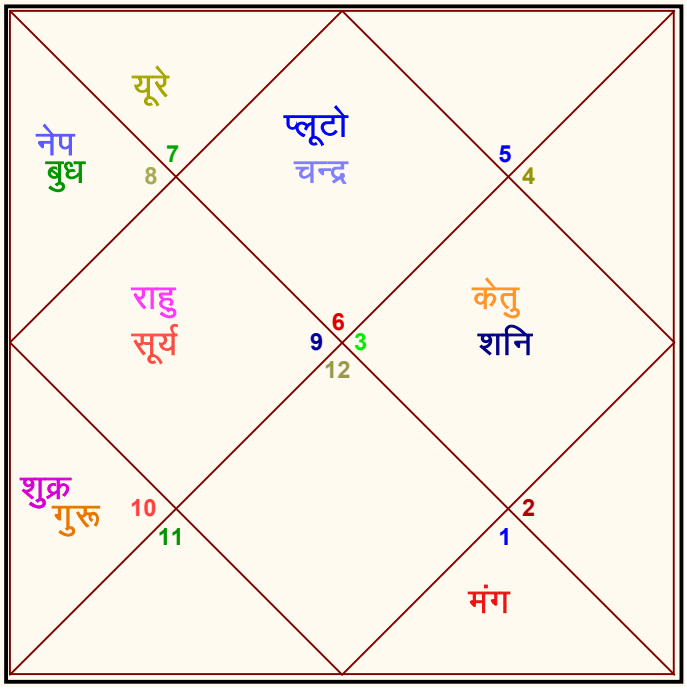

नवांश कुण्डली

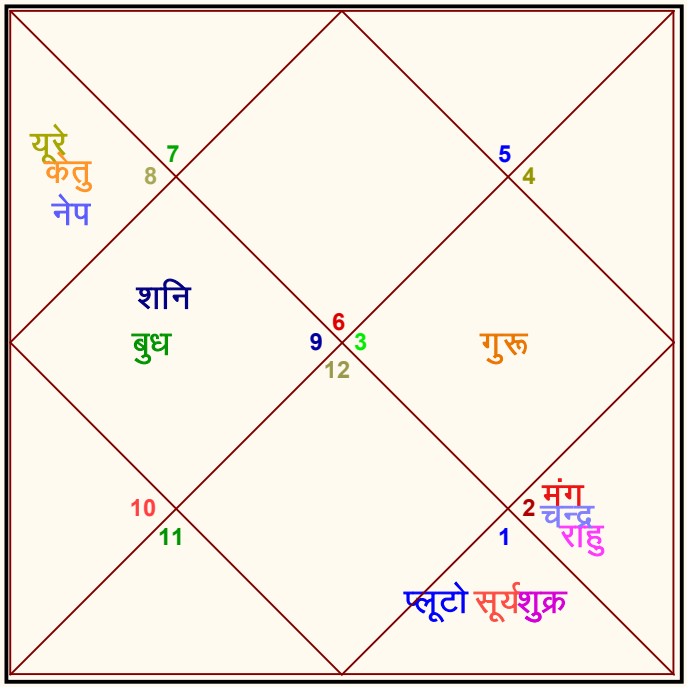

षोडश वर्ग कुण्डली

जन्म/लग्न कुण्डली (डी 1)

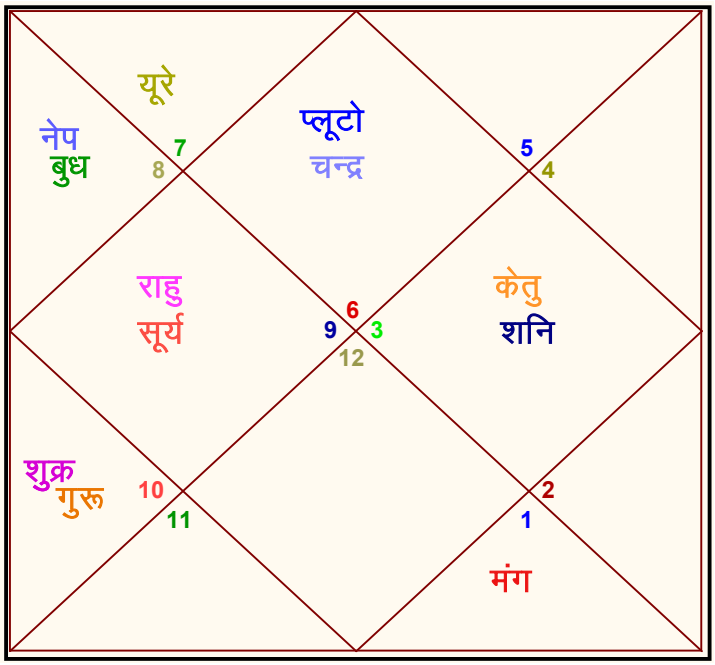

जन्मकुण्डली या लग्न कुण्डली एक व्यक्ति के जीवन की एक विस्तृत तस्वीर है। यह 12 घरों में विभाजित है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, प्रत्येक घर एक अलग राशि और ग्रह द्वारा नियंत्रित होता है। विभिन्न घरों में ग्रहों और राशियों के स्थान और परस्पर क्रिया का मूल्यांकन करके, कुण्डली किसी के व्यक्तित्व, रिश्तों, नौकरी, धन और सामान्य जीवन पथ में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

होरा कुण्डली (डी 2)

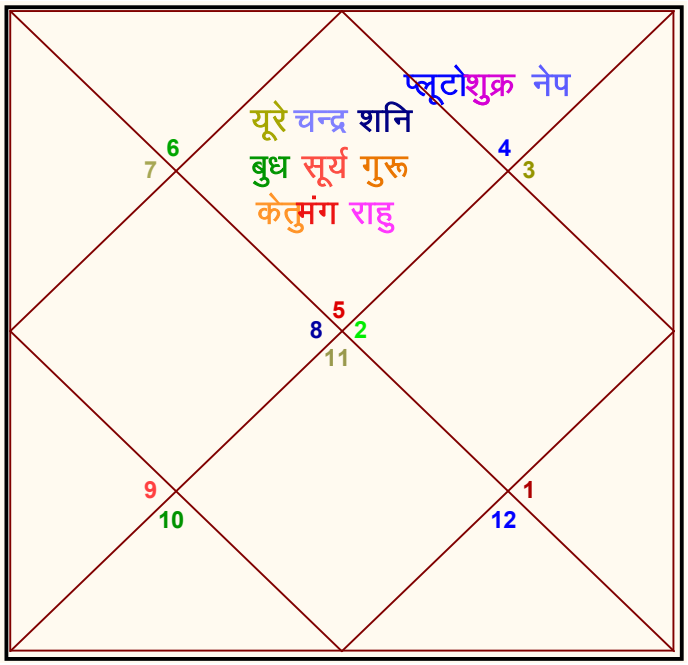

होरा कुण्डली मुख्य जन्म कुण्डली से निर्मित एक विभागीय कुण्डली है जिसका उपयोग समृद्धि और वित्तीय संभावनाओं को निर्धारित करने के लिए किया जाता है। यह जन्म कुंडली में प्रत्येक राशि को आधे में विभाजित करता है, जिसमें सूर्य पहले अर्द्ध भाग पर शासन करता है और चंद्रमा दूसरे पर शासन करता है। ज्योतिषी ग्रहों की स्थिति और होरा कुण्डली के भीतर उनके संबंध या संयोजन का मूल्यांकन करके जीवन भर धन और वित्तीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति की क्षमता का अनुमान लगा सकते हैं।

द्रेष्काण कुण्डली (डी 3)

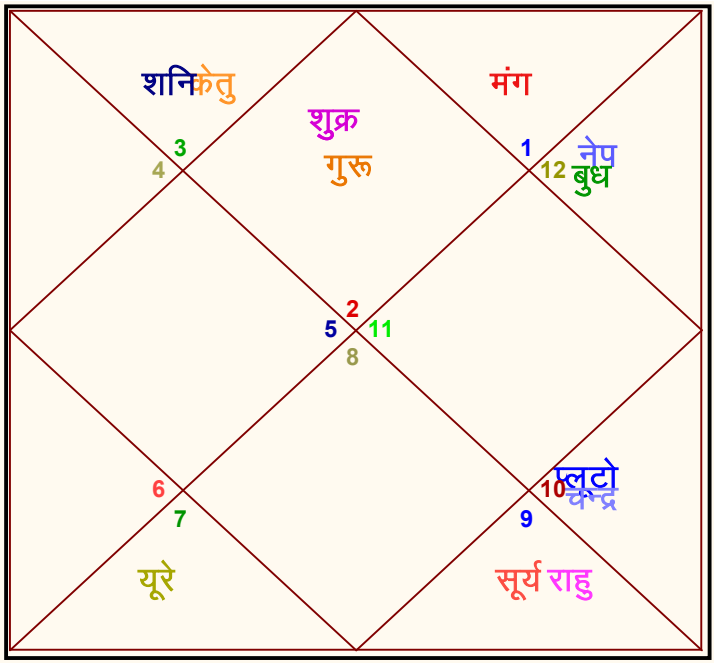

द्रेक्कन कुण्डली, प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 3 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 10 डिग्री माप का होता है। इस कुण्डली का उपयोग किसी के जीवन पर उसके भाई–बहनों, चचेरे भाई–बहनों और अन्य करीबी रिश्तेदारों के प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति की संचार क्षमता, छोटी यात्रा और साहस पर अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

चतुर्थांश कुण्डली (डी 4)

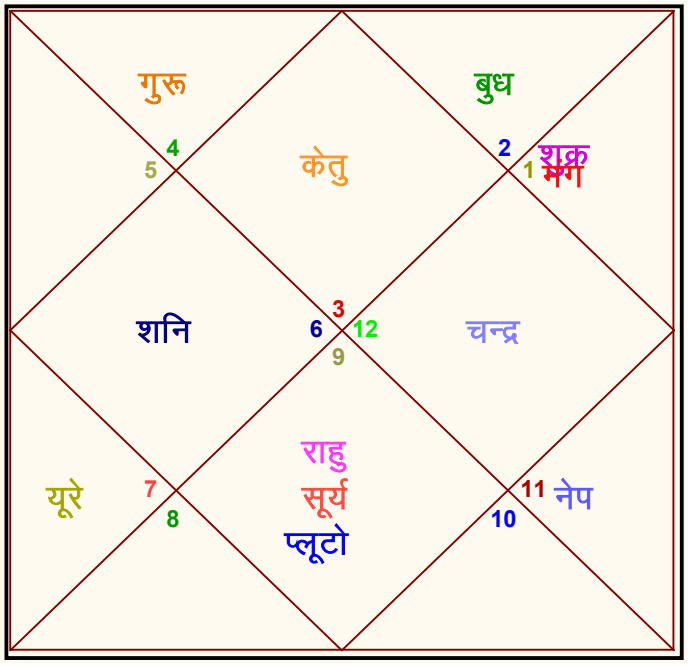

चतुर्थांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 4 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 7.5 डिग्री तक फैला हुआ है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के घर, जमीन और ऑटोमोबाइल के संबंध में उसकी खुशी, संपत्ति और भाग्य का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की सुरक्षा, भावनात्मक कल्याण, और उनकी मां या मातृभाषा के साथ संबंध में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों के बारे में बेहतर ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करता है।

षोडश वर्ग कुण्डली

सप्तमांश कुण्डली (डी 7)

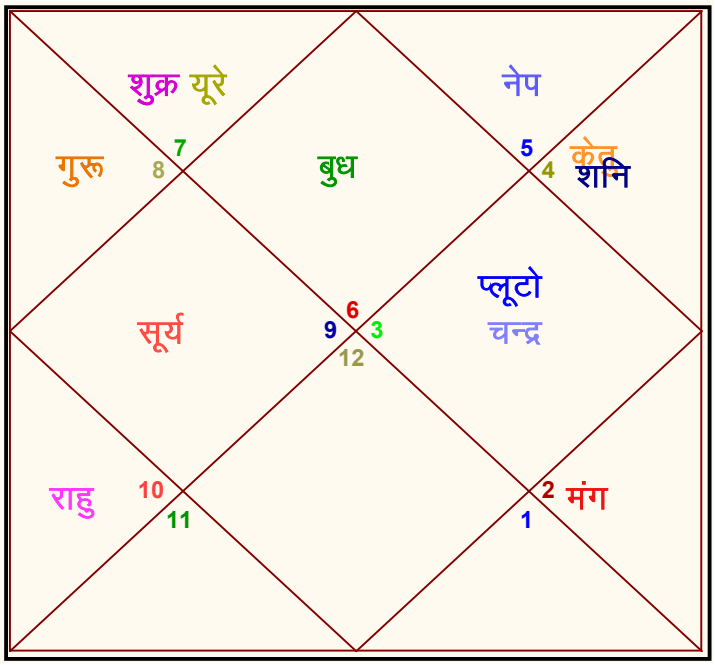

सप्तांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो मुख्य जन्म कुण्डली के प्रत्येक चिन्ह को 7 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप लगभग 4.29 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग सामान्यतः किसी व्यक्ति के जीवन में संतान, प्रजनन क्षमता और प्रसव से संबंधित मुद्दों का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य, कल्याण और बच्चों से उत्पन्न होने वाले सामान्य आनंद के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है, साथ ही साथ किसी व्यक्ति के बच्चों की संख्या के बारे में अंतर्दृष्टि भी प्रदान करता है।

नवांश कुण्डली (डी 9)

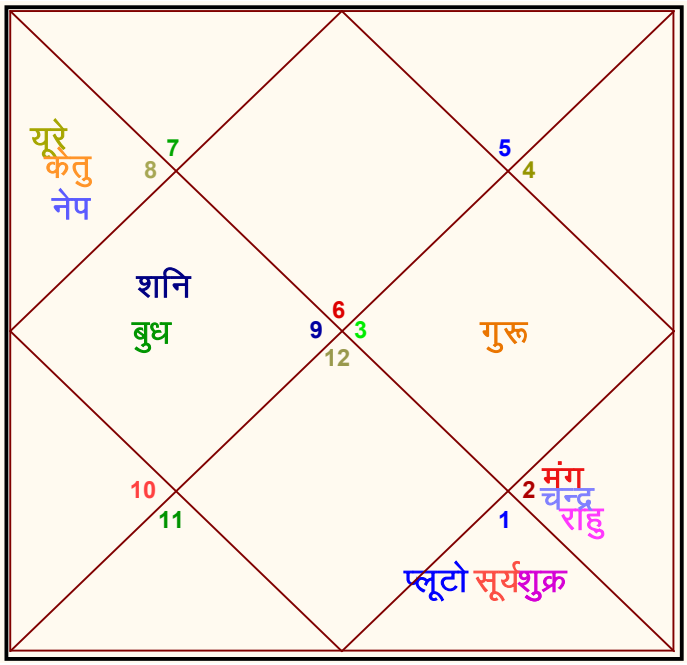

नवांश कुण्डली वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण संभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 9 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.20 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर ग्रहों की ताकत और कमजोरियों, वैवाहिक जीवन की गुणवत्ता और किसी के जीवनसाथी की प्रकृति का निर्धारण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास और आकांक्षाओं की पूर्ति में गहरी अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों के लिए व्यक्ति के जीवन के कई क्षेत्रों को समझने में यह एक महत्वपूर्ण उपकरण बन जाता है।

दशमांश कुण्डली (डी 10)

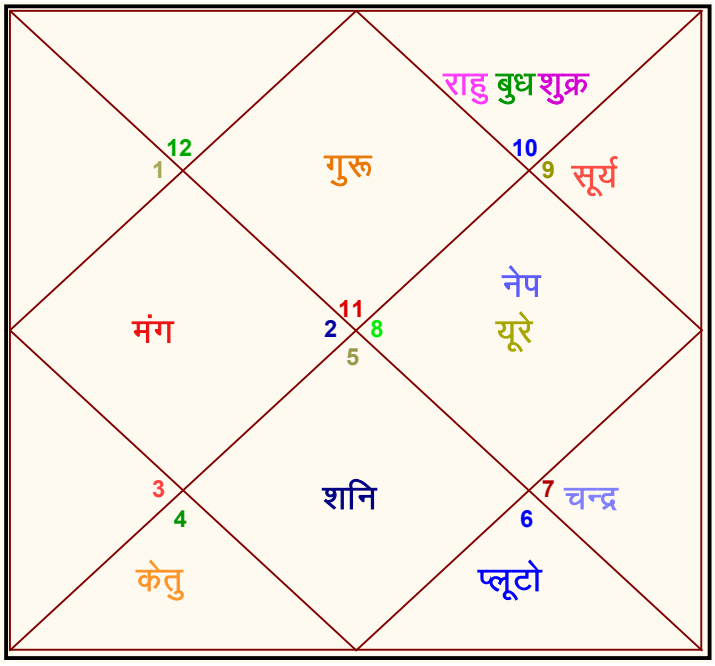

दशमांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 10 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 3 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के करियर, पेशे और समग्र व्यावसायिक उपलब्धि का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को पेशेवर प्रगति और सफलता के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ–साथ सर्वोत्तम कार्य मार्ग, संभावित उन्नति और कार्यस्थल की बाधाओं के बारे में जानकारी देता है।

द्वादशांश कुण्डली (डी 12)

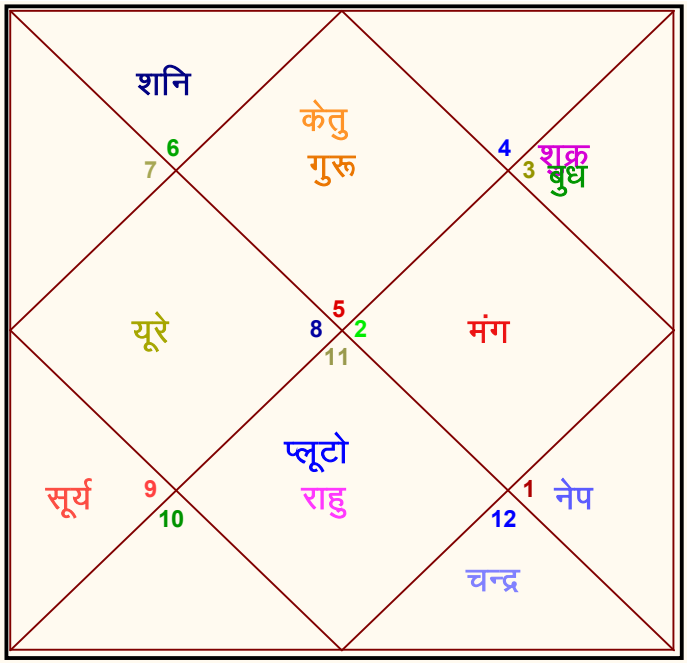

द्वादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 12 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 2.5 डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति के माता–पिता, पूर्वजों और पारिवारिक वंश के मुद्दों की जांच करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के माता–पिता, विरासत और पारिवारिक कर्म के साथ एक व्यक्ति के संबंध को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को एक व्यक्ति के जीवन के इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

षोडश वर्ग कुण्डली

षोडशांश कुण्डली (डी 16)

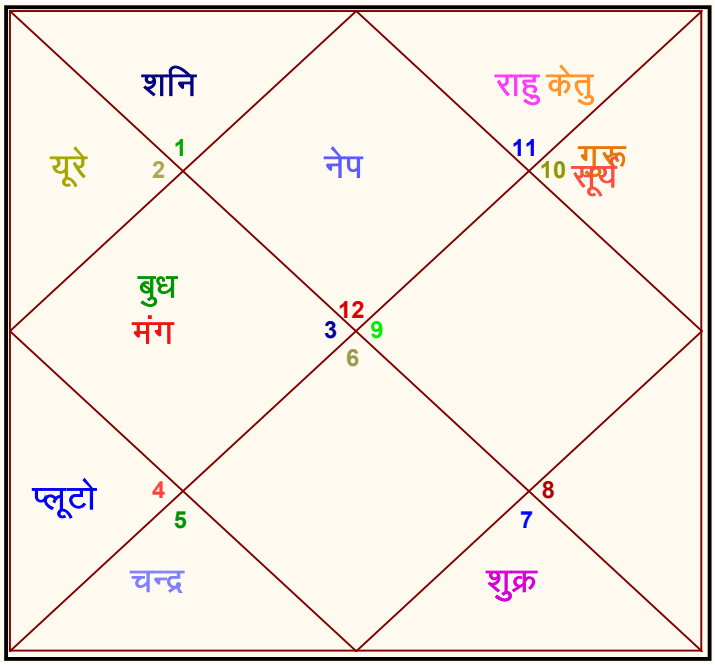

षोडशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 16 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.875 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के ऑटोमोबाइल, आराम और विलासिता की विशेषताओं की जांच करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की वाहन, अचल संपत्ति, और अन्य वस्तुओं को हासिल करने और बनाए रखने की क्षमता को प्रकट करता है जो उनके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के अस्तित्व के इन विशिष्ट पहलुओं को समझने में सहायता मिलती है।

विशांश कुण्डली (डी 20)

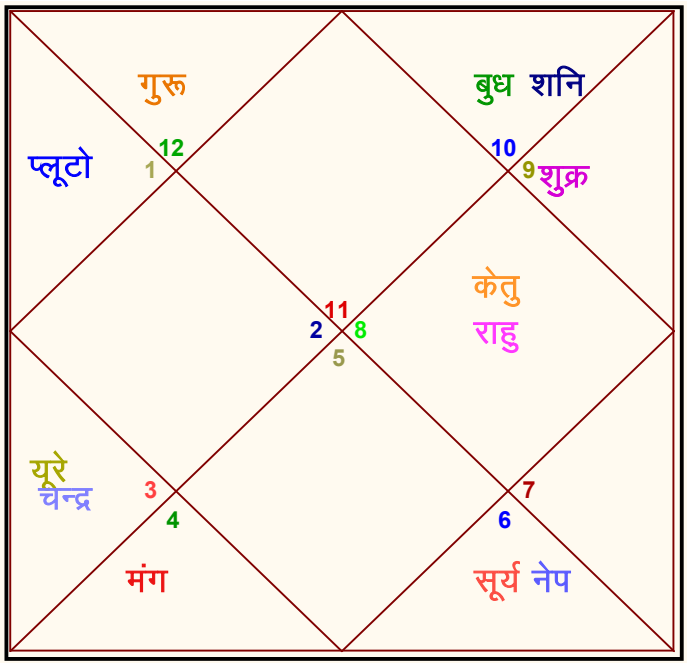

विशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 20 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 1.5 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास, धार्मिक प्राथमिकताओं और अधिक ज्ञान की खोज का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के अंतर्रात्मा, आध्यात्मिक क्षमता और उनके जीवन में धर्म और आध्यात्मिकता के महत्व के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन तत्वों का पता लगाने में सहायता मिलती है।

चर्तुविंशांश कुण्डली (डी 24)

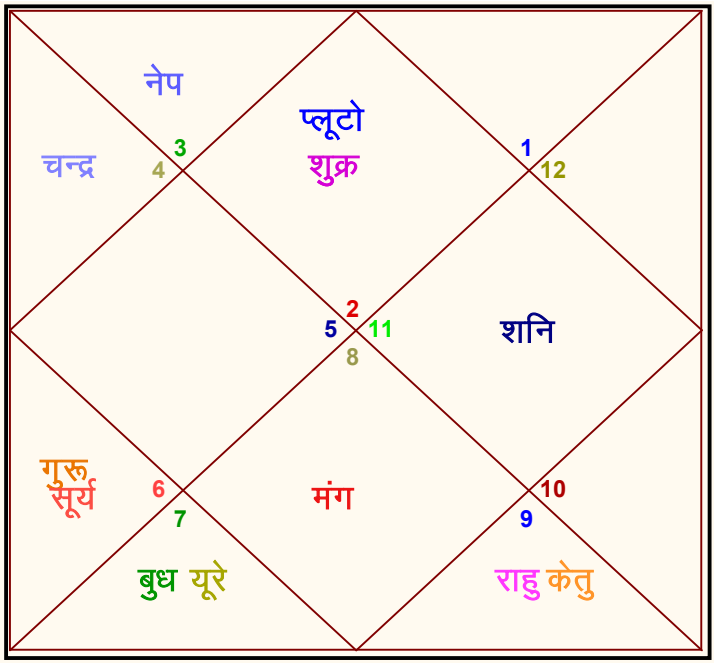

चर्तुविंशांश कुण्डली एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 24 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक की माप 1.25 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग आमतौर पर किसी व्यक्ति की शिक्षा, प्रतिभा और सीखने की क्षमता का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह कुछ विषयों, विशेषज्ञता के क्षेत्रों और शैक्षिक उपलब्धि के लिए एक व्यक्ति की योग्यता को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को अकादमिक उन्नति प्राप्त करने और बौद्धिक क्षमता तक पहुंचने के लिए मागदर्शन प्रदान करने की अनुमति देता है।

सप्तविंशांश कुण्डली (डी 27)

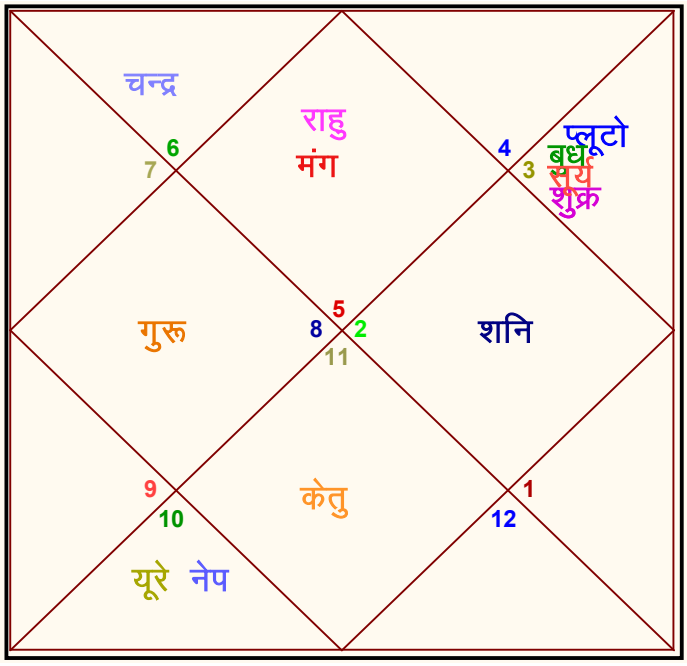

सप्तविंशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 27 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.11 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के नक्षत्रों या चंद्र राशियों की ताकत और उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को व्यक्ति के स्वभाव, आचरण और अंतर्निहित नक्षत्रों से प्रभावित जीवन की घटनाओं के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करके व्यक्ति के भाग्य और आध्यात्मिक झुकाव के बारे में बेहतर ज्ञान देता है।

षोडश वर्ग कुण्डली

त्रिंशांश कुण्डली (डी 30)

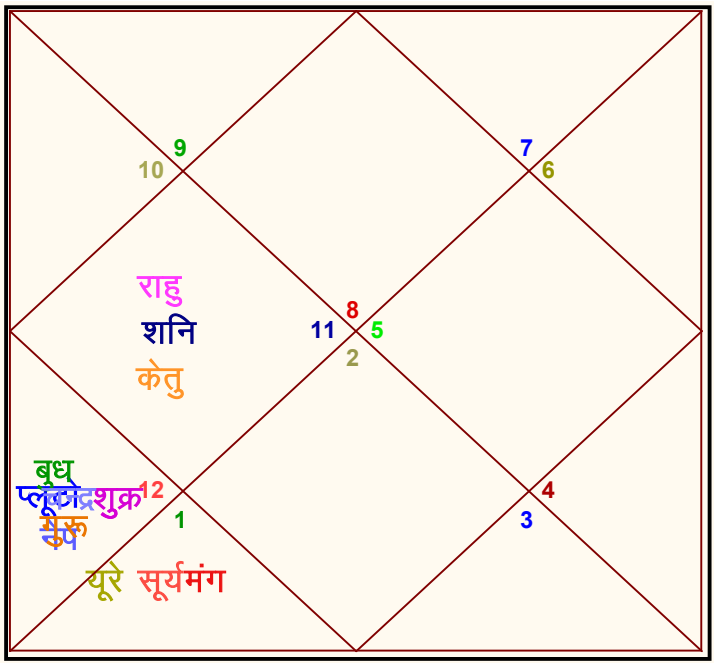

त्रिशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 30 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को एक डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग ज्यादातर उन कई कठिनाइयों और आपदाओं का आकलन करने के लिए किया जाता है जो एक व्यक्ति अपने जीवन के दौरान अनुभव कर सकता है। यह एक व्यक्ति की छिपी ताकत, कमजोरियों और उनकी कठिनाइयों के स्रोत को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को बाधाओं पर काबू पाने और जीवन के कई पहलुओं में कठिनाइयों का सामना करने हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

खवेदांश कुण्डली (डी 40)

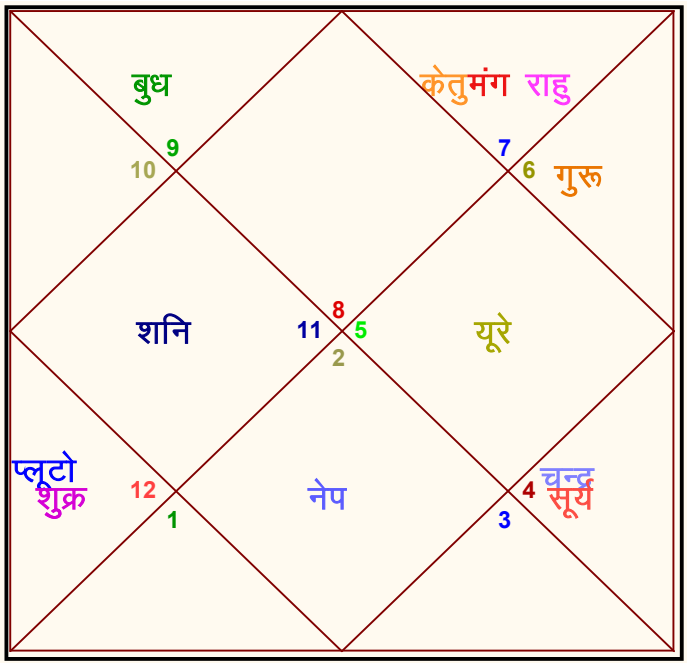

खवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 40 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.75 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति की समग्र भलाई और शुभता की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के साथ–साथ उनके समग्र सुख और समृद्धि के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने और एक सामंजस्यपूर्ण जीवन शैली प्राप्त करने के बारे में सलाह देने की अनुमति मिलती है।

अक्षवेदांश कुण्डली (डी 45)

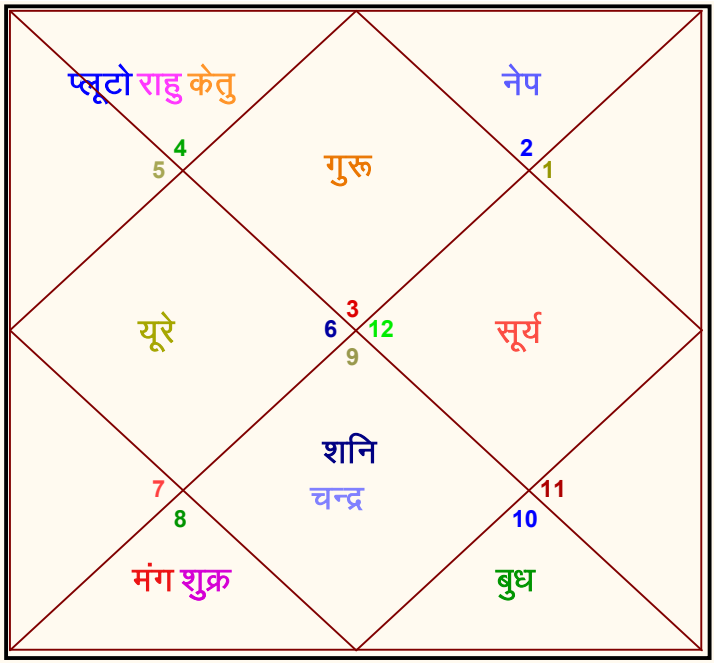

अक्षवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 45 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 0.67 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक और दिव्य गुणों का आकलन करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह एक व्यक्ति की प्रा.तिक आध्यात्मिक क्षमता, दैवीय आशीर्वाद और आध्यात्मिक विकास स्तर को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को आध्यात्मिक विकास में उन्नति और जागरूकता के उच्च स्तर की प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षष्ठांश कुण्डली (डी 60)

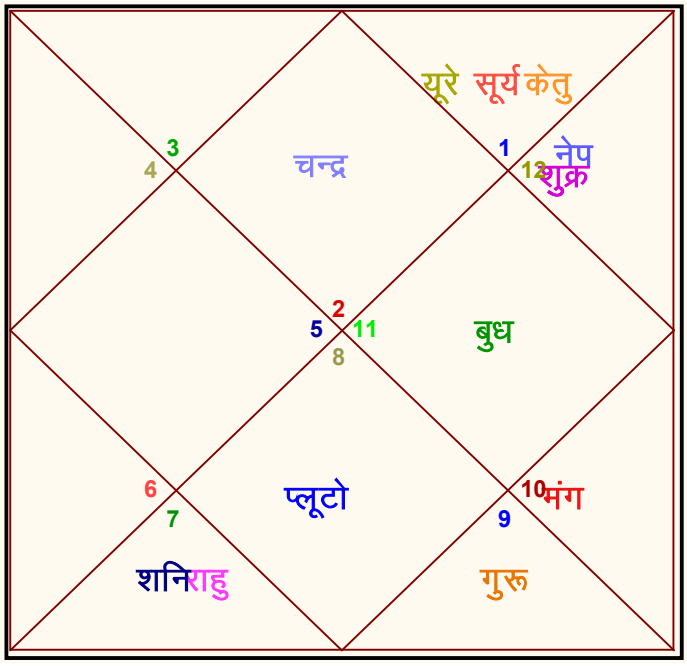

षष्ठांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 60 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.5 डिग्री मापता है। यह कुण्डली अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है और इसका उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने वाले सबसे गहरे कर्म प्रभावों को प्रकट करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के पूर्व जीवन के कर्मों, अव्यक्त झुकावों और उनकी गतिविधियों के सूक्ष्म प्रभावों को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को कर्म असंतुलन को ठीक करने और अत्यधिक संतोषप्रद जीवन जीने का मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षोडश वर्ग कुण्डली

पंचमांश कुण्डली (डी 5)

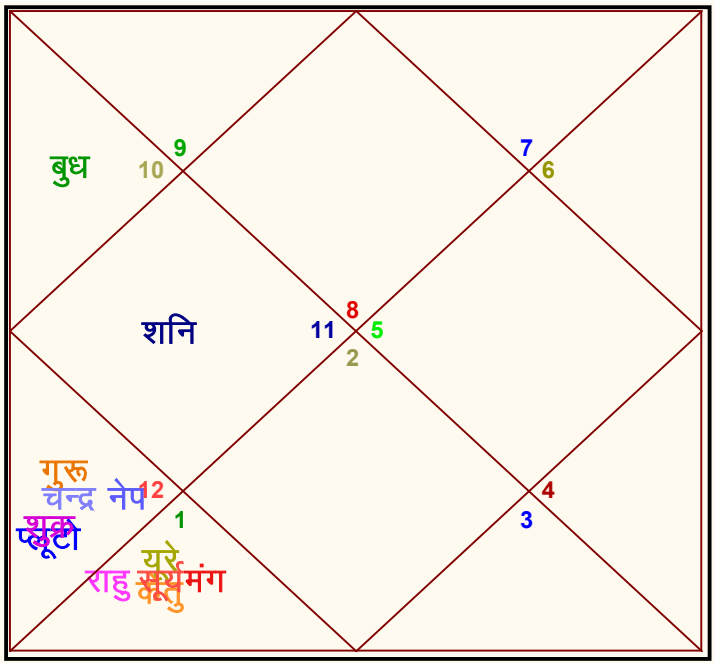

पंचांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 5 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 6 डिग्री में मापता है। यह कुण्डली पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में अक्सर उपयोग नहीं किया जाता है, लेकिन यह आधुनिक अभ्यास में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। यह मुख्य रूप से जीवन के विभिन्न पहलुओं में किसी व्यक्ति की छिपी हुई प्रतिभा और क्षमता में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह उन ज्योतिषियों के लिए उपयोगी जानकारी हो सकती है जो लोगों को उनके विशेष कौशल और गुणों की खोज करने और उन्हें बढ़ावा देने में मार्गदर्शन करते हैं।

षष्टमांश कुण्डली (डी 6)

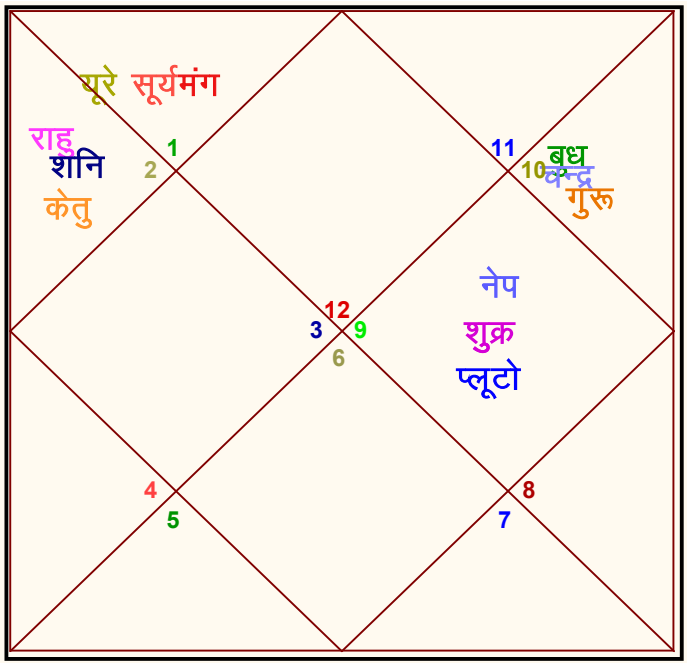

षष्टांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 6 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक की माप 5 डिग्री है। इस कुण्डली का पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में अक्सर उपयोग नहीं किया जाता है, लेकिन यह आधुनिक अभ्यास में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। इसका प्राथमिक उद्देश्य किसी व्यक्ति की छिपी हुई शक्तियों और जीवन के कई हिस्सों में खामियों को प्रकट करना है। षष्ठांश कुण्डली ज्योतिषियों को उनकी क्षमता की खोज करने और उन्हें बढ़ावा देने के साथ–साथ समस्याओं पर काबू पाने में मार्गदर्शन करने में सहायता कर सकता है।

अष्टमांश कुण्डली (डी 8)

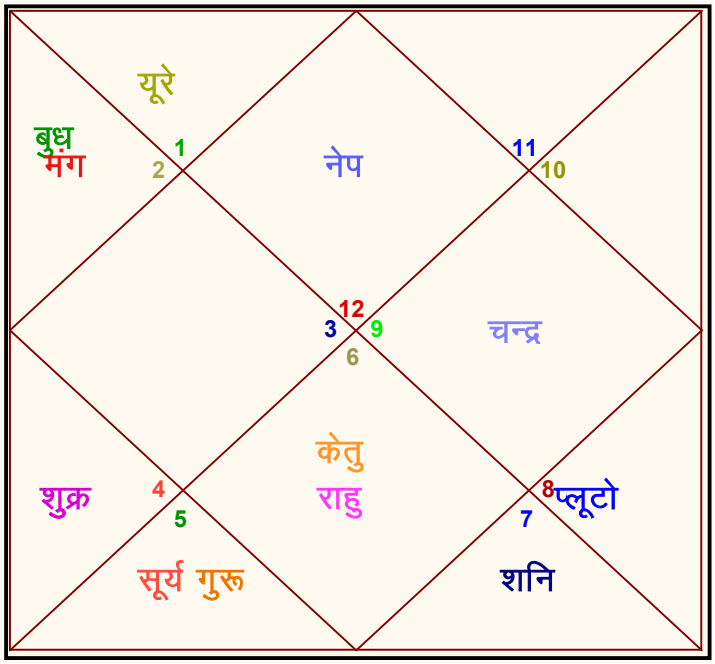

अष्टांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 8 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.75 डिग्री है। यह कुण्डली पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में शायद ही कभी उपयोग किया जाता है और वर्तमान अभ्यास में इसका बहुत कम उपयोग होता है। यह आमतौर पर किसी व्यक्ति की विशिष्ट विशेषताओं और उनके जीवन पथ से जुड़ी विशेषताओं का पता लगाने के लिए उपयोग किया जाता है। अष्टांश कुण्डली ज्योतिषियों को लोगों को उनके जीवन के कई पहलुओं को समझने और सुधारने में मदद करने के लिए अधिक जानकारी दे सकता है।

एकादशांश कुण्डली (डी 11)

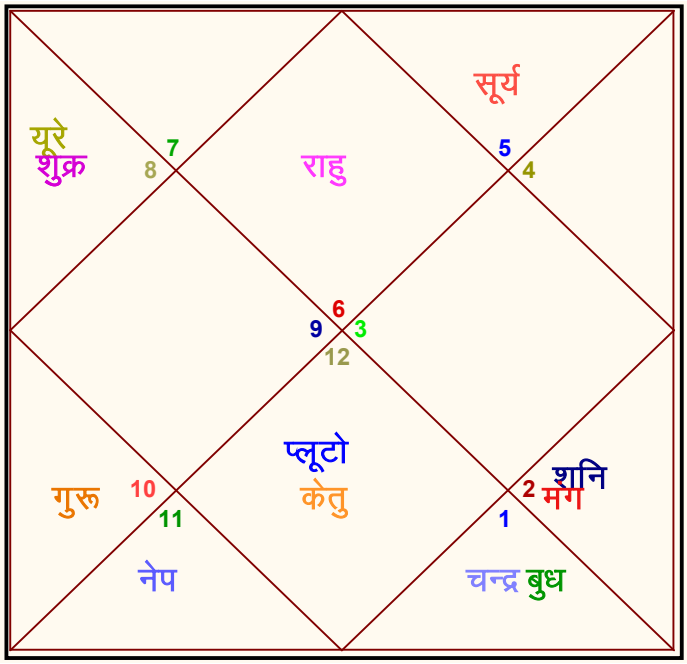

एकादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 11 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 2.73 डिग्री के आसपास फैला हुआ है। हांलाकि यह प्रायः पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में नियोजित नहीं होता है, यह वर्तमान अभ्यास में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। सामान्यतः इसका उपयोग किसी व्यक्ति की उपलब्धियों और जीवन के कई पहलुओं में सफलता, विशेष रूप से उनकी नौकरी और करियर में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए किया जाता है। एकादशांश कुण्डली ज्योतिषियों को उनके चुने हुए क्षेत्र में उनकी अधिकतम क्षमता तक पहुंचने में सहायता करने के लिए उपयोगी जानकारी प्रदान कर सकता है।

षडबल और भावबल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उच्च बल	17.42	15.66	37.77	38.38	04.31	35.33	16.07
सप्त वर्ग बल	135.00	93.75	157.50	131.25	110.63	110.63	65.63
युग्म अयुग्म बल	30.00	30.00	15.00	15.00	15.00	15.00	30.00
केन्द्रादी बल	60.00	60.00	30.00	15.00	30.00	30.00	60.00
द्रेक्कन बल	15.00	00.00	15.00	15.00	00.00	00.00	00.00
स्थान बल	**257.42**	**199.41**	**255.27**	**214.63**	**159.94**	**190.96**	**171.69**
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	156.01	149.93	265.90	130.08	96.93	143.58	178.85
दिग बल	**08.89**	**25.69**	**31.92**	**42.80**	**23.44**	**55.31**	**36.68**
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	25.41	51.38	106.40	122.29	66.97	110.62	122.28
नतोन्नत बल	09.58	50.42	50.42	09.58	00.00	09.58	50.42
पक्ष बल	34.58	25.42	34.58	25.42	25.42	25.42	34.58
त्रिभाग बल	00.00	00.00	00.00	00.00	60.00	60.00	00.00
वर्ष बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	15.00
मास बल	00.00	00.00	00.00	30.00	00.00	00.00	00.00
दिन बल	00.00	00.00	45.00	00.00	00.00	00.00	00.00
होरा बल	60.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
अयन बल	00.30	34.23	43.09	57.64	07.83	06.24	00.12
युद्ध बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
काल बल	**104.47**	**110.06**	**173.09**	**122.64**	**93.25**	**101.24**	**100.12**
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	93.28	110.06	258.35	109.50	83.26	101.24	149.44
चेष्टा बल	**00.30**	**25.42**	**07.50**	**30.00**	**45.00**	**45.00**	**60.00**
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	00.60	84.72	18.75	60.00	90.00	150.00	150.00
नैसर्गिक बल	**60.00**	**51.43**	**17.14**	**25.71**	**34.29**	**42.86**	**08.57**
द्रिक बल	**-31.39**	**-02.62**	**-10.34**	**-23.64**	**-17.60**	**-19.69**	**00.23**
कुल षड्बल	**399.69**	**409.39**	**474.58**	**412.14**	**338.31**	**415.68**	**377.30**
षड्बल (रूप में)	**6.66**	**6.82**	**7.91**	**6.87**	**5.64**	**6.93**	**6.29**
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछनिय अंश	102.48	113.72	158.19	98.13	86.75	125.96	125.77
तुलनात्मक स्थिति	**5**	**4**	**1**	**3**	**7**	**2**	**6**
इष्ट फल	**04.96**	**19.95**	**16.83**	**33.93**	**13.93**	**39.88**	**31.05**
कष्ट फल	**55.04**	**40.05**	**43.17**	**26.07**	**46.07**	**20.12**	**28.95**
दिप्ति बल	**100.00**	**25.42**	**40.81**	**26.59**	**15.23**	**52.01**	**58.02**

भाव सँख्या	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
भाव राशि	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं
भावाधिपति बल	412.14	415.68	474.58	338.31	377.30	377.30	338.31	474.58	415.68	412.14	409.39	399.69
भाव दिग्बल	60.00	50.00	20.00	00.00	50.00	10.00	30.00	40.00	50.00	30.00	10.00	40.00
भाव दृष्टिबल	-09.32	26.29	-27.68	-21.62	-14.73	-13.15	-22.75	24.81	-23.33	-07.66	-09.70	-01.82
भावबल योग	**462.82**	**491.97**	**466.91**	**316.69**	**412.57**	**374.15**	**345.57**	**539.39**	**442.35**	**434.49**	**409.69**	**437.87**
भावबल (रूप में)	**7.71**	**8.20**	**7.78**	**5.28**	**6.88**	**6.24**	**5.76**	**8.99**	**7.37**	**7.24**	**6.83**	**7.30**
तुलनात्मक स्थिति	**4**	**2**	**3**	**12**	**8**	**10**	**11**	**1**	**5**	**7**	**9**	**6**

विंशोत्तरी दशा (1)

Moon (5 y.5 m.26 d.)

दशा बैलेंश

N.C.Lahiri (023:29:36)

अयनांश

चन्द्रमा (10 वर्ष)

18/12/1973 To 14/06/1979

1st भाव स्वनक्षत्र विशेष	कन्या राशि हस्ता (2) नक्षत्र	सम संबंध 11 भावपति
चन्द्रमा	-------	-------
मंगल	-------	-------
राहु	-------	-------
गुरू	-------	-------
शनि	14-04-1975	00.00
बुध	13-09-1976	01.32
केतु	14-04-1977	02.74
शुक्र	13-12-1978	03.32
सूर्य	14-06-1979	04.99

मंगल (7 वर्ष)

14/06/1979 To 14/06/1986

8th भाव स्वराशि विशेष	मेष राशि अश्वि. (2) नक्षत्र	मित्र संबंध 8 , 3 भावपति
मंगल	10-11-1979	05.49
राहु	28-11-1980	05.90
गुरू	04-11-1981	06.95
शनि	13-12-1982	07.88
बुध	10-12-1983	08.99
केतु	08-05-1984	09.98
शुक्र	08-07-1985	10.39
सूर्य	13-11-1985	11.55
चन्द्रमा	14-06-1986	11.90

राहु (18 वर्ष)

14/06/1986 To 13/06/2004

4th भाव वक्री विशेष	धनु राशि मूला (2) नक्षत्र	सम संबंध भावपति
राहु	24-02-1989	12.49
गुरू	20-07-1991	15.19
शनि	26-05-1994	17.59
बुध	13-12-1996	20.44
केतु	31-12-1997	22.99
शुक्र	31-12-2000	24.04
सूर्य	25-11-2001	27.04
चन्द्रमा	26-05-2003	27.94
मंगल	13-06-2004	29.44

गुरू (16 वर्ष)

13/06/2004 To 13/06/2020

5th भाव नीच विशेष	मकर राशि श्रव. (3) नक्षत्र	सम संबंध 4 , 7 भावपति
गुरू	01-08-2006	30.49
शनि	12-02-2009	32.62
बुध	20-05-2011	35.15
केतु	25-04-2012	37.42
शुक्र	25-12-2014	38.35
सूर्य	13-10-2015	41.02
चन्द्रमा	12-02-2017	41.82
मंगल	19-01-2018	43.15
राहु	13-06-2020	44.09

शनि (19 वर्ष)

13/06/2020 To 14/06/2039

10th भाव वक्री विशेष	मिथुन राशि अरि. (1) नक्षत्र	मित्र संबंध 5 , 6 भावपति
शनि	17-06-2023	46.49
बुध	24-02-2026	49.50
केतु	05-04-2027	52.19
शुक्र	05-06-2030	53.30
सूर्य	17-05-2031	56.46
चन्द्रमा	16-12-2032	57.41
मंगल	25-01-2034	59.00
राहु	01-12-2036	60.10
गुरू	14-06-2039	62.95

बुध (17 वर्ष)

14/06/2039 To 13/06/2056

3rd भाव स्वनक्षत्र विशेष	वृश्चिक राशि ज्येष्ठा (1) नक्षत्र	सम संबंध 10 , 1 भावपति
बुध	10-11-2041	65.49
केतु	07-11-2042	67.90
शुक्र	07-09-2045	68.89
सूर्य	14-07-2046	71.72
चन्द्रमा	13-12-2047	72.57
मंगल	10-12-2048	73.99
राहु	29-06-2051	74.98
गुरू	04-10-2053	77.53
शनि	13-06-2056	79.80

विंशोत्तरी दशा (2)

केतु (7 वर्ष)

13/06/2056 To 14/06/2063

10th भाव वक्री विशेष	मिथुन राशि मृग. (4) नक्षत्र	मित्र संबंन्ध भावपति
केतु	10-11-2056	82.49
शुक्र	10-01-2058	82.90
सूर्य	17-05-2058	84.06
चन्द्रमा	16-12-2058	84.41
मंगल	14-05-2059	85.00
राहु	01-06-2060	85.40
गुरू	08-05-2061	86.45
शनि	17-06-2062	87.39
बुध	14-06-2063	88.50

शुक्र (20 वर्ष)

14/06/2063 To 14/06/2083

5th भाव विशेष	मकर राशि श्रव. (1) नक्षत्र	सम संबंन्ध 9 , 2 भावपति
शुक्र	13-10-2066	89.49
सूर्य	13-10-2067	92.82
चन्द्रमा	14-06-2069	93.82
मंगल	14-08-2070	95.49
राहु	14-08-2073	96.65
गुरू	13-04-2076	99.65
शनि	14-06-2079	102.32
बुध	14-04-2082	105.49
केतु	14-06-2083	108.32

सूर्य (6 वर्ष)

14/06/2083 To 14/06/2089

4th भाव विशेष	धनु राशि मूला (1) नक्षत्र	मित्र संबंन्ध 12 भावपति
सूर्य	01-10-2083	109.49
चन्द्रमा	01-04-2084	109.79
मंगल	07-08-2084	110.29
राहु	02-07-2085	110.64
गुरू	20-04-2086	111.54
शनि	02-04-2087	112.34
बुध	06-02-2088	113.29
केतु	13-06-2088	114.14
शुक्र	14-06-2089	114.49

वर्तमान दशा/अन्तर/प्रत्यन्तर/ सूक्ष्म/ प्राण दशा

दशा	ग्रह	आरम्भ	समाप्त
महादशा	शनि	13:06:2020 (16:22:55)	14:06:2039 (05:31:03)
अन्तर्रदशा	बुध	17:06:2023 (06:31:03)	24:02:2026 (17:31:03)
प्रत्यन्तर्रदशा	बुध	17:06:2023 (06:31:03)	03:11:2023 (10:52:33)
सूक्ष्मदशा	गुरू	23:09:2023 (20:36:17)	12:10:2023 (09:59:09)
प्राणदशा	राहु	09:10:2023 (15:10:43)	12:10:2023 (09:59:09)

नोट : – सभी दिए गये समय दशा के समाप्ति काल के हैं।

विंशोत्तरी दशा ग्रहों की अवधि के निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में प्रयुक्त एक प्रणाली है, जिसे एक व्यक्ति के जीवन र दशा के रूप में भी जाना जाता है। 'विंशोत्तरी' शब्द का अर्थ संस्कृत में '120' है, जो सभी ग्रहों की अवधि के एक पूर्ण चक्र में वर्षों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

यह दशा किसी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा की स्थिति पर आधारित है, और यह वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रहों में से प्रत्येक को निश्चित अवधि प्रदान करती है। इस प्रणाली में स्थिति के आधार पर प्रत्येक ग्रह को 6 से 20 वर्ष तक की एक विशिष्ट संख्या दी जाती है।

प्रत्येक ग्रहों की अवधि के दौरान, विचाराधीन/संबंधित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जो व्यक्ति के जन्मकुण्डली और उस समय के विशिष्ट ग्रहों की स्थिति पर निर्भ करता है।

विंशोत्तरी दशा को वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में प्रमुख घटनाओं और परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने के लिए एक विस्तृत और सटीक प्रणाली प्रदान करता है। ज्योतिषियों द्वार करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य, और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य पहलूओं के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह भविष्य में मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है।

चन्द्रमा दशा

(18:12:1973 To 14:06:1979)

चन्द्रमा अन्तर

चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--

मंगल अन्तर

मंगल	-------	--
राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--

राहु अन्तर

राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--

गुरू अन्तर

गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--

शनि अन्तर

(18:12:1973 To 14:04:1975)

शनि	-------	--
बुध	05-03-1974	00.00
केतु	08-04-1974	00.21
शुक्र	13-07-1974	00.31
सूर्य	11-08-1974	00.57
चन्द्रमा	28-09-1974	00.65
मंगल	01-11-1974	00.78
राहु	27-01-1975	00.87
गुरू	14-04-1975	01.11

बुध अन्तर

(14:04:1975 To 13:09:1976)

बुध	26-06-1975	01.32
केतु	26-07-1975	01.52
शुक्र	20-10-1975	01.60
सूर्य	15-11-1975	01.84
चन्द्रमा	28-12-1975	01.91
मंगल	28-01-1976	02.03
राहु	14-04-1976	02.11
गुरू	23-06-1976	02.32
शनि	13-09-1976	02.51

केतु अन्तर

(13:09:1976 To 14:04:1977)

केतु	25-09-1976	02.74
शुक्र	31-10-1976	02.77
सूर्य	10-11-1976	02.87
चन्द्रमा	28-11-1976	02.90
मंगल	11-12-1976	02.95
राहु	12-01-1977	02.98
गुरू	09-02-1977	03.07
शनि	15-03-1977	03.15
बुध	14-04-1977	03.24

शुक्र अन्तर

(14:04:1977 To 13:12:1978)

शुक्र	24-07-1977	03.32
सूर्य	24-08-1977	03.60
चन्द्रमा	13-10-1977	03.68
मंगल	18-11-1977	03.82
राहु	17-02-1978	03.92
गुरू	09-05-1978	04.17
शनि	14-08-1978	04.39
बुध	08-11-1978	04.65
केतु	13-12-1978	04.89

सूर्य अन्तर

(13:12:1978 To 14:06:1979)

सूर्य	22-12-1978	04.99
चन्द्रमा	07-01-1979	05.01
मंगल	17-01-1979	05.05
राहु	14-02-1979	05.08
गुरू	10-03-1979	05.16
शनि	08-04-1979	05.23
बुध	04-05-1979	05.30
केतु	14-05-1979	05.38
शुक्र	14-06-1979	05.40

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

मंगल दशा

(14:06:1979 To 14:06:1986)

मंगल अन्तर

(14:06:1979 To 10:11:1979)		
मंगल	22-06-1979	05.49
राहु	15-07-1979	05.51
गुरू	04-08-1979	05.57
शनि	27-08-1979	05.63
बुध	17-09-1979	05.69
केतु	26-09-1979	05.75
शुक्र	21-10-1979	05.77
सूर्य	28-10-1979	05.84
चन्द्रमा	10-11-1979	05.86

राहु अन्तर

(10:11:1979 To 28:11:1980)		
राहु	06-01-1980	05.90
गुरू	27-02-1980	06.05
शनि	27-04-1980	06.19
बुध	21-06-1980	06.36
केतु	13-07-1980	06.51
शुक्र	15-09-1980	06.57
सूर्य	04-10-1980	06.75
चन्द्रमा	06-11-1980	06.80
मंगल	28-11-1980	06.89

गुरू अन्तर

(28:11:1980 To 04:11:1981)		
गुरू	12-01-1981	06.95
शनि	07-03-1981	07.07
बुध	25-04-1981	07.22
केतु	15-05-1981	07.35
शुक्र	10-07-1981	07.41
सूर्य	27-07-1981	07.56
चन्द्रमा	25-08-1981	07.61
मंगल	14-09-1981	07.69
राहु	04-11-1981	07.74

शनि अन्तर

(04:11:1981 To 13:12:1982)		
शनि	07-01-1982	07.88
बुध	05-03-1982	08.06
केतु	29-03-1982	08.21
शुक्र	04-06-1982	08.28
सूर्य	24-06-1982	08.46
चन्द्रमा	28-07-1982	08.52
मंगल	21-08-1982	08.61
राहु	20-10-1982	08.67
गुरू	13-12-1982	08.84

बुध अन्तर

(13:12:1982 To 10:12:1983)		
बुध	03-02-1983	08.99
केतु	24-02-1983	09.13
शुक्र	25-04-1983	09.19
सूर्य	13-05-1983	09.35
चन्द्रमा	12-06-1983	09.40
मंगल	03-07-1983	09.48
राहु	27-08-1983	09.54
गुरू	14-10-1983	09.69
शनि	10-12-1983	09.82

केतु अन्तर

(10:12:1983 To 08:05:1984)		
केतु	19-12-1983	09.98
शुक्र	13-01-1984	10.00
सूर्य	20-01-1984	10.07
चन्द्रमा	02-02-1984	10.09
मंगल	10-02-1984	10.13
राहु	04-03-1984	10.15
गुरू	24-03-1984	10.21
शनि	16-04-1984	10.27
बुध	08-05-1984	10.33

शुक्र अन्तर

(08:05:1984 To 08:07:1985)		
शुक्र	18-07-1984	10.39
सूर्य	08-08-1984	10.58
चन्द्रमा	13-09-1984	10.64
मंगल	08-10-1984	10.74
राहु	11-12-1984	10.81
गुरू	05-02-1985	10.98
शनि	14-04-1985	11.14
बुध	13-06-1985	11.32
केतु	08-07-1985	11.49

सूर्य अन्तर

(08:07:1985 To 13:11:1985)		
सूर्य	14-07-1985	11.55
चन्द्रमा	25-07-1985	11.57
मंगल	02-08-1985	11.60
राहु	21-08-1985	11.62
गुरू	07-09-1985	11.67
शनि	27-09-1985	11.72
बुध	15-10-1985	11.78
केतु	23-10-1985	11.83
शुक्र	13-11-1985	11.85

चन्द्रमा अन्तर

(13:11:1985 To 14:06:1986)		
चन्द्रमा	01-12-1985	11.90
मंगल	13-12-1985	11.95
राहु	14-01-1986	11.99
गुरू	11-02-1986	12.07
शनि	17-03-1986	12.15
बुध	16-04-1986	12.25
केतु	29-04-1986	12.33
शुक्र	03-06-1986	12.36
सूर्य	14-06-1986	12.46

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

राहु दशा

(14:06:1986 To 13:06:2004)

राहु अन्तर

(14:06:1986 To 24:02:1989)

राहु	09-11-1986	12.49
गुरू	20-03-1987	12.89
शनि	23-08-1987	13.25
बुध	10-01-1988	13.68
केतु	07-03-1988	14.06
शुक्र	19-08-1988	14.22
सूर्य	07-10-1988	14.67
चन्द्रमा	29-12-1988	14.81
मंगल	24-02-1989	15.03

गुरू अन्तर

(24:02:1989 To 20:07:1991)

गुरू	21-06-1989	15.19
शनि	07-11-1989	15.51
बुध	11-03-1990	15.89
केतु	01-05-1990	16.23
शुक्र	24-09-1990	16.37
सूर्य	07-11-1990	16.77
चन्द्रमा	19-01-1991	16.89
मंगल	11-03-1991	17.09
राहु	20-07-1991	17.23

शनि अन्तर

(20:07:1991 To 26:05:1994)

शनि	01-01-1992	17.59
बुध	28-05-1992	18.04
केतु	28-07-1992	18.44
शुक्र	17-01-1993	18.61
सूर्य	10-03-1993	19.08
चन्द्रमा	05-06-1993	19.23
मंगल	05-08-1993	19.46
राहु	08-01-1994	19.63
गुरू	26-05-1994	20.06

बुध अन्तर

(26:05:1994 To 13:12:1996)

बुध	05-10-1994	20.44
केतु	29-11-1994	20.80
शुक्र	03-05-1995	20.95
सूर्य	18-06-1995	21.37
चन्द्रमा	04-09-1995	21.50
मंगल	28-10-1995	21.71
राहु	16-03-1996	21.86
गुरू	18-07-1996	22.24
शनि	13-12-1996	22.58

केतु अन्तर

(13:12:1996 To 31:12:1997)

केतु	05-01-1997	22.99
शुक्र	09-03-1997	23.05
सूर्य	29-03-1997	23.22
चन्द्रमा	30-04-1997	23.28
मंगल	22-05-1997	23.36
राहु	18-07-1997	23.43
गुरू	08-09-1997	23.58
शनि	07-11-1997	23.72
बुध	31-12-1997	23.89

शुक्र अन्तर

(31:12:1997 To 31:12:2000)

शुक्र	02-07-1998	24.04
सूर्य	26-08-1998	24.54
चन्द्रमा	25-11-1998	24.69
मंगल	28-01-1999	24.94
राहु	11-07-1999	25.11
गुरू	04-12-1999	25.56
शनि	26-05-2000	25.96
बुध	28-10-2000	26.44
केतु	31-12-2000	26.86

सूर्य अन्तर

(31:12:2000 To 25:11:2001)

सूर्य	17-01-2001	27.04
चन्द्रमा	13-02-2001	27.08
मंगल	04-03-2001	27.16
राहु	23-04-2001	27.21
गुरू	06-06-2001	27.35
शनि	28-07-2001	27.47
बुध	12-09-2001	27.61
केतु	01-10-2001	27.74
शुक्र	25-11-2001	27.79

चन्द्रमा अन्तर

(25:11:2001 To 26:05:2003)

चन्द्रमा	10-01-2002	27.94
मंगल	11-02-2002	28.06
राहु	04-05-2002	28.15
गुरू	16-07-2002	28.38
शनि	10-10-2002	28.58
बुध	27-12-2002	28.81
केतु	28-01-2003	29.03
शुक्र	29-04-2003	29.11
सूर्य	26-05-2003	29.36

मंगल अन्तर

(26:05:2003 To 13:06:2004)

मंगल	18-06-2003	29.44
राहु	14-08-2003	29.50
गुरू	04-10-2003	29.66
शनि	04-12-2003	29.80
बुध	27-01-2004	29.96
केतु	19-02-2004	30.11
शुक्र	23-04-2004	30.17
सूर्य	12-05-2004	30.35
चन्द्रमा	13-06-2004	30.40

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

गुरू दशा

(13:06:2004 To 13:06:2020)

गुरू अन्तर

(13:06:2004 To 01:08:2006)

गुरू	25-09-2004	30.49
शनि	27-01-2005	30.77
बुध	17-05-2005	31.11
केतु	02-07-2005	31.41
शुक्र	08-11-2005	31.54
सूर्य	17-12-2005	31.89
चन्द्रमा	20-02-2006	32.00
मंगल	07-04-2006	32.18
राहु	01-08-2006	32.30

शनि अन्तर

(01:08:2006 To 12:02:2009)

शनि	26-12-2006	32.62
बुध	06-05-2007	33.02
केतु	29-06-2007	33.38
शुक्र	30-11-2007	33.53
सूर्य	15-01-2008	33.95
चन्द्रमा	01-04-2008	34.08
मंगल	25-05-2008	34.29
राहु	12-10-2008	34.44
गुरू	12-02-2009	34.82

बुध अन्तर

(12:02:2009 To 20:05:2011)

बुध	09-06-2009	35.15
केतु	28-07-2009	35.48
शुक्र	12-12-2009	35.61
सूर्य	23-01-2010	35.99
चन्द्रमा	02-04-2010	36.10
मंगल	20-05-2010	36.29
राहु	21-09-2010	36.42
गुरू	09-01-2011	36.76
शनि	20-05-2011	37.06

केतु अन्तर

(20:05:2011 To 25:04:2012)

केतु	09-06-2011	37.42
शुक्र	05-08-2011	37.48
सूर्य	22-08-2011	37.63
चन्द्रमा	19-09-2011	37.68
मंगल	09-10-2011	37.76
राहु	29-11-2011	37.81
गुरू	14-01-2012	37.95
शनि	08-03-2012	38.07
बुध	25-04-2012	38.22

शुक्र अन्तर

(25:04:2012 To 25:12:2014)

शुक्र	05-10-2012	38.35
सूर्य	23-11-2012	38.80
चन्द्रमा	12-02-2013	38.93
मंगल	10-04-2013	39.15
राहु	03-09-2013	39.31
गुरू	11-01-2014	39.71
शनि	14-06-2014	40.07
बुध	30-10-2014	40.49
केतु	25-12-2014	40.87

सूर्य अन्तर

(25:12:2014 To 13:10:2015)

सूर्य	09-01-2015	41.02
चन्द्रमा	02-02-2015	41.06
मंगल	19-02-2015	41.13
राहु	04-04-2015	41.17
गुरू	13-05-2015	41.29
शनि	28-06-2015	41.40
बुध	09-08-2015	41.53
केतु	26-08-2015	41.64
शुक्र	13-10-2015	41.69

चन्द्रमा अन्तर

(13:10:2015 To 12:02:2017)

चन्द्रमा	23-11-2015	41.82
मंगल	21-12-2015	41.93
राहु	04-03-2016	42.01
गुरू	08-05-2016	42.21
शनि	24-07-2016	42.39
बुध	01-10-2016	42.60
केतु	29-10-2016	42.79
शुक्र	19-01-2017	42.87
सूर्य	12-02-2017	43.09

मंगल अन्तर

(12:02:2017 To 19:01:2018)

मंगल	04-03-2017	43.15
राहु	24-04-2017	43.21
गुरू	08-06-2017	43.35
शनि	01-08-2017	43.47
बुध	19-09-2017	43.62
केतु	09-10-2017	43.75
शुक्र	04-12-2017	43.81
सूर्य	21-12-2017	43.96
चन्द्रमा	19-01-2018	44.01

राहु अन्तर

(19:01:2018 To 13:06:2020)

राहु	30-05-2018	44.09
गुरू	24-09-2018	44.45
शनि	10-02-2019	44.77
बुध	14-06-2019	45.15
केतु	04-08-2019	45.49
शुक्र	28-12-2019	45.63
सूर्य	10-02-2020	46.03
चन्द्रमा	23-04-2020	46.15
मंगल	13-06-2020	46.35

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शनि दशा

(13:06:2020 To 14:06:2039)

शनि अन्तर

(13:06:2020 To 17:06:2023)

शनि	05-12-2020	46.49
बुध	09-05-2021	46.96
केतु	12-07-2021	47.39
शुक्र	11-01-2022	47.57
सूर्य	07-03-2022	48.07
चन्द्रमा	07-06-2022	48.22
मंगल	10-08-2022	48.47
राहु	21-01-2023	48.64
गुरू	17-06-2023	49.10

बुध अन्तर

(17:06:2023 To 24:02:2026)

बुध	03-11-2023	49.50
केतु	30-12-2023	49.88
शुक्र	11-06-2024	50.03
सूर्य	31-07-2024	50.48
चन्द्रमा	21-10-2024	50.62
मंगल	17-12-2024	50.84
राहु	14-05-2025	51.00
गुरू	22-09-2025	51.40
शनि	24-02-2026	51.76

केतु अन्तर

(24:02:2026 To 05:04:2027)

केतु	20-03-2026	52.19
शुक्र	26-05-2026	52.25
सूर्य	15-06-2026	52.44
चन्द्रमा	19-07-2026	52.49
मंगल	12-08-2026	52.59
राहु	11-10-2026	52.65
गुरू	04-12-2026	52.82
शनि	06-02-2027	52.96
बुध	05-04-2027	53.14

शुक्र अन्तर

(05:04:2027 To 05:06:2030)

शुक्र	14-10-2027	53.30
सूर्य	11-12-2027	53.82
चन्द्रमा	17-03-2028	53.98
मंगल	23-05-2028	54.25
राहु	13-11-2028	54.43
गुरू	16-04-2029	54.91
शनि	16-10-2029	55.33
बुध	29-03-2030	55.83
केतु	05-06-2030	56.28

सूर्य अन्तर

(05:06:2030 To 17:05:2031)

सूर्य	22-06-2030	56.46
चन्द्रमा	21-07-2030	56.51
मंगल	10-08-2030	56.59
राहु	01-10-2030	56.65
गुरू	16-11-2030	56.79
शनि	10-01-2031	56.91
बुध	28-02-2031	57.06
केतु	21-03-2031	57.20
शुक्र	17-05-2031	57.25

चन्द्रमा अन्तर

(17:05:2031 To 16:12:2032)

चन्द्रमा	05-07-2031	57.41
मंगल	07-08-2031	57.55
राहु	02-11-2031	57.64
गुरू	18-01-2032	57.87
शनि	19-04-2032	58.09
बुध	10-07-2032	58.34
केतु	13-08-2032	58.56
शुक्र	17-11-2032	58.65
सूर्य	16-12-2032	58.92

मंगल अन्तर

(16:12:2032 To 25:01:2034)

मंगल	09-01-2033	59.00
राहु	11-03-2033	59.06
गुरू	03-05-2033	59.23
शनि	07-07-2033	59.38
बुध	02-09-2033	59.55
केतु	25-09-2033	59.71
शुक्र	02-12-2033	59.77
सूर्य	22-12-2033	59.96
चन्द्रमा	25-01-2034	60.01

राहु अन्तर

(25:01:2034 To 01:12:2036)

राहु	30-06-2034	60.10
गुरू	16-11-2034	60.53
शनि	29-04-2035	60.91
बुध	24-09-2035	61.36
केतु	23-11-2035	61.77
शुक्र	15-05-2036	61.93
सूर्य	06-07-2036	62.41
चन्द्रमा	01-10-2036	62.55
मंगल	01-12-2036	62.79

गुरू अन्तर

(01:12:2036 To 14:06:2039)

गुरू	03-04-2037	62.95
शनि	28-08-2037	63.29
बुध	06-01-2038	63.69
केतु	01-03-2038	64.05
शुक्र	02-08-2038	64.20
सूर्य	17-09-2038	64.62
चन्द्रमा	03-12-2038	64.75
मंगल	26-01-2039	64.96
राहु	14-06-2039	65.11

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

बुध दशा

(14:06:2039 To 13:06:2056)

बुध अन्तर

(14:06:2039 To 10:11:2041)

बुध	16-10-2039	65.49
केतु	07-12-2039	65.83
शुक्र	01-05-2040	65.97
सूर्य	14-06-2040	66.37
चन्द्रमा	27-08-2040	66.49
मंगल	17-10-2040	66.69
राहु	26-02-2041	66.83
गुरू	24-06-2041	67.19
शनि	10-11-2041	67.52

केतु अन्तर

(10:11:2041 To 07:11:2042)

केतु	01-12-2041	67.90
शुक्र	30-01-2042	67.95
सूर्य	17-02-2042	68.12
चन्द्रमा	19-03-2042	68.17
मंगल	10-04-2042	68.25
राहु	03-06-2042	68.31
गुरू	21-07-2042	68.46
शनि	16-09-2042	68.59
बुध	07-11-2042	68.75

शुक्र अन्तर

(07:11:2042 To 07:09:2045)

शुक्र	28-04-2043	68.89
सूर्य	19-06-2043	69.36
चन्द्रमा	13-09-2043	69.50
मंगल	12-11-2043	69.74
राहु	16-04-2044	69.90
गुरू	01-09-2044	70.33
शनि	12-02-2045	70.71
बुध	09-07-2045	71.15
केतु	07-09-2045	71.56

सूर्य अन्तर

(07:09:2045 To 14:07:2046)

सूर्य	22-09-2045	71.72
चन्द्रमा	18-10-2045	71.76
मंगल	05-11-2045	71.83
राहु	22-12-2045	71.88
गुरू	01-02-2046	72.01
शनि	22-03-2046	72.13
बुध	05-05-2046	72.26
केतु	23-05-2046	72.38
शुक्र	14-07-2046	72.43

चन्द्रमा अन्तर

(14:07:2046 To 13:12:2047)

चन्द्रमा	26-08-2046	72.57
मंगल	25-09-2046	72.69
राहु	12-12-2046	72.77
गुरू	19-02-2047	72.98
शनि	12-05-2047	73.17
बुध	24-07-2047	73.40
केतु	23-08-2047	73.60
शुक्र	17-11-2047	73.68
सूर्य	13-12-2047	73.92

मंगल अन्तर

(13:12:2047 To 10:12:2048)

मंगल	03-01-2048	73.99
राहु	27-02-2048	74.05
गुरू	15-04-2048	74.19
शनि	12-06-2048	74.33
बुध	02-08-2048	74.48
केतु	23-08-2048	74.62
शुक्र	23-10-2048	74.68
सूर्य	10-11-2048	74.85
चन्द्रमा	10-12-2048	74.90

राहु अन्तर

(10:12:2048 To 29:06:2051)

राहु	29-04-2049	74.98
गुरू	31-08-2049	75.36
शनि	25-01-2050	75.70
बुध	06-06-2050	76.11
केतु	30-07-2050	76.47
शुक्र	02-01-2051	76.62
सूर्य	17-02-2051	77.04
चन्द्रमा	06-05-2051	77.17
मंगल	29-06-2051	77.38

गुरू अन्तर

(29:06:2051 To 04:10:2053)

गुरू	17-10-2051	77.53
शनि	25-02-2052	77.83
बुध	22-06-2052	78.19
केतु	09-08-2052	78.51
शुक्र	26-12-2052	78.64
सूर्य	05-02-2053	79.02
चन्द्रमा	15-04-2053	79.14
मंगल	02-06-2053	79.32
राहु	04-10-2053	79.46

शनि अन्तर

(04:10:2053 To 13:06:2056)

शनि	09-03-2054	79.80
बुध	26-07-2054	80.22
केतु	21-09-2054	80.60
शुक्र	04-03-2055	80.76
सूर्य	22-04-2055	81.21
चन्द्रमा	13-07-2055	81.34
मंगल	08-09-2055	81.57
राहु	03-02-2056	81.73
गुरू	13-06-2056	82.13

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

केतु दशा

(13:06:2056 To 14:06:2063)

केतु अन्तर

(13:06:2056 To 10:11:2056)		
केतु	22-06-2056	82.49
शुक्र	17-07-2056	82.51
सूर्य	24-07-2056	82.58
चन्द्रमा	06-08-2056	82.60
मंगल	14-08-2056	82.63
राहु	06-09-2056	82.66
गुरू	26-09-2056	82.72
शनि	19-10-2056	82.77
बुध	10-11-2056	82.84

शुक्र अन्तर

(10:11:2056 To 10:01:2058)		
शुक्र	20-01-2057	82.90
सूर्य	10-02-2057	83.09
चन्द्रमा	18-03-2057	83.15
मंगल	11-04-2057	83.25
राहु	14-06-2057	83.31
गुरू	10-08-2057	83.49
शनि	16-10-2057	83.65
बुध	16-12-2057	83.83
केतु	10-01-2058	84.00

सूर्य अन्तर

(10:01:2058 To 17:05:2058)		
सूर्य	16-01-2058	84.06
चन्द्रमा	27-01-2058	84.08
मंगल	03-02-2058	84.11
राहु	22-02-2058	84.13
गुरू	11-03-2058	84.18
शनि	01-04-2058	84.23
बुध	19-04-2058	84.28
केतु	26-04-2058	84.33
शुक्र	17-05-2058	84.35

चन्द्रमा अन्तर

(17:05:2058 To 16:12:2058)		
चन्द्रमा	04-06-2058	84.41
मंगल	17-06-2058	84.46
राहु	18-07-2058	84.50
गुरू	16-08-2058	84.58
शनि	19-09-2058	84.66
बुध	19-10-2058	84.75
केतु	31-10-2058	84.84
शुक्र	06-12-2058	84.87
सूर्य	16-12-2058	84.97

मंगल अन्तर

(16:12:2058 To 14:05:2059)		
मंगल	25-12-2058	85.00
राहु	16-01-2059	85.02
गुरू	05-02-2059	85.08
शनि	01-03-2059	85.14
बुध	22-03-2059	85.20
केतु	31-03-2059	85.26
शुक्र	24-04-2059	85.28
सूर्य	02-05-2059	85.35
चन्द्रमा	14-05-2059	85.37

राहु अन्तर

(14:05:2059 To 01:06:2060)		
राहु	11-07-2059	85.40
गुरू	31-08-2059	85.56
शनि	31-10-2059	85.70
बुध	24-12-2059	85.87
केतु	15-01-2060	86.02
शुक्र	19-03-2060	86.08
सूर्य	08-04-2060	86.25
चन्द्रमा	10-05-2060	86.31
मंगल	01-06-2060	86.39

गुरू अन्तर

(01:06:2060 To 08:05:2061)		
गुरू	17-07-2060	86.45
शनि	09-09-2060	86.58
बुध	27-10-2060	86.73
केतु	16-11-2060	86.86
शुक्र	12-01-2061	86.91
सूर्य	29-01-2061	87.07
चन्द्रमा	26-02-2061	87.12
मंगल	18-03-2061	87.19
राहु	08-05-2061	87.25

शनि अन्तर

(08:05:2061 To 17:06:2062)		
शनि	11-07-2061	87.39
बुध	07-09-2061	87.56
केतु	30-09-2061	87.72
शुक्र	07-12-2061	87.79
सूर्य	27-12-2061	87.97
चन्द्रमा	30-01-2062	88.03
मंगल	22-02-2062	88.12
राहु	24-04-2062	88.18
गुरू	17-06-2062	88.35

बुध अन्तर

(17:06:2062 To 14:06:2063)		
बुध	07-08-2062	88.50
केतु	28-08-2062	88.64
शुक्र	27-10-2062	88.69
सूर्य	15-11-2062	88.86
चन्द्रमा	15-12-2062	88.91
मंगल	05-01-2063	88.99
राहु	28-02-2063	89.05
गुरू	17-04-2063	89.20
शनि	14-06-2063	89.33

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शुक्र दशा

(14:06:2063 To 14:06:2083)

शुक्र अन्तर

(14:06:2063 To 13:10:2066)

शुक्र	03-01-2064	89.49
सूर्य	04-03-2064	90.04
चन्द्रमा	13-06-2064	90.21
मंगल	23-08-2064	90.49
राहु	22-02-2065	90.68
गुरू	03-08-2065	91.18
शनि	12-02-2066	91.63
बुध	03-08-2066	92.15
केतु	13-10-2066	92.63

सूर्य अन्तर

(13:10:2066 To 13:10:2067)

सूर्य	01-11-2066	92.82
चन्द्रमा	01-12-2066	92.87
मंगल	22-12-2066	92.95
राहु	15-02-2067	93.01
गुरू	05-04-2067	93.16
शनि	02-06-2067	93.30
बुध	23-07-2067	93.45
केतु	14-08-2067	93.60
शुक्र	13-10-2067	93.65

चन्द्रमा अन्तर

(13:10:2067 To 14:06:2069)

चन्द्रमा	03-12-2067	93.82
मंगल	08-01-2068	93.96
राहु	08-04-2068	94.06
गुरू	28-06-2068	94.31
शनि	03-10-2068	94.53
बुध	28-12-2068	94.79
केतु	02-02-2069	95.03
शुक्र	14-05-2069	95.13
सूर्य	14-06-2069	95.40

मंगल अन्तर

(14:06:2069 To 14:08:2070)

मंगल	09-07-2069	95.49
राहु	10-09-2069	95.56
गुरू	06-11-2069	95.73
शनि	13-01-2070	95.89
बुध	14-03-2070	96.07
केतु	08-04-2070	96.24
शुक्र	18-06-2070	96.30
सूर्य	09-07-2070	96.50
चन्द्रमा	14-08-2070	96.56

राहु अन्तर

(14:08:2070 To 14:08:2073)

राहु	25-01-2071	96.65
गुरू	20-06-2071	97.10
शनि	10-12-2071	97.50
बुध	14-05-2072	97.98
केतु	17-07-2072	98.40
शुक्र	16-01-2073	98.58
सूर्य	11-03-2073	99.08
चन्द्रमा	11-06-2073	99.23
मंगल	14-08-2073	99.48

गुरू अन्तर

(14:08:2073 To 13:04:2076)

गुरू	21-12-2073	99.65
शनि	24-05-2074	100.01
बुध	09-10-2074	100.43
केतु	05-12-2074	100.81
शुक्र	16-05-2075	100.97
सूर्य	04-07-2075	101.41
चन्द्रमा	23-09-2075	101.54
मंगल	19-11-2075	101.77
राहु	13-04-2076	101.92

शनि अन्तर

(13:04:2076 To 14:06:2079)

शनि	14-10-2076	102.32
बुध	27-03-2077	102.82
केतु	02-06-2077	103.27
शुक्र	12-12-2077	103.46
सूर्य	08-02-2078	103.98
चन्द्रमा	15-05-2078	104.14
मंगल	21-07-2078	104.41
राहु	11-01-2079	104.59
गुरू	14-06-2079	105.07

बुध अन्तर

(14:06:2079 To 14:04:2082)

बुध	07-11-2079	105.49
केतु	07-01-2080	105.89
शुक्र	27-06-2080	106.05
सूर्य	18-08-2080	106.53
चन्द्रमा	13-11-2080	106.67
मंगल	12-01-2081	106.90
राहु	16-06-2081	107.07
गुरू	01-11-2081	107.50
शनि	14-04-2082	107.87

केतु अन्तर

(14:04:2082 To 14:06:2083)

केतु	09-05-2082	108.32
शुक्र	19-07-2082	108.39
सूर्य	09-08-2082	108.58
चन्द्रमा	13-09-2082	108.64
मंगल	08-10-2082	108.74
राहु	11-12-2082	108.81
गुरू	06-02-2083	108.98
शनि	14-04-2083	109.14
बुध	14-06-2083	109.32

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

सूर्य दशा

(14:06:2083 To 14:06:2089)

सूर्य अन्तर

(14:06:2083 To 01:10:2083)

सूर्य	19-06-2083	109.49
चन्द्रमा	28-06-2083	109.50
मंगल	05-07-2083	109.53
राहु	21-07-2083	109.55
गुरू	05-08-2083	109.59
शनि	22-08-2083	109.63
बुध	07-09-2083	109.68
केतु	13-09-2083	109.72
शुक्र	01-10-2083	109.74

चन्द्रमा अन्तर

(01:10:2083 To 01:04:2084)

चन्द्रमा	16-10-2083	109.79
मंगल	27-10-2083	109.83
राहु	23-11-2083	109.86
गुरू	18-12-2083	109.93
शनि	16-01-2084	110.00
बुध	11-02-2084	110.08
केतु	21-02-2084	110.15
शुक्र	23-03-2084	110.18
सूर्य	01-04-2084	110.26

मंगल अन्तर

(01:04:2084 To 07:08:2084)

मंगल	08-04-2084	110.29
राहु	28-04-2084	110.31
गुरू	15-05-2084	110.36
शनि	04-06-2084	110.41
बुध	22-06-2084	110.46
केतु	30-06-2084	110.51
शुक्र	21-07-2084	110.53
सूर्य	27-07-2084	110.59
चन्द्रमा	07-08-2084	110.61

राहु अन्तर

(07:08:2084 To 02:07:2085)

राहु	25-09-2084	110.64
गुरू	08-11-2084	110.77
शनि	31-12-2084	110.89
बुध	15-02-2085	111.04
केतु	06-03-2085	111.16
शुक्र	30-04-2085	111.22
सूर्य	16-05-2085	111.37
चन्द्रमा	13-06-2085	111.41
मंगल	02-07-2085	111.49

गुरू अन्तर

(02:07:2085 To 20:04:2086)

गुरू	10-08-2085	111.54
शनि	25-09-2085	111.64
बुध	06-11-2085	111.77
केतु	23-11-2085	111.88
शुक्र	10-01-2086	111.93
सूर्य	25-01-2086	112.06
चन्द्रमा	18-02-2086	112.10
मंगल	07-03-2086	112.17
राहु	20-04-2086	112.22

शनि अन्तर

(20:04:2086 To 02:04:2087)

शनि	14-06-2086	112.34
बुध	02-08-2086	112.49
केतु	22-08-2086	112.62
शुक्र	19-10-2086	112.68
सूर्य	05-11-2086	112.84
चन्द्रमा	04-12-2086	112.88
मंगल	24-12-2086	112.96
राहु	14-02-2087	113.02
गुरू	02-04-2087	113.16

बुध अन्तर

(02:04:2087 To 06:02:2088)

बुध	16-05-2087	113.29
केतु	03-06-2087	113.41
शुक्र	24-07-2087	113.46
सूर्य	09-08-2087	113.60
चन्द्रमा	04-09-2087	113.64
मंगल	22-09-2087	113.71
राहु	07-11-2087	113.76
गुरू	19-12-2087	113.89
शनि	06-02-2088	114.00

केतु अन्तर

(06:02:2088 To 13:06:2088)

केतु	14-02-2088	114.14
शुक्र	06-03-2088	114.16
सूर्य	12-03-2088	114.22
चन्द्रमा	23-03-2088	114.23
मंगल	30-03-2088	114.26
राहु	19-04-2088	114.28
गुरू	06-05-2088	114.34
शनि	26-05-2088	114.38
बुध	13-06-2088	114.44

शुक्र अन्तर

(13:06:2088 To 14:06:2089)

शुक्र	13-08-2088	114.49
सूर्य	31-08-2088	114.65
चन्द्रमा	01-10-2088	114.70
मंगल	22-10-2088	114.79
राहु	16-12-2088	114.85
गुरू	03-02-2089	115.00
शनि	02-04-2089	115.13
बुध	23-05-2089	115.29
केतु	14-06-2089	115.43

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

गोचर शनि (शनि साढ़ेसाती)

द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चर।
सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

शनि साढ़े साती साढ़े सात साल की अवधि है, जब शनि किसी व्यक्ति के ज्योतिषीय कुण्डली में जन्म के चंद्रमा (जन्म राशि) से 12वें, पहले और दूसरे घर में गोचर करता है। यह अवधि प्रायः जीवन की चुनौतियों, सीखने के अनुभवों और संभावित परिवर्तनों के माध्यम से विकास से संबद्ध होती है, लेकिन यह कठिनाइयाँ और परीक्षण भी ला सकती है जिन्हें व्यक्ति को धैर्य, अनुशासन और लचीलेपन के माध्यम से दूर करना होगा। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि साढ़े साती का प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति के लिए अद्वितीय होता है और काफी हद तक उनकी व्यक्तिगत कर्म यात्रा पर निर्भर करता है।

शनि साढेसाती के प्रथम चक्र

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व–म–दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	सिहं	07:09:1977	04:11:1979	2 y.1 m.27 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	सिहं	15:03:1980	27:07:1980	0 y.4 m.12 d.	
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	04:11:1979	15:03:1980	0 y.4 m.10 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)	कन्या	27:07:1980	06:10:1982	2 y.2 m.10 d.	
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	06:10:1982	21:12:1984	2 y.2 m.15 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)	तुला	01:06:1985	17:09:1985	0 y.3 m.17 d.	
कंटक शनि	धनु	17:12:1987	21:03:1990	2 y.3 m.3 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)	धनु	20:06:1990	15:12:1990	0 y.5 m.26 d.	
अष्टम शनि	मेष	17:04:1998	07:06:2000	2 y.1 m.21 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)					

शनि साढेसाती के द्वितिय चक्र

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व–म–दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	सिहं	01:11:2006	10:01:2007	0 y.2 m.9 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	सिहं	16:07:2007	10:09:2009	2 y.1 m.25 d.	
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	10:09:2009	15:11:2011	2 y.2 m.5 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)	कन्या	16:05:2012	04:08:2012	0 y.2 m.19 d.	
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	15:11:2011	16:05:2012	0 y.6 m.0 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)	तुला	04:08:2012	02:11:2014	2 y.2 m.28 d.	
कंटक शनि	धनु	26:01:2017	21:06:2017	0 y.4 m.24 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)	धनु	26:10:2017	24:01:2020	2 y.2 m.29 d.	
अष्टम शनि	मेष	03:06:2027	20:10:2027	0 y.4 m.17 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)	मेष	23:02:2028	08:08:2029	1 y.5 m.14 d.	

शनि साढेसाती के तृतिय चक्र

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व–म–दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	सिहं	27:08:2036	22:10:2038	2 y.1 m.25 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	सिहं	05:04:2039	13:07:2039	0 y.3 m.8 d.	
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	22:10:2038	05:04:2039	0 y.5 m.13 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)	कन्या	13:07:2039	28:01:2041	1 y.6 m.16 d.	
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	28:01:2041	06:02:2041	0 y.0 m.9 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)	तुला	26:09:2041	12:12:2043	2 y.2 m.16 d.	
कंटक शनि	धनु	08:12:2046	06:03:2049	2 y.2 m.27 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)	धनु	10:07:2049	04:12:2049	0 y.4 m.25 d.	
अष्टम शनि	मेष	07:04:2057	28:05:2059	2 y.1 m.20 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)					

सूर्य

(सात्विक, आग्नेय, क्षत्रिय)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः। (30 दिन में 7000 बार)

आस्त्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मृर्त्य च।
हिरण्येन सविता रथेनादेवी याति भुवना विपश्यत्।।

राशि (अंश)	धनु (02:15:49)	प्रसिद्धि
नक्षत्र (पद)	मूला (1)	शक्ति
कारक	दारा	स्वास्थ्य
बल		पिता
स्थान	मित्र राशि में	राजनीतिज्ञ

क्या है सूर्य?

कारकत्व– पिता, आत्मा, पौरुष सिद्धान्त, प्रेरणा, कार्य, अधिकार।

सूर्य शक्ति की भावना से संबंधित है। सूर्य जिस भी भाव में स्थित होता है, उस भाव को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। यहां तक कि सूर्य से जुड़ी राशि की विशेषताएं भी सामान्यतः तीव्र होती हैं। वह भाव जिसमें सूर्य स्थित होता है, व्यक्ति के संपूर्ण जीवनकाल के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है। सूर्य व्यक्ति की कुण्डली में जिस भाव व राशि में स्थित होता है, उसकी प्रकृति के अनुसार तथा युति व दृष्टि के द्वारा अन्य ग्रहों व भावों से बने संबंधों के आधार पर व्यक्ति के प्रेरणा शक्ति को दर्शाता है, जो कि व्यक्ति आवश्यक रूप से बनने की आकांक्षा रखता है। यह सूर्य के प्रतीक (पूर्ण या परिपक्वता को प्रदर्शित करता एक चक्र, जिसमें क्षमता/संभावना को प्रदर्शित करता एक बिन्दु) में परिलक्षित होता है।

सूर्य में उपस्थित पौरुष सिद्धान्त रचनात्मकता, उन्नति, इच्छा शक्ति, उद्देश्य, अधिकार, विशिष्टता की भावना, मालिक, पिता और शासक सहित अन्य सभी अधिकारी वर्ग में संचारित होता है। जिस प्रकार एक राजा या किसी देश का शासक एक ऐसा व्यक्ति होता है, जिसके अधीन राष्ट्र के असमान सामाजिक समूह या तो एकजुट होते हैं या विभाजित होते हैं। इसी प्रकार, सूर्य एक ऐसी प्रक्रिया का प्रतीक है, जिसके द्वारा कुण्डली में उपस्थित अन्य ग्रहों की उर्जाएं एकीकृत या बर्बाद हो जाती हैं। सूर्य का सकारात्मक प्रभाव उदारता, स्नेह और रचनात्मकता है, तथा उसका नकारात्मक प्रभाव अहंकार व अक्खड़पन है।

उपाय क्या करें ?

(1) भगवान विष्णु की पूजा करें। (2) विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें। (3) आदित्य हृदय स्रोत का पाठ सूर्य के सामने करें। (4) अपने आज्ञा चक्र पर (बिन्दी लगाने का स्थान) पर केसर का तिलक लगायें। (5) मांस–मदिरा से दूर रहें। (6) नमकीन परांठे रविवार को गरीबों में बांटे। (7) बन्दरों की सेवा करें (गुड़, केला, चने)। (8) मुंह में मीठा डालकर अपने काम की शुरुआत करें। (9) अपनी सामर्थ्य अनुसार गेहूं का दान करें या वजनानुसार हर महीने। (10) काले, भूरे और नीले रंग का प्रयोग करने से बचें। सफेद और पीले रंग का ज्यादा इस्तेमाल करें। (11) अपने पिता के चरण स्पर्श करें और पिता से रिश्ते बनाकर रखें। (12) 22वें साल में शादी ना करें। (13) सूर्य नमस्कार, गायत्री मंत्र का जाप करें एवं ऊँ का उच्चारण करें।

सूर्य

(सात्विक, आग्नेय, क्षत्रिय)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः। (30 दिन में 7000 बार)

आस्त्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मृत्यं च।
हिरण्येन सविता रथेनादेवी याति भुवना विपश्यत्।।

कुण्डली में क्या है सूर्य का फल?

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। सूर्य आपके लग्न से चतुर्थ स्थान में धनु राशि में है जिसका स्वामी गुरु सूर्य का मित्र है। आपके लिये सूर्य शुभफल दायक सिद्ध होगा। आप आकर्षक तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले होंगे परन्तु आपके स्वभाव में कुछ कठोरता रहेगी। आप बुद्धिमान, परोपकारी तथा कार्यकुशल होंगे। सन्तान सुख में कमी हो सकती है। अपनी माता से आपको प्रेम रहेगा और विशेष परिश्रम से ही जीवन में प्रगति सम्भव है। आपकी आर्थिक स्थिति औसत रहेगी। आप साहसी रहेंगे तथा शत्रु आपसे घबरायेंगे। आपको हृदय सम्बन्धी बीमारी तथा रक्तचाप (ब्लड प्रेशर) होने की सम्भावनायें बनती है। धन कमाने के लिये आप दूरस्थ स्थानों की यात्रा भी कर सकते हैं। संगीत, कला, काव्य, लेखन में आपकी विशेष रुचि रहेगी और आप इन विद्याओं की उन्नति में अपना योगदान भी देंगे।

मध्य आयु तक आप भूमि, मकान, वाहन आदि प्राप्त कर सम्पन्न बन सकते हैं, किन्तु मानसिक सुख शान्ति में कमी हो सकती है। सूर्य की सप्तम पूर्ण दृष्टि दशम स्थान में स्थित मिथुन राशि में पड़ रही है जो सूर्य के मित्र बुध की राशि है अतः आपको दशम स्थान से सम्बन्धित शुभ फल प्राप्त होंगे और आपको अच्छे पद की प्राप्ति होगी। आपको राजकीय तथा सामाजिक प्रतिष्ठा भी प्राप्त होगी, साथ ही आपको आर्थिक उन्नति के नये अवसर प्राप्त होंगे। अपने पिता से आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे, परन्तु सत्ता पक्ष आपके पक्ष में रहेगा और सत्ता पक्ष द्वारा आपको सम्मान प्रदान किये जाने की भी प्रबल सम्भावना है।

चन्द्रमा

(सात्विक, जलीय, वैश्य)

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः। (11000 बार)

दधिशंखतुशाराभं क्षीरोदोर्णवसभवम् नवमि्।
भाशिनं भवत्या भाम्भोर्मुकुटभुशणम्।।

राशि (अंश)	कन्या (16:00:57)	जलीय स्थान
नक्षत्र (पद)	हस्ता (2)	माता
कारक	भ्रात्रि	हृदय
बल	स्व नक्षत्र	मस्तिष्क
स्थान	मित्र राशि में	रक्त

क्या है चन्द्रमा?

कारकत्व– स्त्रीयोचित सिद्धान्त, माता, मन, भावना/सहजवृत्ति/प्रतिक्रिया।

सूर्य के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण ग्रह चंद्रमा है। यह चक्रीय परिवर्तन और अन्तःप्रेरणा की भावना को व्यक्त करता है। परिवार और सामाजिक प्रतिक्रियाएं चंद्रमा से जुड़े हुए हैं। जिस प्रकार वास्तविक जीवन में चंद्रमा सूर्य के प्रकाश को दर्शाता है, उसी प्रकार ज्योतिषशास्त्र में चंद्रमा व्यक्ति के स्वाभाविक और भावनात्मक प्रतिक्रिया को दर्शाता है। व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा जिस राशि में स्थित होता है, उसे जन्म राशि कहते हैं, जो कि सामान्यतः व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। जिस प्रकार सूर्य का संबंध क्रिया से है, उसी प्रकार चंद्रमा का संबंध प्रतिक्रिया से है। ये प्रतिक्रियात्मक भावनाएं बाल्यकाल में व्यापक रूप से अचैतन्य होती हैं, केवल तब प्रकट होती हैं, जब कोई व्यक्ति सूर्य द्वारा प्रदर्शित सच्चे आत्म के बारे में जागरूक हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप, चंद्रमा अपनी स्थित राशि व भाव तथा अन्य ग्रहों के साथ पारस्परिक संबंधों के माध्यम से एक बच्चे के रूप में व्यक्ति के भावनात्मक विकास के बारे में बता सकता है और यह बाद के जीवन में किस प्रकार उभरेगा, यह भी प्रकट कर सकता है।

चंद्रमा के माध्यम से स्त्रीयोचित सिद्धान्त– प्राकृतिक आदतों, घरेलू वातावरण, सुरक्षात्मक प्रवृत्ति, मनोदशा, कल्पना, खाने के तौर–तरीके व प्राथमिकताएं, अतीत के प्रति रवैया, सार्वजनिक व्यक्ति बनना या आम लोगों तक पहुंचने की क्षमता, चक्रिय परिवर्तन को प्रदर्शित करने वाला भाग्य, व्यक्ति में अपनेपन की भावना और महिला, विशेषकार मां का संचालन होता है। व्यापारिक चतुराई, कल्पनाशील प्रकृत्ति, माता से संबंधित अन्तःप्रेरणा व धैर्य व्यक्ति पर पड़ने वाले चंद्रमा के सकारात्मक प्रभाव हैं, जबकि हठधर्मिता, अविश्वसनीयता, तर्कहीन व्यवहार और अस्थिर/चंचल मन चंद्रमा के नकारात्मक प्रभाव को दर्शाते हैं।

उपाय क्या करें ?

(1) अपनी मां को सम्मान दें और रोजाना चरण स्पर्श करें। (2) अमावस्या को दूध और दूध से बनी वस्तुयें बांटे। (3) सोमवार को दूध, शहद से भगवान शिव का अभिषेक करें। (4) रुद्राष्टक का पाठ, ऊँ नमो शिवाय का जाप, महामृत्युंजय का जाप करें। (5) सिरहाने दूध रखकर बबूल या पीपल पर डालें (रविवार को छोड़कर)। (6) चांद की रौशनी में बैठकर उं का उच्चारण करें। (7) चावल उबाल कर, दूध, चीनी मिलाकर गरीबों को खिलायें। (8) छोटे बच्चों को दूध का दान करें, खासकर मजदूर के बच्चों को। (9) वीराने में खड़े पीपल को दूध, पानी से सींचे। (10) जिन वृक्षों को कोई जल नहीं देता – सींचना शुरु करें। (11) घर के वायव्य कोण (उत्तर, पश्चिम) को खुला, हवादार रखें। (12) सफेद कपड़े में चावल बांधकर किसी शिव मंदिर में दान करें।

चन्द्रमा

(सात्विक, जलीय, वैश्य)

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः। (11000 बार)

दधिशंखतुशाराभं क्षीरोदोर्णवसभवम् नवमि्।
भाशिनं भवत्या भाम्भोर्मुकुटभुशणम्।।

कुण्डली में क्या है चन्द्रमा का फल?

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। चन्द्रमा आपके जन्म लग्न से प्रथम स्थान (जन्म लग्न) में कन्या राशि में स्थित है, जिसके स्वामी बुध से चन्द्रमा की मित्रता है। सामान्यतः चन्द्रमा प्रथम स्थान में अच्छे फल प्रदान करता है, चन्द्रमा आपको शुभ फल प्रदान करेगा। आप मध्यम कद गेहुँए रंग तथा सामान्य शारीरिक गठन वाले व्यक्ति होंगे। यद्यपि आप शारीरिक रूप से अधिक बलिष्ठ नहीं होंगे, किन्तु आपके व्यक्तित्व में आकर्षण होने से लोग आपसे मित्रता करने के इच्छुक रहेंगे। आपके मधुर स्वभाव के कारण भी आपके मित्रों की संख्या अधिक होगी। आपका स्वास्थ्य साधारण रहेगा। यदा-कदा सामान्य रोगों से आप ग्रसित हो सकते हैं। किन्तु क्षीण तथा पापाक्रान्त चन्द्रमा आपके स्वास्थ्य के लिये अनिष्टकारी सिद्ध हो सकता है, यह आयु भी कम करता है तथा सिर, नेत्र, गले के विभिन्न रोगों से भी आपको पीड़ित कर सकता है। आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आप अच्छी प्रगति कर सकते हैं। शैक्षणिक विषयों के अतिरिक्त आप साहित्य, ज्योतिष, शास्त्रीय विषयों का भी अध्ययन कर सकते हैं।

आप वाचाल प्रवृत्ति के तथा वाद-विवाद, आदि में चतुर रहेंगे। आप अच्छे वक्ता भी बन सकते हैं। पर्यटन में भी आपकी रुचि रहेगी। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। आपकी आय के एक से अधिक साधन हो सकते हैं। सर्विस की अपेक्षा व्यापार आपके लिये अधिक लाभदायक सिद्ध हो सकता है। आपकी प्रवृत्ति मितव्ययी होगी। चन्द्रमा की सप्तम् पूर्ण दृष्टि सप्तम् स्थान में मीन राशि पर पड़ती है, जिसके स्वामी गुरु से चन्द्रमा की मित्रता है। आपका वैवाहिक जीवन अच्छा रहेगा तथा आपकी पत्नी, सुन्दर, सुशिक्षित तथा गुणवान होंगी। अपनी माता से आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे, परन्तु पिता का आपको स्नेह मिलेगा। साझेदारी का व्यापार आपके लिये लाभप्रद सिद्ध होगा तथा ज़मीन, मकान, वाहन आदि का सुख आपको प्राप्त होगा।

मंगल

(तामसीक, आग्नेय, क्षत्रिय)

ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः। (20 दिन में 10000 बार)

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत कान्ति सम प्रभम्।
कुमार भाकिृहस्तं च मंगल प्रणामाभ्यहम्।।

राशि (अंश)	मेष (04:42:18)	भाई
नक्षत्र (पद)	अश्विनी (2)	अचल सम्पत्ति
कारक	ज्ञाति	क्रोध, हिंसा, घृणा
बल	स्व राशि	मांसपेशी
स्थान	सम राशि में	बहादुरी

क्या है मंगल?

कारकत्व– युद्ध, शक्ति, आन्तरिक बल, पौरुष, महात्वाकांक्षा, दृढ़ संकल्प एवं छोटे भाई/बहन।

मंगल को सबसे शक्तिशाली ग्रह माना जाता है। यह अग्नि और उर्जा का प्रतीक है। सहज स्तर पर मंगल अस्तित्व के लिए लड़ने के दृढ़ संकल्प की भावना को दर्शाता है। जैसा कि जीवन के लिए खतरनाक परिस्थिति में व्यक्ति या तो युद्ध कर सकता है या पलायन कर सकता है। व्यक्ति केवल उसके लिए ही लड़ेगा, जिसको वह महत्व देता है। व्यक्ति किसे महत्व देता है, इसका निर्धारण बुध से होता है, अतः कुण्डली में मंगल के निहितार्थ को जानने के लिए संयुक्त रूप से बुध का भी परीक्षण करना होगा। जहां बुध व्यक्ति के महत्वपूर्ण पक्ष को दर्शाता है, वहीं मंगल यह दर्शाता है, कि कैसे व्यक्ति उसे हासिल करता है या संरक्षित करता है। परिणामस्वरूप मंगल उन सभी गुणों को दर्शाता है, जो व्यक्ति को अपने सपनों को प्राप्त करने में मदद करते हैं और इस प्रकार उसकी आत्म–छवि को बढ़ाते हैं। अतः मंगल द्वारा प्रस्तुत सबसे प्रारम्भिक गुण साहस, निडरता, पहल, शारीरिक और मानसिक आन्तरिक बल हैं।

एक योद्धा के रूप में, मंगल धातु से बनी वस्तुओं– लोहे की तलवार, ढाल, कवच, हथियार से घिरे हुए होने पर अथवा इन सभी वस्तुओं की देखभाल करने वाले व्यक्तियों पर अत्यंत प्रसन्न होता है। आधुनिक समय में इस प्रवृत्ति की व्याख्या धारदार/नुकीले धातु के उपकरणों, धातु गलाने के उद्योग, मशीनों से संबंधित लोगों अथवा इन मशीनों के साथ कार्य करने वाले लोगों जैसे इंजीनियर और तकनीशियन से की जा सकती है। मंगल के सकारात्मक प्रभाव स्वतंत्रता के प्रति प्रेम, दबे–कुचलों की रक्षा, कठोर परिश्रम करने की प्रकृति, प्रतिस्पर्द्धी स्वभाव तथा नेतृत्व की इच्छा के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं, जबकि नकारात्मक प्रभाव व्यक्ति को झगड़ालु प्रवृति, संघर्ष–प्रेमी, प्रचण्ड व कलहकारी बनाता है।

उपाय क्या करें ?

(1) बड़े भाई का सम्मान करें, चरण स्पर्श करते रहें। (2) हनुमान जी को सिन्दूर को चोला चढ़ायें। (3) हनुमान चालीसा, बजरंग बाण, हनुमान अष्टक का पाठ करें। (4) मंगलवार के दिन हनुमान जी के मंदिर में अनार का भोग दें। (5) रक्तदान, महादान करें। (6) मीठी रोटियों का दान करें। (7) सफेद तिल और देसी शक्कर मिलाकर कीड़े मकोड़ों को डालें। (8) मंगल की होरा में (यानि मंगलवार सुबह) बन्दरों को गुड़ डालें। (9) हनुमान जी या दुर्गा जी को मंदिर में लाल रंग का झण्डा चढ़ायें। (10) सुन्दर काण्ड का पाठ हर तरह के मंगल दोष से रक्षा करता है। (11) सूर्य के सामने बजरंग बाण का पाठ करने से शत्रु नाश होगा। (12) मांस–मदिरा से दूर रहें। (13) जमीन पर सोना शुरु करें। (14) तांबे के गिलास में पानी पियें।

मंगल

(तामसीक, आग्नेय, क्षत्रिय)

ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः। (20 दिन में 10000 बार)

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत कान्ति सम प्रभम्।
कुमार भाकिृहस्तं च मंगल प्रणामाभ्यहम्।।

कुण्डली में क्या है मंगल का फल?

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। मंगल आपके जन्म लग्न से अष्टम स्थान में मेष राशि में स्थित है, जो मंगल की स्वराशि है। सामान्यतः अष्टमस्थ मंगल शुभफल नहीं देता है। तृतीयेश तथा अष्टमेश मंगल अष्टम स्थान में आपको अच्छे फल नहीं देगा। मंगल आपको मांगलिक बनायेगा। आपका स्वभाव राजसी तथा कठोर हो सकता है और आपके मित्र और परिजन आपकी नाराज़गी से भयभीत हो सकते हैं। आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप बचपन में रोगग्रस्त रह सकते हैं, परन्तु आपका स्वास्थ्य युवावस्था में सामान्य रहेगा। कभी-कभी आपको त्वचा रोग हो सकते हैं। आपके हाथ में कोई कमी आ सकती है तथा शस्त्र का भी खतरा हो सकता है। आपकी धर्म में रुचि कम हो सकती है और अपने भाई-बहनों से भी आपकी कम ही बनेगी। आपका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं रहेगा। आप दोनों पति-पत्नि के बीच में उत्पन्न वैचारिक मतभेद तथा आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी आपकी चिन्ता का कारण बन सकता है और आपका दूसरा विवाह भी हो सकता है।

आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। आप सैन्य सेवा, गुप्तचर विभाग, फायर मैन, मैकेनिक, खान विभाग आदि में सर्विस कर सकते हैं। आपका मनोबल तथा कार्य-कुशलता अच्छी रहने में आपको प्रतिष्ठा प्राप्त होगी तथा राजनीति के क्षेत्र में भी आपको सफलता मिलेगी। मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि एकादश स्थान में कर्क राशि में पड़ती है, जो मंगल की नीच राशि है। आप आय बढ़ाने के लिये किये गये प्रयत्नों में कम ही सफल हो पायेंगे। मंगल की सप्तम पूर्ण दृष्टि द्वितीय स्थान में तुला राशि में पड़ती है, जिसका स्वामी शुक्र मंगल के साथ सम व्यवहार रखता है। आप धनार्जन के लिये कठोर परिश्रम करेंगे। आपको अचानक धन की प्राप्ति भी होगी और कुटुम्ब का सुख आपको कम ही प्राप्त हो पायेगा। मंगल की अष्टम पूर्ण दृष्टि तृतीय स्थान में वृश्चिक राशि में पड़ती है, जो मंगल की स्वराशि है। आप साहसी तथा उद्यमी व्यक्ति होंगे, किन्तु अपने भाई-बहनों से आपके सम्बन्ध खराब हो सकते हैं।

बुध (अस्त)

(राजसी, संसारिक, शुद्र)

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः। (21 दिन में 19000 बार)

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यम् सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणामाम्यहम्।।

राशि (अंश)	वृश्चिक (19:51:24)	दत्तक पुत्र
नक्षत्र (पद)	ज्येष्ठा (1)	बुद्धिमता
कारक	आत्म	शिक्षण, शिक्षा
बल	स्व नक्षत्र	वेद पुराण
स्थान	सम राशि में	व्यवसाय, व्यापार

क्या है बुध?

कारकत्व- व्यापार और व्यवसाय, संवाद कौशल, बुद्धिमता, मामा/मौसी।

बुध का सूचक शब्द संचार है। चूंकि बुध की कक्षीय अवधि अन्य सभी ग्रहों से सबसे छोटी है, जिससे बुध सबसे तेज ग्रह बन जाता है और इसीलिए संचार जो कि मानव जीवन की सबसे तेज गतिविधियों में से एक है, बुध उसका प्रतिनिधित्व करता है। व्यक्ति की कुण्डली में, बुध अत्यधिक आत्म-जागरूकता का अवसर प्रदान करते हुए, प्रबुद्ध विचा की लौ कुण्डली के शेष हिस्से में संचारित करता है। विशेष रूप से बुध जिस भाव व राशि में स्थित होता है, उसके माध्यम से वह मानसिक आवृत्ति प्रकट करता है, जो व्यक्ि के विचार और सामान्य रूप से संवाद को संचालित करता है। विशेष रूप से युति/दृष्टि द्वारा स्थापित किए गए अन्य ग्रहों के साथ संपर्कों के माध्यम से, बुध सीखने के लिए व्यक्ति की उपयुक्तता को भी दर्शाता है, भले ही व्यक्ति का दृष्टिकोण या राय तर्क पर आधारित हो या उसकी भावनाओं और आदतों पर आधारित हो।

अपनी सर्वोच्च अभिव्यक्ति में, बुध बुद्धि और आत्म-ज्ञान की शक्ति का प्रतीक है तथा अपनी निम्नतर अभिव्यक्ति में, बुध चालबाज, धोखेबाज और निम्न स्तर की कुटिलता से भरे हुए मस्तिष्क का प्रतिनितिधत्व करता है। अन्य स्तरों पर, बुध बुद्धि और तार्किक उद्देश्यपूर्ण मस्तिष्क के कार्य से मेल खाता है। मानसिक धारणा के इन पहलुओं को जीवन के प्रारम्भ में ही रोपित कर दिया जाता है, अतः बुध प्रारम्भिक विद्यालयी अनुभवों का प्रतिनिधित्व करता है, जो कि बाद में विज्ञान की खोज में खिलते हैं। उसकी संवादशील योग्यता अनेक स्रोतों- व्यापार, वाणिज्य, व्यवसाय, परिवहन एवं छोटी या कम दूरी की यात्राओं के माध्यम से निकलती है। बुध की संवाद/संचार में गहन रूचि की अभिव्यक्ति तर्क-वितर्क, विचार-विमर्श, लेखन, पठन के माध्यम से विचारों के आदान-प्रदा के द्वारा होती है। भाषाएं और संचार के साधन- टेलिफोन, टेलिविजन, कम्प्यूटर, अखबार, पुस्तकें। बुध का सकारात्मक प्रभाव व्यक्ति की चतुराई, उत्तम स्मरण शक्ति, तर्कसंगत व संवादशील मस्तिष्क द्वारा दृष्टिगोचर होता है, जबकि घबराहट, मानसिक सुस्ती, मंदता औ तर्कपूर्ण व्यंग्यात्मक प्रकृति बुध के नकारात्मक प्रभाव को प्रदर्शित करते हैं।

उपाय क्या करें ?

(1) अपनी बुआ, मौसी, बेटे से संबंध अच्छे रखें। (2) दुर्गा जी की उपासना करें, दुर्गा सप्तशती का पाठ करें, अष्टमी का व्रत रखें। (3) कन्याओं की, बेटियों की सेवा करें, अपशब्द न बोलें। (4) गरीब कन्याओं की शिक्षा और शादी में योगदान दें। (5) साबुत हरे मूंग और बाजरा (भिंगोकर) कबूतरों को डालें। (6) फिटकरी से दांत साफ करें। (7) हिजड़ों को हरे वस्त्र का दान करें। (8) पिंजरे से तोते आजाद करायें। (9) घर के उत्तर में हरा रंग करायें और दीवार घड़ी स्थापित करें। (10) अपने घर में फूलों वाले पौधे जरुर लगायें। (11) झूठ बोलने की आदत छोड़ें। (12) हरी ईलायची मुंह में डालकर रखें। (13) घर में कच्ची जमीन पर घास उगाए या पुदीना, धनिया गमले में उगाये। (14) गायों की चारा-पानी का प्रवंध करें। (15) मंदिर या धर्मस्थान में हरी सब्जियों का दान करें।

बुध (अस्त)

(राजसी, संसारिक, शुद्र)

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः। (21 दिन में 19000 बार)

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यम् सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणामाम्यहम्।।

कुण्डली में क्या है बुध का फल?

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। बुध आपके जन्म लग्न से तृतीय स्थान में वृश्चिक राशि में स्थित है, जिनके स्वामी मंगल की बुध से शत्रुता है। सामान्यतः तृतीय स्थान में बुध मिश्रित फल प्रदान करता है, लग्नेश तथा दशमेश बुध तृतीयस्थ होकर आपको मिश्रित फल प्रदान करेगा। बुध आपको पुरुषार्थी, पराक्रमी तथा सम्पन्न व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव स्वाभिमानी होगा किन्तु व्यवहार कुशल होने से आपका व्यवहार मित्रों तथा परिजनों से सौहार्द्रपूर्ण रहेगा। आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा परिजन भी आपका सम्मान करेंगे। आपका स्वास्थ्य साधारण रहेगा और कभी-कभी आपको आँखों के रोग तथा माँसपेशियों की कमज़ोरी की समस्या हो सकती है।

आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी और आपको साहित्य, गणित, यान्त्रिकी, भूगर्भशास्त्र आदि में रुचि रहेगी। आपका रुझान गूढ़ विषयों जैसे ज्योतिष, तंत्र-मंत्र, धर्मशास्त्र आदि में रहेगा। आपको देशाटन का शौक भी रहेगा। पिता से आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे, और सत्ता पक्ष से भी प्रतिकूल सम्बन्धों के कारण आपके कार्यों में अनावश्यक विलम्ब हो सकता है। भाई-बहनों से आपका स्नेह कम ही रहेगा। आपकी आर्थिक स्थिति प्रायः अच्छी रहेगी। आप लेखक, प्रोफेसर, साहित्यकार, गणितज्ञ, भूगर्भशास्त्री बन सकते हैं। आपको राजकीय सर्विस भी प्राप्त हो सकती है, किन्तु व्यापार में आपको लाभ कम ही प्राप्त हो पायेगा। बुध की सप्तम् पूर्ण दृष्टि नवम् स्थान में वृष राशि में पड़ती है, जिनके स्वामी शुक्र की बुध से मित्रता है। आप धार्मिक प्रवृत्ति के होंगे तथा 32वें वर्ष में आपका भाग्य उदय होने की सम्भावना है।

गुरू

(सात्विक, आग्नेय, शुभ)

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः। (19000 बार)

देवानां च ऋशीणां च गुरु कान्चन सन्निभम्।
बुधिभूतं त्रिलोकेश तं गुरुं प्रणामाम्यहम्।।

4

राशि (अंश)	मकर (17:56:39)	गुरु
नक्षत्र (पद)	श्रवण (3)	दादा–दादी
कारक	अमात्य	धर्म, धार्मिक
बल	नीच राशि	विश्वास
स्थान	सम राशि में	भक्ति, सद्गुण

क्या है गुरू?

कारकत्व– शिक्षा/बुद्धिमत्ता, नैतिकता, धर्म, उन्नति, विस्तार, प्रसन्नता, स्वयं द्वारा अर्जित धन और संतान।

बृहस्पति का सूचक शब्द विस्तार है। जैसाकि यह सौर–मंडल का सबसे बड़ा ग्रह है, इसलिए ज्योतिष शास्त्र में उन्नति और विस्तार का प्रतिनिधित्व बृहस्पति द्वारा किए जाने कोई आश्चर्य नहीं है। सामान्यतः बृहस्पति जीवन के उस क्षेत्र में बहुत अनुकूल प्रतिफल प्रदान करता है, जिसका संबंध उस भाव से होता है, जिसमें बृहस्पति स्थित हो। भौतिक दृष्टि से देखा जाये, तो बृहस्पति शारीरिक विकास, विशेषकर कोशिकीय विकास और पाचन के माध्यम से पालन–पोषण का प्रतिनिधित्व करता है। किन्तु कुण्डली में बृहस्पति का प्रमुख महत्व उसके सामाजिक ग्रह के रूप में है, जो कि शनि के साथ वह साझा करता है। सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध और शुक्र सभी ग्रह पैतृक या पर्यावरणीय कारकों के संदर्भ के बिना विशेष रूप से व्यक्ति के चरित्र के व्यक्तिगत पहलुओं से निपटते हैं। इसके विपरीत बृहस्पति यह दर्शाता है, कि व्यक्ति अपने अस्तित्व का औचित्य सिद्ध करने के लिए किस प्रकार जीवनभर विकास करता है।

इस संदर्भ में वृद्धि का अर्थ है कि व्यक्ति समाज में प्रचलित मान्यताओं की प्रतिक्रिया के रूप में कैसे उन्नति करता है तथा किस हद तक इनके साथ मिश्रित होता है या उन्हें चुनौती देता है। संसार में एक स्थान प्राप्त करने की स्थिति में, बृहस्पति द्वारा अधिग्रहित राशि, भाव एवं सबसे अधिक महत्वपूर्ण अन्य ग्रहों व भावों के साथ उसके दृष्टि संबंध व्यक्ति की सामाजिक अपेक्षाओं और आदर्शों को तथा उन्हें साकार करने के अवसरों का निर्माण करने के बारे में दर्शाते हैं। अन्य स्तरों पर, बृहस्पति ईश्वर के प्रति व्यक्ति की धारणा, धार्मिक विश्वास, दर्शनशास्त्र, कानून की भावना और सभी सैद्धान्तिक विचारों को दर्शाता है। वह उच्च शिक्षा, नैतिकता, राजनीति, आध्यात्मिक व भौतिक समृद्धि, प्रतिष्ठा, सम्मान, विदेश से संबंधित कोई कार्य, अपव्ययिता, मोटापा एवं अत्यधिक भोजन/अधिक खपत को भी दर्शाता है। व्यक्ति का आशावादी, सहानुभूतिशील, दयालु और खेल प्रेमी होना बृहस्पति के सकारात्मक प्रभावों का संकेत देता है, जबकि लापरवाह, अतिआशावादी, असावधान, फिजूलखर्ची और आसक्ति उसके नकारात्मक प्रभावों को दर्शाते हैं।

उपाय क्या करें ?

(1) अपने पिता और दादा से आर्शीवाद लें। (2) बुजुर्गो की सेवा करें। (3) वृद्ध आश्रम में अन्न का दान करें। (4) दूध में हल्दी, केसर डालकर पियें। (5) मांस, मदिरा से दूर रहें। (6) बरगद के पेड़ पर हल्दी और गुड़ डालकर जल चढ़ायें, केले के पेड़ की पूजा करें। (7) अपने गुरु का साथ कभी न छोड़ें। (8) अपनी नाभि, कंठ, और माथे पर हल्दी या केसर से तिलक लगायें। (9) आधे–अधूरे कपड़े ना पहनें। (10) उत्तर–पूर्व में जल स्रोत स्थापित करें। (11) घर का मंदिर उत्तर–पूर्व में रखें। (12) गले में सोना धारण करें या पीले रंग का धागा (तिहरा) धारण करें। (13) केसर और हल्दी से दूध के साथ रुद्राभिषेक करें। (14) गरीब बच्चों की शिक्षा की जिम्मेदारी उठायें। (15) योगा, प्राणयाम जरुर करें।

गुरू

(सात्विक, आग्नेय, शुभ)

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः। (19000 बार)

देवानां च ऋशीणां च गुरु कान्चन सन्निभम्।
बुधिभूतं त्रिलोकेश तं गुरुं प्रणामाम्यहम्।।

4

कुण्डली में क्या है गुरु का फल?

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। गुरु आपके जन्म लग्न से पंचम स्थान में मकर राशि में स्थित है जो गुरु की नीच राशि है। सामान्यतः पंचमस्थ गुरु शुभफल प्रदान करता है। चतुर्थेश तथा सप्तमेश गुरु पंचम स्थान में आपको अच्छे फल देगा। गुरु आपको जनप्रिय, प्रतिष्ठित, उद्यमी, पुरुषार्थी तथा दीर्घायु व्यक्ति बनाता है। आप स्वाभिमानी तथा रुखे स्वभाव के व्यक्ति हो सकते हैं, किन्तु आप व्यवहार कुशल रहेंगे, अतः अपनी व्यवहारकुशलता से मित्रों तथा परिजनों को प्रसन्न रखने में आप सफल रहेंगे। आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं रहेगा और कभी-कभी आपको पेट तथा पाचन तंत्र, सम्बन्धी बीमारियों से कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी। आपका रुझान साहित्य, दर्शन, भाषा, पुरातत्व आदि में होगा, साथ ही पुरातन तथा गूढ़ विद्याओं में आपकी रुचि रहेगी, किन्तु अनेक प्रकार की बाधाओं तथा कठिनाइयों से शिक्षा पूरी करने में आपको विलम्ब हो सकता है। अपनी माता से आपके सामान्य सम्बन्ध रहेंगे।

आपका वैवाहिक जीवन सामान्य होगा। आपकी पत्नी सामान्य रंग-रूप युक्त, कार्यकुशल परन्तु कुछ गर्म स्वभाव की हो सकती हैं और कभी-कभी होने वाले मतभेदों के अलावा अपनी पत्नी से आपका सामंजस्य बना रहेगा। सन्तान की ओर से सुख आपको कम ही प्राप्त हो पायेगा या आपकी सन्तान का स्वास्थ्य भी आपकी चिन्ता का कारण बन सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप लेखक, शिक्षक, साहित्यकार, पुरातत्ववेत्ता आदि बनकर धन कमायेंगे, इसके अलावा आपको राजकीय नौकरी प्राप्त होने की भी सम्भावना है, किन्तु व्यापार में आपको उतार-चढ़ाव जैसी स्थिति का सामना करना पड़ सकता है तथा ज़मीन, मकान, वाहन आदि सुख-सुविधायें प्राप्त करने में आपको बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। गुरु की पंचम पूर्ण दृष्टि नवम स्थान में वृष राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शुक्र से गुरु की शत्रुता है। आपका धर्म में रुझान कम हो सकता है और भाग्य चमकने में कुछ विलम्ब हो सकता है। इस गुरु की सप्तम पूर्ण दृष्टि एकादश स्थान में कर्क राशि में पड़ती है, जो गुरु की उच्च राशि है। आप अपने परिश्रम और पुरुषार्थ से आय के नये साधन खोज सकते हैं। गुरु की नवम पूर्ण दृष्टि लग्न स्थान में कन्या राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से गुरु की शत्रुता है। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा। अपनी व्यवहारकुशलता से आप सबको प्रसन्न रखने में समर्थ रहेंगे।

शुक्र

(राजसी, वायुमय, ब्राह्मण)

ॐ द्रां द्रीं द्रौम सः शुक्राय नमः। (6000 बार)

हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्व भास्त्र प्रवक्तारं भर्गव प्रणामाम्यहम्।।

राशि (अंश)	मकर (13:00:16)	विवाह, पत्नी
नक्षत्र (पद)	श्रवण (1)	यौन–इच्छा
कारक	मात्रि	इत्र, सुगंध, फूल
बल		संगीत, नृत्य, नाटक
स्थान	मित्र राशि में	विलासितापूर्ण वस्तुएँ

क्या है शुक्र?

कारकत्व– कला, सुख–सुविधा, बिना अपने परिश्रम के आसानी से प्राप्त धन, प्रेम, स्नेह, सौन्दर्य और यौन संबंध।

पारम्परिक रूप से शुक्र जीवन में सौहार्द, स्नेह और संबंधों की आवश्यकता को दर्शाता है। हालांकि, अधिक मौलिक स्तर पर, शुक्र का संबंध व्यक्ति को आकर्षित और घृणित करने वाली वस्तुओं से तथा इन प्रभावों के प्रति व्यक्ति की प्रतिक्रिया से है। तुलना करना इसमें शामिल एक प्रक्रिया है, जो यह निर्णय करने का प्रयास करती है, कि व्यक्ति की अपनी आवश्यकताओं के अनुसार क्या अच्छा या बुरा है। कभी–कभी, यह सहकारिता और साझाा करने के व्यवहार के परिणामस्वरूप होता है, क्योंकि अधिकांश लोग अकेला या अलोकप्रिय होने के बजाय दूसरों के साथ बंधे रहना पसन्द करते हैं। प्रेम के संदर्भ में, शुक्र प्रेम के प्रति व्यक्ति की प्रतिक्रिया को प्रकट करता है, जब उसे प्रेम की प्राप्ति होती है, बजाय इसके कि व्यक्ति स्वयं के प्रति प्रेम को भावनात्मक रूप से कैसे अभिव्यक्त करे। भावनात्मक अभिव्यक्ति का कार्य मंगल का है।

इस बात का ध्यान रखें कि शुक्र शायद ही कभी मुत में, बदले में बिना कोई उम्मीद किए कुछ देता है। इसलिए सौहार्दपूर्ण रिश्तों को आकर्षित करने की व्यक्ति की क्षमता शुक्र द्वारा अधिग्रहित राशि और भाव पर निर्भर करता है और विशेष रूप से शुक्र दृष्टि के माध्यम से जिन ग्रहों से संपर्क बनाता है उनसे। अन्य स्तरों पर, शुक्र के संविभाग के अन्तर्गत शारीरिक आकर्षण या प्रतिकर्षण के अतिरिक्त, सौन्दर्य, कला, सभी प्रकार के करीबी संबंध, आधुनिकता, स्वाद, रूचि, फैशन, स्त्री एवं स्त्रीयोचित कामुकता, शारीरिक कुशलता, कुटनीति, घमंड, मुद्रा विनिमय के सभी साधन एवं आसानी से प्राप्त धन शामिल हैं। व्यक्ति का मित्रवत व्यहार, कलात्मकता, उत्तम आचरण तथा स्नेहशील प्रकृति शुक्र के सकारात्मक प्रभाव को दर्शाते हैं, जबकि स्वार्थपूर्ण एवं अनुचित रूप से अत्यधिक रोमांटिक होना शुक्र के नकारात्मक प्रभाव के सूचक हैं।

उपाय क्या करें ?

(1) पत्नी का सम्मान करें, नारी जाति को सम्मान दें। (2) अपने शरीर की साफ–सफाई का ध्यान रखें – साफ–सुथरे कपड़े पहनें। (3) इत्र का प्रयोग करें। (4) गाय के दूध की खीर बनाकर लक्ष्मी जी को भोग लगायें और प्रसाद के रुप में बांटे (शुक्रवार को)। (5) श्री सूक्तम जी, कनकधारा स्रोत का पाठ करें। (6) संध्या समय गाय के देसी घी की ज्योति जलायें। (7) अपने घर के दक्षिण–पूर्व में गुलाबी रंग के पर्दे लगायें या पेंट करवायें। (8) दक्षिण–पूर्व में संध्या समय देसी घी की ज्योत जलायें। (9) गरीब कन्याओं की शादी में श्रृंगार का सामान दान करें। (10) अपने घर में केवड़ा, गुलाबजल का छिड़काव करें, गुलाब की पंखुड़ियां मंदिर में चढ़ायें। (11) मंदिर में रुई की बत्तीयां, मिट्टी के दीपक और देसी घी का दान करें।

शुक्र

(राजसी, वायुमय, ब्राह्मण)

ॐ द्रां द्रीं द्रौम सः शुक्राय नमः। (6000 बार)

हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्व भास्त्र प्रवक्तारं भर्गव प्रणामाम्यहम्।।

कुण्डली में क्या है शुक्र का फल?

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। शुक्र आपके जन्म लग्न से पंचम स्थान में मकर राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शनि से शुक्र की मित्रता है। सामान्यतः पंचमस्थ शुक्र अच्छे फल प्रदान करता है। धनेश तथा नवमेश शुक्र पंचम स्थान में आपके लिए शुभ फलप्रद रहेगा। शुक्र आपको कृपण, यशस्वी, विद्वान, परोपकारी तथा सुखी व्यक्ति बनाता है। आप स्वभाव से अभिमानी हो सकते हैं तथा मित्रों और परजिनों के साथ आपका व्यवहार कटु हो सकता है, आपके मित्रों की संख्या सीमित रहेगी तथा परिजनों के साथ आपके सम्बन्ध बिगड़ सकते हैं। आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा और कभी-कभी पेट सम्बन्धी बीमारियों तथा वात आदि रोगों से आपको कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि अच्छी रहेगी और शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान विज्ञान वर्ग के विषयों की ओर रहेगा तथा इनमें आप अच्छी सफलता भी प्राप्त करेंगे और इसके अतिरिक्त संगीत, गायन-वादन, पुरातत्व, नाट्य, चलचित्र आदि विद्याओं में भी आपकी रुचि रहेगी। पर्यटन का भी आपको शौक रहेगा।

आपकी धर्म में आस्था रहेगी किन्तु धार्मिक कर्मकाण्ड, तीर्थयात्रा आदि में आपका विश्वास कम हो सकता है और 25वें वर्ष में आपका भाग्य उदय हो सकता है। कुटुम्बियों के साथ आपके सम्बन्ध साधारण ही रहेंगे। आपका वैवाहिक जीवन सामान्यतः सुखी रहेगा। आपकी पत्नी लम्बे कद, गेहुँए वर्ण तथा मध्यम या कुछ कृष शारीरिक गठन वाली स्त्री हो सकती हैं। संगीत, कला, गायन आदि क्षेत्रों में उनकी रुचि रहेगी। आपके साथ उनका स्नेह व सामंजस्य रहेगा। आपका सन्तान सुख सामान्य रहेगा और आपकी प्रथम सन्तान पुत्री होना सम्भव है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप प्राध्यापक, लेखक, वैज्ञानिक, चिकित्सक, संगीतकार, कला मर्मज्ञ, पुरातत्ववेत्ता आदि बनकर धन अर्जित करेंगे तथा व्यापार में भी आपको लाभ उत्तम रहेगा। शुक्र अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से एकादश स्थान में कर्क राशि को देखता है, जिसके स्वामी चन्द्रमा से शुक्र की शत्रुता है। आपको आमदनी के एक से अधिक स्रोत प्राप्त होंगे तथा अर्थ संचय करने में आपको सफलता प्राप्त होगी।

शनि (वक्री)

(तामसी, वायुमय, चंडाल)

ॐ प्रां प्रीं प्रोम सः शनै नमः। (23000 बार)

नीलांजन समाभासं रवि पुत्र यमाग्रजम्।
छाया मार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

राशि (अंश)	मिथुन (08:12:33)	धैर्य
नक्षत्र (पद)	अरिद्रा (1)	मृत्यु, बुढ़ापा
कारक	अपत्या	पाप, आलस्य
बल		मुसीबत, गरीबी
स्थान	मित्र राशि में	नौकर, दासता, गुलामी

क्या है शनि?

कारकत्व- भय, दुख, बुढ़ापा, प्रतिबंध, अवसाद।

बृहस्पति के विस्तारवादी प्रकृति को संतुलन करने के लिए, शनि का ज्योतिषीय कार्य प्रतिबंधित करना है। सीमा और कठिनाई शनि के प्रमुख गुण हैं। एक व्यक्ति सदैव शनि द्वारा अधिग्रहित भाव के अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत गतिविधियों में सीमा व बंधनों का सामना करता है। यह प्रायः कष्टप्रद होता है, किन्तु व्यक्ति के विकास के लिए कोई भी भाग कम महत्वपूर्ण नहीं है, क्योंकि शनि बृहस्पति के प्रबंधनीय सीमाओं के भीतर ही आगे बढ़ने का आग्रह करता है।

कुण्डली में शनि की स्थिति दर्शाती है, कि व्यक्ति समाज में कहां और कैसे अपनी पहचान बनाना चाहता है। शनि का अन्य ग्रहों और भाव के साथ स्थापित दृष्टि संबंध व्यक्ति के रास्ते में आने वाली बाधाओं पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। ये आत्म-प्रवृत्त हो सकते हैं अथवा उन घटनाओं के बारे में हो सकते हैं, जो व्यक्ति के नियंत्रण से बाहर प्रतीत होते हैं। दोनों ही स्थितियों में, शनि सीखाता है कि वास्तविकता के साथ कठोर टकराव के माध्यम से तथा परिस्थितियों को सीमित करने के माध्यम से, व्यक्ति को अपनी महात्वाकांक्षाओं को प्राप्त करने से पहले अपने आप में क्या परिवर्तन करना चाहिए। चूंकि कुछ ही लोग बाधा, विलम्ब या कठिनाइयों को गरिमापूर्ण ढंग से स्वीकार करते हैं, इसलिए शनि को दुख व उदासी से भरे हुए दर्दनाक और यातनापूर्ण अनुभवों का कारण माना जाता है।

अपने सबसे रचनात्मक रूप में, शनि कठोर परिश्रम, आत्म-अनुशासन, धैर्य और परम्परा के गुणों की एक सच्ची समझ से पैदा हुए ज्ञान को प्रदान करता है। क्योंकि शनि व्यक्ति की दृढ़ता, लगन या सफलता का परीक्षण करता है, इसलिए वह दृढ़ता व धैर्य के साथ सकारात्मक रूप से जुड़ा होता है। किन्तु यदि शनि की उर्जा को उपेक्षित कर दिया जाए अथवा वह बहुत अधिक हावी हो जाए, तो व्यक्ति के आत्म-विश्वास को बाधित करके और उसके उद्देश्यों को विफल करके, यह दमनकारी भी हो सकता है। फिर वह कठिनाई, धीमापन, जड़ता और तनाव को जन्म देता है। शनि के नियम सभी नियमों और विनियमों, ब्रह्माण्ड के भौतिक नियमों, सरकार और सभी अधिकारी वर्ग, परिक्षाओं और शिक्षकों, आर्थिक मंदी, दर्शनशास्त्र, समय, अवसाद, अकेलापन, भय और उम्र बढ़ने की प्रकिया के बीच अन्य चीजों तक फैला हुआ है। शनि का सकारात्मक पक्ष तप, लगन, अनुशासन और विश्वसनीयता है, जबकि अवसाद, आत्मकरूणा और जटिल व्यवहार उसके नकारात्मक गुण हैं।

उपाय क्या करें ?

(1) अपने अधीनस्थ कर्मचारियों का सम्मान करें। (2) कौओं को खीर, दही, रोटी देते रहें। (3) अमावस्या को खीर बनाकर बांटें। (4) पीपल विशेषतया जो वीराने में पाये जाते हैं - उन्हे अमावस्या, संक्रान्ति और पूर्णिमा पर दूध और जल से सींचें। (5) मजदूरों के बच्चों को दूध पिलायें। (6) गरीबों को जूते का दान करें। (7) मां काली, भैरो जी और शनिदेव की उपासना करें। (8) हनुमान जी को शनिवार को सिन्दूर का चोला चढ़ायें। (9) उड़द की दाल, बैंगन आलू की सब्जी और रोटी गरीबों को बांटे। (10) काले गुलाब जामुन का दान शनिदेव के मंदिर के बाहर करें। (11) काले तिल, सूखा नारियल और शक्कर मिलाकर कीड़े-मकौड़ों को लगातार डालें। (12) पैरों की मालिश करते रहें। (13) घर में कबाड़, कचड़ा, रद्दी, पुराने कपड़े इकठ्ठे न होने दें।

शनि (वक्री)

(तामसी, वायुमय, चंडाल)

ॐ प्रां प्रीं प्रोम सः शनै नमः। (23000 बार)

नीलांजन समाभासं रवि पुत्र यमाग्रजम्।
छाया मार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

कुण्डली में क्या है शनि का फल?

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। शनि आपके जन्म लग्न से दशम स्थान में मिथुन राशि में स्थित है, जिसके स्वामी बुध से शनि की मित्रता है। सामान्यतः दशमस्थ शनि अच्छे फल प्रदान करता है। पंचमेश तथा षष्ठेश शनि दशम स्थान में आपके लिए उत्तम फलप्रद रहेगा। शनि आपको सुखी, अधिकार सम्पन्न, धैर्यवान, यशस्वी तथा कार्यकुशल व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव मिलनसार रहेगा। अपने मित्रों तथा परिजनों से आपको स्नेह रहेगा और मित्रों से आपको अपने व्यवसाय में कई प्रकार से सहायता भी प्राप्त होगी। आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा, किन्तु कभी-कभी आपको वात सम्बन्धी रोग हो सकते हैं। आपकी बुद्धि प्रखर रहेगी तथा शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, अर्थशास्त्र, विधि, इलेक्ट्रोनिक्स, भाषा, विज्ञान आदि विषयों में रहेगा, इसके अलावा ज्योतिष, खगोल विज्ञान आदि विषयों के अध्ययन में भी आपकी रुचि रहेगी। आपको पठन-पाठन का शौक रहेगा।

अपने पिता से आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं, जबकि सत्ता पक्ष से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपको सन्तान सुख कम ही प्राप्त हो पायेगा या आपकी सन्तान से आपका मतभेद रह सकता है। शत्रु आपको व्यावसायिक हानि पहुँचाने का प्रयत्न कर सकते हैं, परन्तु आप उनका दमन करने में समर्थ रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी और आप प्राध्यापक, वकील, मजिस्ट्रेट, तकनीकी अधिकारी, लेखक, अर्थ विशेषज्ञ आदि बनकर धन अर्जित करेंगे तथा व्यापार में आपको उत्तम लाभ रहेगा। यह शनि अपनी तृतीय पूर्ण दृष्टि से द्वादश स्थान में सिंह राशि को देखता है, जिसके स्वामी सूर्य से शनि की शत्रुता है। आपका खर्च बढ़ सकता है तथा आयात-निर्यात के व्यापार में आपको विशेष लाभ प्राप्त होने की सम्भावना नहीं है। शनि की सप्तम पूर्ण दृष्टि चतुर्थ स्थान में धनु राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी गुरु से शनि के सम्बन्ध सम हैं। अपनी माता से आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। आपको ज़मीन, मकान एवं वाहन आदि के सुख प्राप्ति में विलम्ब या बाधाएँ आ सकती हैं। शनि अपनी दशम पूर्ण दृष्टि से सप्तम स्थान में मीन राशि को देखता है, जिसके स्वामी गुरु से शनि के सम्बन्ध सम हैं। आपका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं बीतेगा। आपकी पत्नी का स्वभाव तेज़ हो सकता है और अपनी पत्नी से आपके वैचारिक मतभेद रहने से आप दोनों पति-पत्नी के बीच आपसी सामंजस्य नहीं बन पायेगा।

राहु

(ड्रैगन का सिर, शीर्ष, आरोही नोड)

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः। (40 दिन में 18000 बार)

अर्थकायं महावीर्य चंद्रादित्य चिमर्दनम्।
सिंहिकाग र्भसंभूतं राहूं प्रणामाम्यहम्।।

राशि (अंश)	धनु (05:10:35)	बुरी आदतें
नक्षत्र (पद)	मूला (2)	विधवा
कारक		अनैतिक संबंध
बल		झूठ
स्थान	सम राशि में	अनुसंधान

क्या है राहु?

कारकत्व– संरक्षण, सामाजिक स्थिति, सफलता और दादा।

पहले से छठी राशि में स्थित राहु उत्तम फल प्रदान करता है। जीवन में प्रसन्नता और शक्तिशाली स्थिति के लिए राहु केन्द्र और त्रिकोण भाव में बहुत उत्तम होता है।

उपाय क्या करें ?

(1) मां सरस्वती की उपासना करें। (2) ससुराल में रिश्ते बनाकर रखें। चोटी के स्थान पर कुछ बाल कभी न कटवायें। (3) किसी गरीब कन्या का कन्यादान करें और उनकी शादी में यथासंभव मदद करें। (4) तम्बाकू, सिगरेट कभी न छुयें। (5) मछली कभी न खायें। (6) संध्या समय कभी शराब न पीयें। (7) भगवान शिव पर गन्ने के रस का अभिषेक करें। (8) भगवान शिव पर चंदन के पाउडर से लेप करें, चन्दन का इत्र लगायें। (9) पंचमी का व्रत करें, नागों की पूजा करें। (10) मछलियों को जौ के आटे की गोलियां डालें। (11) पवित्र सरोवर या नदी में स्नान करते रहें। (12) चांदी के गिलास में दूध पियें। (13) पक्षियों को दूध में जौ भिगोकर सुबह डालें। (14) वजन के बराबर अनाज गरीबों में बांटें। (15) हाथी को गन्ना खिलायें।

राहु

(ड्रैगन का सिर, शीर्ष, आरोही नोड)

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः। (40 दिन में 18000 बार)

अर्थकायं महावीर्य चंद्रादित्य चिमर्दनम्।
सिंहिकाग र्भसंभूतं राहूं प्रणामाम्यहम्।।

कुण्डली में क्या है राहु का फल?

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। राहु आपके जन्म लग्न से चतुर्थ स्थान में धनु राशि में स्थित है, जो राहु की नीच राशि है। सामान्यतः चतुर्थस्थ राहु अच्छे फल नहीं देता है, चतुर्थ स्थान में धनु राशि (नीच राशि) का राहु आपको अशुभ फल देगा। राहु आपको उद्दण्ड, आलसी, प्रवासी तथा चिन्ताग्रस्त व्यक्ति बना सकता है तथा माता-पिता के लिए कष्ट कारक हो सकता है। आप अभिमानी स्वभाव के व्यक्ति हो सकते हैं तथा क्रोधित होने पर आप हिंसक भी हो सकते हैं। समाज सेवा तथा सार्वजनिक कार्यों में आपकी रुचि कम हो सकती है तथा परिजनों एवं मित्रों से आपके सम्बन्धों में कटुता आ सकती है। आपका स्वास्थ्य अस्थिर रहेगा तथा रक्त-पित्त, वात आदि रोगों से आपको कष्ट हो सकता है। इसके अतिरिक्त आपको क्षय रोग का भी खतरा हो सकता है और शस्त्र या विष प्रयोग से अपघात हो सकता है।

आपकी बुद्धि अधिक तीव्र नहीं रहेगी तथा शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, इतिहास, पुरातत्व, विधि, भाषा, दर्शन आदि विषयों में रहेगा और इसके अतिरिक्त ज्योतिष, तंत्र-मंत्र आदि गूढ़ विषयों में भी आपकी रुचि होगी। आप पर्यटन में रुचि रखेंगे तथा प्रवास भी कर सकते हैं। माता का सुख आपको कम ही प्राप्त हो पायेगा और यह राहु कभी-कभी सौतेली माता का भी योग बनाता है। आपकी आर्थिक स्थिति औसत रहेगी और आप शिक्षक, लेखक, वकील, इतिहासकार, भाषाविद्, तकनीकी विशेषज्ञ आदि बनकर धन अर्जित करेंगे, किन्तु व्यापार में उतार-चढ़ाव रहने से लाभ कम हो सकता है तथा राजनीति के क्षेत्र में आपके लिए सफलता की सम्भावना कम ही है। ज़मीन, मकान एवं वाहन आदि की प्राप्ति के लिए आपको कड़ी मेहनत की आवश्यकता पड़ सकती है।

राहु की पँचम् पूर्ण दृष्टि अष्टम् स्थान में मेष राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी मंगल की राहु से शत्रुता है। आपका आयु पक्ष मध्यम रहेगा कभी-कभी आपको आकस्मिक हानि भी हो सकती है। राहु अपनी सप्तम् पूर्ण दृष्टि से दशम् स्थान में मिथुन राशि को देखता है, जो राहु की उच्च राशि है। पिता से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे तथा सत्ता पक्ष से प्रतिकूल सम्बन्धों के चलतें आपको हानि उठानी पड़ सकती है। राहु की नवम् पूर्ण दृष्टि द्वादश स्थान में सिंह राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी सूर्य से राहु की शत्रुता है। आपका खर्च भार बढ़ सकता है तथा आयात-निर्यात के व्यापार से मिलने वाले लाभ में कमी हो सकती है।

केतु

(ड्रैगन की पूंछ, पार्श्वभाग/पूछांग, अवरोही नोड)

ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः। (40 दिन में 17000 बार)

केतु कृणवन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे।
समुशद्भिर जायथाः।।

राशि (अंश)	मिथुन (05:10:35)	**मोक्ष**
नक्षत्र (पद)	मृगशिर (4)	**दासता**
कारक		**षड़यंत्र**
बल		**दण्ड, कारावास**
स्थान	सम राशि में	**बुरी आत्मा**

क्या है केतु?

कारकत्व- आध्यात्मिकता के प्रति झुकाव, अनासक्ति

केतु सातवीं से बारहवीं राशि में उत्तम फल प्रदान करता है। कुण्डली में सुव्यवस्थित केतु अपने वरिष्ठों का विश्वास हासिल करने तथा विदेश से लाभ प्राप्ति का सूचक है। जबकि पीड़ित केतु अकथनीय चिन्ताओं व परेशानियों का कारक है।

उपाय क्या करें ?

(1) गणेश जी की उपासना करें। (2) हर बुधवार को दूर्वा और लड्डू का भोग लगायें। (3) कुत्तों की सेवा करें। (4) सफेद तिल और शक्कर को सूर्योदय से पहले जीव-जन्तुओं के लिए दान करें। (5) बिस्तर पर कभी भी काली, नीली चादर न बिछायें। (6) गले में धागे, ताबीज, गण्डे धारण न करें। (7) दूध और केसर का सेवन करें। (8) धर्मस्थान पर झण्डा दान करें। (9) किसी गरीब कन्या की शादी में पलंग का दान करें। (10) वृद्धाश्रम में मीठा बांटें। (11) गुप्त दान करते रहें। (12) खट्टी-मीठी गोलियां बांटे।

केतु

(ड्रैगन की पूंछ, पार्श्वभाग/पुछांग, अवरोही नोड)

ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः। (40 दिन में 17000 बार)

केतु कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे।
समुषद्भिरजायथाः।।

कुण्डली में क्या है केतु का फल?

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। केतु आपके जन्म लग्न से दशम् स्थान में मिथुन राशि में स्थित है, जो केतु की नीच राशि है। सामान्यतः दशम् स्थान में केतु शुभ फल देता है, दशम् स्थान में मिथुन राशि (नीच राशि) का केतु आपको मिश्रित फल प्रदान करेगा। केतु आपको अभिमानी, बुद्धिमान, शास्त्रज्ञाता, प्रवासी, वाहनों से कष्ट पाने वाला, सम्पन्न तथा विजयी पुरुष बनाता है। आप मिलनसार स्वभाव के व्यक्ति रहेंगे, किन्तु आपमें कुछ हठी या दुराग्रही प्रवृत्ति हो सकती हैं, जिसके कारण कभी-कभी आपको हानि भी उठानी पड़ सकती है। परिजनों तथा मित्रों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे, किन्तु मित्रों का सहयोग आपको कम ही प्राप्त हो पायेगा। कार्य पूर्ति में अनपेक्षित कारणों से विलम्ब हो सकता है। समाजसेवा तथा सार्वजनिक कार्यों में आपका योगदान सीमित हो सकता है। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, किन्तु कभी-कभी वात आदि रोगों से आपको कष्ट हो सकता है, इसके अलावा वाहन से दुर्घटना होने का खतरा भी हो सकता है।

आपकी बुद्धि अच्छी रहेगी तथा शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, भाषा, इलेक्ट्रॉनिक्स, अर्थशास्त्र, दर्शन, विधि आदि विषयों में रहेगा, साथ ही ज्योतिष, तंत्र-मंत्र आदि गूढ़ विषयों के ग्रन्थों के अध्ययन में आपकी रुचि होगी। आपको पर्यटन का शौक रहेगा, किन्तु यात्रा में आपको कष्ट तथा धन हानि का खतरा हो सकता है, आपका प्रवास लाभदायक नहीं रहेगा। पिता का सुख आपको कम ही प्राप्त होगा या उनसे आपके अच्छे सम्बन्ध नहीं रहेंगे, जबकि सत्ता पक्ष से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी और आप अर्थशास्त्री, वकील, न्यायाधीश, प्राध्यापक, लेखक, भाषाविद्, तकनीकी विशेषज्ञ, बैंक, बीमा अधिकारी आदि बनकर धनार्जन करेंगे। केतु से नौकरी में आपको सम्मानजनक स्थान प्राप्त होगा, किन्तु कुछ समय बाद आपको पद छोड़ना भी पड़ सकता है। व्यापार में विशेष लाभ सम्भावित नहीं है, जबकि राजनीति में आपको सफलता कम ही मिल पायेगी।

केतु अपनी पंचम् पूर्ण दृष्टि से द्वितीय स्थान में तुला राशि को देखता है, जिसके स्वामी शुक्र से केतु के सम्बन्ध सम हैं। धीरे-धीरे अर्थसंचय में आपको सफलता मिलेगी तथा कुटुम्बियों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। केतु की सप्तम् पूर्ण दृष्टि चतुर्थ स्थान में धनु राशि पर पड़ती है, जो केतु की उच्च राशि है। माता से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे और ज़मीन, मकान एवं वाहन आदि भौतिक सुख साधनों की प्राप्ति होगी। केतु अपनी नवम् पूर्ण दृष्टि से षष्ठम् स्थान में कुम्भ राशि को देखता है, जिसके स्वामी शनि से केतु के सम्बन्ध सम हैं। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। शत्रुओं द्वारा आपकी मानहानि के लिए रचे गए कुचक्र विफल रहेंगे तथा शत्रुओं को परास्त करने में आप सफल रहेंगे।

वाह्य व्यक्तित्व

वैदिक ज्योतिष में आपका नक्षत्र, लग्न और लग्न स्वामी एक दिव्य मानचित्र बनाते हैं, जो आपके बाहरी व्यक्तित्व के बारे में हमारी समझ का मार्गदर्शन करता है। ये दिव्य संकेत न केवल आपके मार्ग को रोशन करते हैं बल्कि उन मूल विशेषताओं को भी दर्शाते हैं जो दुनिया के साथ आपकी पारस्परिक क्रिया को आकार देते हैं। प्राचीन ज्ञान पर आधारित इस भविष्यवाणी का उद्देश्य व्यावहारिक रहस्योद्घाटन करना और आपकी आत्म–जागरूकता को बढ़ाना, आपके जीवन की यात्रा को गहन तरीकों से समृद्ध करना है।

हस्ता (2) अधिपति –

आपकी जन्मकुण्डली में जन्म नक्षत्र हस्त है, आप लंबे, हृष्ट–पुष्ट शरीर वाले एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाले होंगे। साथ ही आपके कंधे पर या उसके आस–पास कोई चोट का निशान हो सकता है।

लग्न – कन्या

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है, आप छोटे कद वाले तथा संतुलित शारीरिक बनावट वाले व्यक्ति होंगे। आपका व्यक्तित्व सामान्य होगा। आप सुंदर एवं आकर्षक होंगे। आपके घने काले बाल तथा गहरी उदास और शर्मीली आंखें होंगी। आपका चेहरा गोल तथा आप तेजी से चलने वाले व्यक्ति होंगे। आप कभी–कभी शांत रहेंगे एवं साफ–सुथरे व्यक्ति होंगे तथा फूल–पत्तियों की बनावट वाले कपड़े पहनना पसंद करेंगे। आप गहरे लाल वर्ण या पीले वर्ण वाले व्यक्ति हो सकते हैं।

लग्नेश – बुध (अस्त), स्व नक्षत्र, नक्षत्र–ज्येष्ठा

आपकी कुण्डली में बुध लग्नाधिपति है, आपका शरीर दुबला और वाणी स्पष्ट होगी। आप मौज–मस्ती करने वाले तथा द्विअर्थी भाषा का प्रयोग करने वाले व्यक्ति हो सकते हैं। आप दूसरों की आवाज की नकल करने वाले व्यक्ति हो सकते हैं तथा आपकी नसें उभरी हुई हो सकती हैं। सांवले वर्ण के व्यक्ति हो सकते हैं।

आंतरिक व्यक्तित्व

आपके वैदिक कुण्डली में आपके लग्न, लग्नेष और विभिन्न भावाधिपतियों की स्थिति आपके आंतरिक व्यक्तित्व को बहुत प्रभावित करती है। ये मानसिक प्रवृत्तियों, संभावित चुनौतियों और सफलता के क्षेत्रों का संकेत देते हैं। इन पर चिंतन करने से आपके निर्णयों को निर्देशित करने और जीवन की जटिलताओं से निपटने में मदद मिल सकती है, यह आपके भाग्य को आकार देने की आपकी स्वतंत्र इच्छा एवं शक्ति को ध्यान में रखता है।

लग्न – कन्या

सकारात्मक : आप बहुत ज्यादा व्यवस्थित, विश्लेषण करने वाले, काफी सतर्क, दूसरों की कमियां ढूढ़ने वाले, साहसिक काम करने वाले तथा कर्मठ इंसान होंगे।

नकारात्मक : आप आलोचनात्मक, थोड़े-बहुत झूठ बोलने वाले तथा निर्णय लेने के मामले में कमजोर व्यक्ति हो सकते हैं। आप आसानी से धोखा खाने वाले तथा गुमराह होने वाले व्यक्ति हो सकते हैं। आपका पहनावा बहुत उत्तम नहीं हो सकता है। आप अपने विचारों से दूसरों से बदला लेने वाले हो सकते हैं, लेकिन सतही तौर पर ऐसा कोई भी कार्य करने में आप सक्षम नहीं हो सकते हैं। आमतौर पर आप दूसरों के साथ बुरा नहीं कर सकते। आपके विचारों एवं कार्यों में आमतौर पर विरोधाभाष हो सकता है।

लग्नेश – बुध (अस्त), स्व नक्षत्र, नक्षत्र–ज्येष्ठा

सकारात्मक : आप व्यापार में बहुत ज्यादा चतुर, हर तरह की जानकारी एवं सूझ-बूझ रखने वाले, साहसी, चतुर, खुशहाल एवं आनंदित व्यक्ति होंगे।

नकारात्मक : आप औरतों के शौकीन हो सकते हैं। आप मतलबी और ज्यादा चालाक हो सकते हैं। आपके अंदर छुपाने की आदत हो सकती है तथा आप निम्न तबके के लोगों की संगति में रह सकते हैं।

आंतरिक व्यक्तित्व के मुख्य बिन्दु

(1) बुध आपकी कुण्डली में लग्नेश हैं, और भाव संख्या 3 में स्थित है। आप बहुत बहादुर, शूरवीर, साहसिक, सक्षम और सुयोग्य व्यक्ति होंगे।

(2) शनि आपकी कुण्डली में षष्टेश हैं, और भाव संख्या 10 में स्थित है। आप नास्तिक या संदेहवादी व्यक्ति हो सकते हैं तथा दूसरा धर्म अपना सकते हैं।

(3) मंगल आपकी कुण्डली में अष्टमेश हैं, और भाव संख्या 8 में स्थित है। आप जुआ/सट्टा खेलने वाले व्यक्ति हो सकते हैं।

(4) शुक्र आपकी कुण्डली में नवमेश हैं, और भाव संख्या 5 में स्थित है। आप दूसरों को शिक्षित करने के लिए उनकी मदद कर सकते हैं।

(5) बुध आपकी कुण्डली में दशमेश हैं, और भाव संख्या 3 में स्थित है। आप महत्वाकांक्षी, जोखिम भरे कार्य करने वाले तथा हर तरह से सक्षम व्यक्ति होंगे।

स्वास्थ्य अवलोकन

आपका स्वास्थ्य एक महत्वपूर्ण स्तंभ है जो आपके जीवन की यात्रा का समर्थन करता है, और वैदिक ज्योतिष के माध्यम से, विशेष रूप से आपके लग्न और नक्षत्रों के अध्ययन से, हम आपके स्वास्थ्य संबंधी प्रवृत्तियों की गहन समझ प्राप्त कर सकते हैं। ये भविष्यवाणियाँ संभावित स्वास्थ्य–संबंधी मुद्दों और आपके स्वास्थ्य को बनाए रखने या सुधारने के तरीकों के बारे में मार्गदर्शन प्रदान करती हैं। यह जानकर कि आगे क्या होने वाला है, आप आवश्यक परिवर्तन करने, निवारक उपाय करने और स्वस्थ आदतें स्थापित करने के लिए बेहतर ढंग से तैयार रह सकते हैं। इसलिए, ये स्वास्थ्य भविष्यवाणियाँ एक रोडमैप के रूप में काम करती हैं, जो आपको अधिक संतुलित, सक्रिय और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक जीवन जीने में सक्षम बनाती हैं।

हस्ता (2) अधिपति – चन्द्रमा

हस्त नक्षत्र का संबंध उंगलियों से है।

लग्न – कन्या

कन्या लग्न का संबंध शरीर के आंत, उदर के नीचले भाग तथा रीढ़ की हड्डी के नीचले भाग से होता है।

आपकी आयु बहुत लंबी होगी तथा आप किसी भी तरह की बीमारी एवं स्वास्थ्य संबंधित समस्या से दूर रहेंगे।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए क्या उपाय करें ?

मनुष्य के जीवन में सुख-दुख का आना जाना तो सदैव लगा रहता है परन्तु सामान्यतः देखा जाए तो उसे सबसे अधिक कष्ट उसके शारीरिक अस्वस्थता के समय ही होता है। यदि शारीरिक रूप से व्यक्ति अस्वस्थ है तो उसके आस-पास का वातावरण कितना ही सुखमय क्यों न हो उससे उसको किसी प्रकार के सुख की अनुभूति नहीं होती। कहा जाता है कि जान है तो जहान है। वास्तविकता भी यही है कि व्यक्ति यदि स्वस्थ्य रहेगा तभी उसका जीवन जीवंत माना जाएगा, तभी उसे जीवन के अन्य सुखों का भरपूर आनन्द प्राप्त होगा अन्यथा जीवन के किसी भी प्रकार के सुख से वह वंचित रह जाएगा। इसलिए स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना और उसके लिए सभी प्रकार के चिकित्सीय व आवश्यक होने पर ज्योतिषिय उपाय आदि भी करना चाहिए। चिकित्सा के बिना स्वास्थ्य का ठीक हो पाना संभव नहीं हो सकता, परन्तु कई बार ऐसा होता है कि चिकित्सीय उपचार का व्यक्ति के रोग पर कोई असर ही नहीं होता ऐसी स्थिति में यदि ग्रहों की दशा को देखकर उपचार के साथ-साथ ज्योतिषिय उपाय भी किया जाय तो संभवतः रोग से निजात शीघ्रता से पाया जा सके।

(1) खुले आकाश में सूर्य को साक्षी मानते हुए हनुमान चालीसा, बजरंग बाण, हनुमानष्टक का पाठ करने से दुर्घटना का भय खत्म होता है।

(2) सूर्य के सामने गायत्री मंत्र या अपने धर्म के अनुसार मूल मंत्र का जाप करने से आयु में वृद्धि होती है - रोगों से छुटकारा मिलता है।

(3) हर अमावस्या, संक्रान्ति या पूर्णिमा को गरीबों को अन्न का दान करें या खाना खिलायें।

(4) अनाथालय, कोढ़ी आश्रम, अंधविद्यालय और पशुओं के अस्पताल में दवाईयों का दान करें।

(5) सिक्के सिरहाने रखकर सुबह गरीबों को बांटें।

(6) कभी भी उत्तर की तरफ सिर और पूर्व की तरफ पैर करके न सोयें।

(7) कपूर की टिकिया अपने पास रखें और शाम को जला दें - इससे नकारात्मक उर्जा खत्म होगी।

(8) बुर्जुगों से आर्शीवाद लेते रहिए, विशेषतया सफेद बालों वाले बुजुर्गो से।

(9) आपके सोने वाले कमरे में नाकारात्मक उर्जा ना रहे - इसके लिए - पानी में सिरका (सफेद) और नमक डालकर रखें। सुबह उसे नाली में डाल दें - आपको तरो-ताजगी महसूस होती रहेगी।

शिक्षा, बुद्धि और पढ़ाई

आगामी वैदिक ज्योतिष भविष्यवाणी, आपके लग्न, लग्नेश और विभिन्न भावेषों की स्थिति के आधार पर आपके शैक्षिक पथ और बौद्धिक क्षमताओं में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करेगी। यह प्राचीन ज्ञान आपकी अंतर्निहित शक्तियों, संभावित चुनौतियों और आपके अधिगम की दिशा को समझने में आपकी मदद कर सकता है। आपके भविष्य को आकार देने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए, इस भविष्यवाणी की सराहना करना आपकी क्षमता को उजागर करने तथा आपकी शिक्षा एवं बौद्धिक गतिविधियों में रणनीतिक विकल्प बनाने की कुंजी हो सकती है।

लग्न – कन्या

आप सही मायने में बुद्धिमान होंगे एवं आप स्नातक के बाद तक की शिक्षा अच्छी तरह से प्राप्त करेंगे।

लग्नेश – बुध (अस्त), स्व नक्षत्र, नक्षत्र–ज्येष्ठा

सकारात्मक : आप बहुत बुद्धिमान, उत्तम शिक्षा प्राप्त करने वाले, चतुर, हंसमुख तथा हमेशा सीखने वाले व्यक्ति होंगे।

नकारात्मक : आप प्रेम प्रसंगों के कारण रास्ते से भटक सकते हैं। आप बहुत ही मतलबी, समाज के नियमों को ना मानने वाले तथा निम्न तबके के लोगों के साथ रहने वाले व्यक्ति हो सकते हैं।

शिक्षा, बुद्धि और पढ़ाई के मुख्य बिन्दु

(1) बुध आपकी कुण्डली में लग्नेश हैं, और भाव संख्या 3 में स्थित है। आप सकारात्मक सोच वाले होंगे, आपकी शिक्षा सफलतापूर्वक पूर्ण होगी। लेखन या अध्ययन से संबंधित क्षेत्रों में आपकी उन्नति होगी। कला के क्षेत्र में भी आप सफल होंगे। रहस्यात्मक और गूढ़ विषयों में आपकी अच्छी पकड़ होगी।

(2) शुक्र आपकी कुण्डली में द्वितियेश हैं, और भाव संख्या 5 में स्थित है। आप जिस क्षेत्र में शिक्षा या कुशलता अर्जित करेंगे उसी क्षेत्र से आप अपना जीविकोपार्जन करेंगे।

(3) गुरू आपकी कुण्डली में चतुर्थेश हैं, और भाव संख्या 5 में स्थित है। आप स्नातकोत्तर की शिक्षा सफलतापूर्वक प्राप्त करेंगे एवं उपहार तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। अनुसंधान से संबंधित क्षेत्र में आप उन्नति करेंगे।

(4) गुरू आपकी कुण्डली में सप्तमेश हैं, और भाव संख्या 5 में स्थित है। आपके एक से अधिक प्रेम––प्रसंग हो सकते हैं तथा आप पढ़ाई––लिखाई की अनदेखी या उपेक्षा कर सकते हैं।

(5) शुक्र आपकी कुण्डली में नवमेश हैं, और भाव संख्या 5 में स्थित है। आप उंचे तबके की विदेशी डिग्री हासिल करेंगे तथा आप अनुसंधान के प्रति दिलचस्पी रखेंगे। आप पुरातत्व विज्ञान या इतिहास में भी रुचि रखेंगे। इसके साथ ही तांत्रिक या रहस्यमय विषयों के ज्ञान के प्रति भी आपकी दिलचस्पी होगी।

शिक्षा में सुधार, और पढ़ाई में उन्नति के लिए क्या उपाय करें ?

प्राचीन समय में शिक्षा का स्वरूप वर्तमान शिक्षा से पूर्णतया भिन्न था। तब शिक्षा को अर्थोपार्जन का माध्यम न मानकर ज्ञान व मोक्ष प्राप्ति का माध्यम माना जाता था। इसलिए उस समय की शिक्षा में इस प्रकार की प्रतियोगिता नहीं थी जो कि वर्तमान समय की शिक्षा में दृष्टिगोचर होती है। इस वैज्ञानिक युग में जिस गति से विकास हुआ उसी गति से अर्थोपार्जन के लिए अनेकोंनेक स्रोत खुलते चले गए एवं इस विकास की गति को अत्यधिक गति प्रदान के लिए शिक्षा का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता चला गया। आज स्थिति यह है कि यदि कोई अशिक्षित रह जाता है तो उसे निश्चित तौर पर इस विकसित युग में अविकसित होकर ही जीना पड़ेगा। शिक्षा प्राप्त करना भी अब उतना आसान नहीं है। इस क्षेत्र में प्रतियोगिता ही एक मात्र बाधा नहीं है बल्कि अन्य अनेक बाधाएं भी हैं।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली तो ऐसी हो गई है कि उससे धनोपार्जन का माध्यम बनाने के लिए पहले उसमें धन का निवेश करना भी आवश्यक है। ऐसी बाधाएं तो सामाजिक तौर पर सबको पार करनी पड़ती हैं, परन्तु जीवन में व्यक्तिगत रूप से भी कई बार शिक्षा के मार्ग में बाधाएं आने लगती हैं। इन बाधाओं के कारण व्यक्ति का भविष्य बाधित होता है, उसका विकास बाधित होता है या संक्षिप्त में कहा जाए तो उसके जीवन का प्रत्येक क्षेत्र प्रभावित होता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि वह या उसकी संतान उच्च से उच्च शिक्षा ग्रहण कर सके, किन्तु इन बाधाओं के कारण सबके लिए ऐसा संभव नहीं होता। ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से व्यक्ति के शिक्षा में आने वाली बाधाओं में भी ग्रहों का प्रभाव समाहित होता है। ग्रहों के प्रतिकूल होने की दशा में शिक्षा बाधित होती है। इसलिए इन बाधाओं से सचेत रहने के लिए इसके बारे में जानना भी आवश्यक है।

(1) मां सरस्वती की पूजा करने के साथ अपनी जीभ पर केसर से उँ लिखें और उँ का उच्चारण करें।

(2) पढ़ते समय आपका मुंह हमेशा उत्तर–पूर्व में हों और पीठ दक्षिण या दक्षिण– पश्चिम की तरफ।

(3) माथे पर बिन्दी लगाने के स्थान पर दूध और हल्दी से तिलक लगायें और इसी स्थान, जिसको आज्ञा चक्र बोलते हैं, चन्दन का लेप करके सायें – बुद्धि, विवेक का विकास होगा, शिक्षा में रुचि बनी रहेगी।

(4) अनाथालयों में बच्चों के लिए कॉपी, किताब का प्रबंध करें।

(5) शुक्रवार को लाल फल बांटने से भी शिक्षा बाधा दूर होती है।

(6) बृहस्पतिवार के दिन चार लड्डू हाथ लगाकर बरगद और पीपल के नीचे जीव–जन्तुओं को डालें।

(7) अन्धेरे रास्ते में रोशनी का प्रबंध करें।

(8) मछलियों को जौ के आटे में गुड़ डालकर रोटी बनाकर या गोलियां बनाकर डालें।

यात्रा और कारोबार

आगामी वैदिक ज्योतिष भविष्यवाणी आपकी यात्रा एवं व्यावसायिक प्रयासों से संबंधित संभावनाओं पर प्रकाश डालेगी। आपके लग्न और विभिन्न भावाधिपतियों की स्थिति पर विचार करके, हम आपके जीवन के इन क्षेत्रों में संभावित अवसरों, चुनौतियों और रुझानों का पता लगा सकते हैं। इन ज्योतिषीय अंतर्दृष्टि को समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह यात्रा और व्यवसाय में आपके निर्णय लेने में मार्गदर्शन कर सकता है, जिससे आपको अधिक आत्मविश्वास और रणनीतिक दूरदर्शिता के साथ अपना पथ प्रशस्त करने में सहायता मिलेगी।

लग्न – कन्या

आपको अपने व्यवसाय के क्षेत्र में उच्च पद एवं जिम्मेदारियों की प्राप्ति होगी। आप स्वतंत्र रुप से काम करना पसंद करेंगे तथा आप बहुत अधिक यात्रायें नहीं करेंगे।

यात्रा और कारोबार के मुख्य बिन्दु

(1) बुध आपकी कुण्डली में लग्नेश हैं, और भाव संख्या 3 में स्थित है। आपका व्यवसाय बहुत अच्छा होगा तथा आपको घूमने--फिरने के लिए कई अवसर प्राप्त होंगे।

(2) शुक्र आपकी कुण्डली में द्वितियेश हैं, और भाव संख्या 5 में स्थित है। आप आजीविका के लिए उपयुक्त शिक्षा या कुशलता प्राप्त करेंगे।

(3) गुरू आपकी कुण्डली में चतुर्थेश हैं, और भाव संख्या 5 में स्थित है। आप बहुत मशहूर होंगें।

(4) शनि आपकी कुण्डली में पंचमेश हैं, और भाव संख्या 10 में स्थित है। आप अपने रोजगार या व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति करेंगे।

(5) शनि आपकी कुण्डली में षष्ठेश हैं, और भाव संख्या 10 में स्थित है। आपको अपने रोजगार के क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति कठिनाई से हो सकती है। आपको किसी के मार्गदर्शन की आवश्यकता होगी।

(6) बुध आपकी कुण्डली में दशमेश हैं, और भाव संख्या 3 में स्थित है। आप महत्वाकांक्षी होंगे एवं अपनी योग्यता के आधार पर अपने रोजगार या पेशे में आगे बढ़ेंगे।

(7) चन्द्रमा आपकी कुण्डली में एकादशेश हैं, और भाव संख्या 1 में स्थित है। बिना किसी अधिक परेशानी या कठिनाई के आप अपने व्यवसाय में सफलता प्राप्त करेंगे।

कारोबार/ब्यापार नौकरी की समस्यायें दूर करने के लिए क्या उपाय करें ?

भौतिक संसार में रहते हुए मनुष्य की अनेक आवश्यकताओं का जन्म होता है। जिन्हें पूरा करने के लिए उसे विभिन्न प्रकार के कार्य व व्यवसाय को अपनाना पड़ता है। सभी प्रकार की जरूरतों को पूर्ण करने हेतु मनुष्य का आर्थिक रूप से सुदृढ़ होना आवश्यक है। जबकि वर्तमान समय में इस तरह की परिस्थिति व प्रतिस्पर्द्धा का माहौल बन गया है कि सभी एक दूसरे से आर्थिक व सामाजिक स्तर पर आगे निकलना चाहते हैं। ऐसी परिस्थिति में कोई बहुत आगे निकल जाता है तथा कोई इतना पिछे रह जाता है कि उसके लिए अपनी आम जरूरतों को पूरा कर पाना भी कठिन होने लगता है। जीवन का प्रत्येक पक्ष किसी न किसी रूप से आर्थिक पक्ष से अवश्य जुड़ा हुआ है। ऐसे में व्यवसाय, नौकरी आदि में किसी भी प्रकार की बाधा आना जीवन में कठिनाई उत्पन्न कर देता है।

ये बाधाएं किसी भी प्रकार की हो सकती हैं जैसे किसी प्रकार की कोई व्यापारिक दुर्घटना, हानि, ऋण में वृद्धि, शत्रुओं द्वारा किया षडयंत्र आदि। यद्यपि बाह्य तौर पर इन्हें परिस्थितिजन्य माना जाता है, परन्तु ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इस प्रकार की बाधाएं ग्रहों के प्रतिकूल प्रभावों के कारण उत्पन्न होती हैं। यदि व्यक्ति अपनी जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों के प्रतिकूल प्रभावों को समय रहते जान कर उसके लिए उपाय करे तो संभवतः वह इन बाधाओं को दूर करने में सफल भी हो सकता है।

(1) जौ का भूना आटा, नारियल का कसा हुआ बादाम, छुहारा (कसा हुआ) देसी शक्कर मिलाकर रोजाना पेड़ों के नीचे डालें जहां काले कीड़े-मकौड़े हों।
(2) शहद और काले तिल पीपल के नीचे शनिवार और मंगलवार को डालें।
(3) वृद्धा आश्रम में जाकर फल बांटें।
(4) गरीब कन्याओं की यथासंभव सहायता करें। बुध को मजबूती मिलेगी। व्यापार में बरकत बनी रहेगी।
(5) पिंजरों में बन्द पक्षियों को आजाद करायें।
(6) सरकारी नौकरी की बाधा दूर करने के लिए सूर्यदेव को केसर युक्त जल चढ़ायें और आदित्य हृदय स्रोत का पाठ करें।
(7) अपनी पत्नी को श्रृंगार का सामान देते रहें।

आर्थीक स्थिति

जीवन में अपनी वित्तीय संभावनाओं और चुनौतियों को समझना महत्वपूर्ण है, और वैदिक ज्योतिष इस क्षेत्र में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है। आपके लग्न और विभिन्न भावाधिपतियों की स्थिति के विश्लेषण के माध्यम से, हम धन–संपदा के संभावित मार्गों को चित्रित कर सकते हैं, बाधाओं की पहचान कर सकते हैं और उपचारात्मक उपाय सुझा सकते हैं। इस ज्ञान को अपनाने से आप अधिक जानकारीपूर्ण वित्तीय निर्णय लेने में सक्षम हो सकते हैं, जिससे समृद्धि एवं सुरक्षा को बढ़ावा मिलेगा। यह याद रखना आवश्यक है कि ये भविष्यवाणियाँ केवल मार्गदर्शन के रूप में कार्य करती हैं, आपके स्वयं के कार्यों और विकल्पों का आपके वित्तीय भविष्य पर अंतिम प्रभाव पड़ता है।

लग्न – कन्या

आपकी आमदनी अच्छी होगी एवं सामान्यतः अचानक होगी। आपको अपने पिता से पैतृक संपत्ति की प्राप्ति नहीं होगी। आप अपनी मेहनत से कुछ जमीन–जायदाद बना सकते हैं, लेकिन पाप ग्रहों की दशा के दौरान उसे खो भी सकते हैं। आप कर्ज से दूर रहेंगे।

आर्थीक स्थिति के मुख्य बिन्दु

(1) शुक्र आपकी कुण्डली में द्वितियेश हैं, और भाव संख्या 5 में स्थित है। आप अपनी संतान के उपर अधिक खर्च करेंगे। आपको जुआ, घुड़दौर या लॉटरी से धन की प्राप्ति हो सकती है। आप अपनी संतान के लिए काफी धन––संपत्ति अर्जित कर सकते हैं।

(2) गुरू आपकी कुण्डली में चतुर्थेश हैं, और भाव संख्या 5 में स्थित है। आपको बहुत ही सौभाग्यशाली अवसरों की प्राप्ति होगी।

(3) शनि आपकी कुण्डली में पंचमेश हैं, और भाव संख्या 10 में स्थित है। आपकी आर्थिक उन्नति होगी। आप काफी प्रसिद्ध होंगे।

(4) शनि आपकी कुण्डली में षष्ठेश हैं, और भाव संख्या 10 में स्थित है। आप कोई भी रोजगार कर लें, उसमें आपको सफलता प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत की आवश्यकता पड़ सकती है।

(5) मंगल आपकी कुण्डली में अष्टमेश हैं, और भाव संख्या 8 में स्थित है। आपको अचानक से विरासत में अथवा किसी दूसरे माध्यम से धन की प्राप्ति हो सकती है। आप तुलनात्मक रुप से कम मेहनत कर ज्यादा धन अर्जित करने में माहिर हो सकते हैं। आप जुआ, सट्टा या घुड़दौर आदि में अपना हाथ आजमा सकते हैं।

(6) बुध आपकी कुण्डली में दशमेश हैं, और भाव संख्या 3 में स्थित है। आप अपनी योग्यता एवं कठिन मेहनत की बदौलत अपने लक्ष्यों को पूरा करने में सक्षम होंगे।

आर्थिक समस्याओं को दूर करने के लिए क्या उपाय करें ?

मनुष्य के गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के साथ ही असीमित आवश्यकताएं उत्पन्न होने लगती हैं। वह अपनी सभी प्रकार की आवश्यकताओं को पूरा करने की इच्छा करता है, परन्तु आर्थिक परिस्थितियां सदैव अनुकूल नहीं होतीं और वह अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के उपाय करने लगता है। उसे जिस प्रकार से उचित लगता है वह प्रयत्न करता है कि उसकी व उसके परिवार की सभी आवश्यकताएं पूर्ण हो जाएं। इसी प्रयत्न में वह कई बार कर्जदार बनता चला जाता है। संभवतः कई बार जीवन में अकस्मात ऐसी परिस्थितियां भी उत्पन्न हो जाती हैं। जब व्यक्ति को ना चाहते हुए भी ऋण लेना पड़ता है। जीवन में ऋण लेना और उसे समय से चुका पाना कठिन कार्य होता है। कई बार स्थिति इतनी कष्टमय हो जाती है कि व्यक्ति का जीना दूर्भर हो जाता है।

ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि में ऐसी परिस्थितियां ग्रहों के प्रभाव से उत्पन्न होती हैं। आर्थिक रूप से कर्जदार बनने की स्थिति में ज्योतिष में छठवें भाव व उसके स्वामी शनि को उसका कारण माना जाता है। ऐसी ही अनेक ग्रह स्थिति होती हैं जिसके कारण व्यक्ति को कर्ज लेना पड़ता है। इसे यदि पहले से जान लिया जाए तो कुछ हद तक परिस्थिति को अनुकूल बनाने का प्रयास किया जा सकता है।

(1) श्मशान में चुपके से कुछ पैसे रखकर आया करें – सिक्के।

(2) दूध का ज्यादा से ज्यादा दान करें, खासकर के गरीब कन्याओं को। बुध और चन्द्र को बल मिलेगा।

(3) श्री सूक्तम जी, कनकधारा, विष्णुसहस्रनाम, का पाठ, कभी भी धन बाधा नहीं होने देगी। मुश्किल समय में भी बरकत आती रहेगी।

(4) शुकवार के दिन घर में खीर का भोग बनाकर संध्या समय देसी घी की ज्योति जलायें और लक्ष्मी पूजन करें और खीर कन्याओं में बांटे – लक्ष्मी जी का साक्षात वास होता है।

(5) पत्नी को लक्ष्मी स्वरुपा मानकर आदर–सत्कार पूर्वक व्यवहार करें। शुक्र बलवती रहेगा। धन–सम्पदा की कमी नहीं रहेगी।

(6) घर में कच्चा स्थान रखें। फल, फूल वाले पौधे जरुर लगायें। दक्षिण–पश्चिम में भारी पौधे रखें। घर में बरकत रहेगी।

(7) शुकवार के दिन गरीब लोगों को, वृद्ध आश्रम में रहने वाले को फल बांटें।

(8) जौ का आटा, काले तिल और शक्कर, बादाम (महीन पीसकर) छुहारे काटकर+देसी घी में हल्के भूनकर – मिलाकर पेड़ों के नीचे डालें – कीड़े–मकौड़ो को।

शादी–विवाह और जीवनसाथी

आपके वैदिक ज्योतिष चार्ट में लग्न और विभिन्न भावाधिपतियों की स्थिति को समझना अविश्वसनीय रूप से महत्वपूर्ण है। यह न केवल आपकी व्यक्तिगत विशेषताओं के बारे में जानकारी प्रदान करता है, बल्कि जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं, जैसे विवाह और आपके जीवन साथी के स्वभाव पर भी प्रकाश डालता है। ये ज्योतिषीय व्याख्याएं आपको संभावित चुनौतियों के लिए तैयार होने और इन महत्वपूर्ण जीवन की घटनाओं के लिए अनुकूल समय का लाभ उठाने की अनुमति देती हैं। इन भविष्यवाणियों से सीखकर, आप नियंत्रण की भावना और अपने भाग्य की दिशा प्राप्त कर सकते हैं, जिससे अंततः अधिक सूचित निर्णय लेना और व्यक्तिगत विकास संभव हो सकता है।

लग्न – कन्या

आपकी शादी अच्छे घर में होगी, लेकिन अपने जीवनसाथी के साथ आपका तालमेल ठीक से नहीं बैठ सकता है। जिसकी वजह से आपको अपने पारिवारिक जीवन में खुशियों का अभाव महसूस होगा। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य अक्सर खराब रह सकता है।

विवाह और जीवनसाथी के मुख्य बिन्दु

(1) शुक्र आपकी कुण्डली में द्वितियेश हैं, और भाव संख्या 5 में स्थित है। आपका जीवन बच्चों से भरा--पूरा होगा, लेकिन वे अधिक खर्च कराने वाले हो सकते हैं।

(2) गुरू आपकी कुण्डली में चतुर्थेश हैं, और भाव संख्या 5 में स्थित है। आपको एक से अधिक संतान का सुख प्राप्त होगा तथा उनसे आपको खुशियां प्राप्त होंगी।

(3) गुरू आपकी कुण्डली में सप्तमेश हैं, और भाव संख्या 5 में स्थित है। आपकी शादी किसी जानकार व्यक्ति के साथ हो सकती है तथा आप लोगों के बीच आकर्षण बना रहेगा। आपके जीवनसाथी की दिलचस्पी कला के क्षेत्र में हो सकती है।

(4) सूर्य आपकी कुण्डली में द्वादशेश हैं, और भाव संख्या 4 में स्थित है। आपका पारिवारिक जीवन खुशहाल नहीं हो सकता है।

शीघ्र विवाह और विवाह बाधा दूर करने के लिए क्या उपाय करें ?

सामान्यतः गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के लिए प्रथम और अनिवार्य शर्त विवाह को माना जाता है। इसलिए इसका हमारे जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। जीवन में अनेक प्रकार की बाधाएं आती हैं जिनमें विवाह से संबधित बाधाएं भी होती हैं। जैसे इच्छानुकुल वर या वधु का न मिलना, विवाह योग्य आयु होने पर विवाह न हो पाना, विवाह में किन्ही कारणवश विलम्ब होना, वर या वधु के सर्वगुण सम्पन्न होने के बाद भी विवाह न हो पाना, विवाह के लिए आर्थिक अभाव का आड़े आना आदि। ज्योतिषिय दृष्टिकोण से ऐसी बाधाओं या कठिनाईयों का कारण व्यक्ति के जन्म कुंडली में स्थित ग्रहों के प्रतिकूल प्रभाव के कारण होता है। विवाह तथा वैवाहिक जीवन को ग्रहों के अच्छे व बुरे प्रभाव सर्वथा प्रभावित करते हैं। यदि इनके अशुभ प्रभावों को विवाह के पूर्व ही ज्ञात कर लिया जाए तो इन प्रतिकूल प्रभावों का निवारण कर वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाया जा सकता है।

(1) विष्णुसहस्रनाम का पाठ कई बाधाओं से मुक्ति दिलाता है और शादी के योग सुगमता से बनते हैं।

(2) हल्दी के गांठों को केसर और सिन्दूर सफेद कपड़े में बांधकर, चांदी के गिलास में उत्तर-पूर्व में रखें और हर मंगलवार जलेबी का दान गरीबों में करें तो कभी भी आपको शादी की रुकावटों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

(3) हनुमान जी की प्रेमपूर्ण रुप से गुरु या भाई रुप में पूजा की जायें - सुन्दर काण्ड का पाठ, हनुमान चालीसा, हनुमान अष्टक का पाठ मंगल दोष से मुक्ति में सहायक होते हैं।

(4) हर वीरवार को बूंदी के 11 लड्डू पेड़ों के नीचे जीव-जंतुओं के निमित्त डालें।

(5) जिन घरों में बच्चों के शादी के योग नहीं बनते, वहां रामायण का पाठ करवाकर शुद्धि कराई जाए - शांति पाठ कराकर, हर अमावस्या को पितरों के नाम का भोजन गरीबों को खिलाया जाये - हर तरह की विघ्न बाधा का नाश होता हे।

(6) शुक्र के दूषित होने से या मंगल दोष, राहु दोष, अंगारक दोष होने से शादी नहीं हो रही है तो श्री सूक्तम जी का पाठ शादी की बहुत सी विघ्न-बाधाओं का नाश करेगा।

पारिवारिक जीवन

वैदिक ज्योतिष के माध्यम से अपने पारिवारिक जीवन को समझना, विशेष रूप से आपके लग्न और विभिन्न गृह स्वामियों की स्थिति के विश्लेषण के माध्यम से, समृद्ध अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है। ये भविष्यवाणियाँ आपके पारिवारिक रिश्तों की गुणवत्ता, पारिवारिक गतिशीलता और संभावित मुद्दों या आशीर्वादों की एक झलक प्रदान करती हैं। इस ज्ञान के होने से, आप अपने पारिवारिक जीवन की जटिलताओं को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं, मजबूत रिश्तों को बढ़ावा दे सकते हैं, और आने वाली किसी भी चुनौती के लिए तैयार हो सकते हैं। यह ज्ञान आपके समग्र कल्याण को बढ़ाते हुए, अधिक सामंजस्यपूर्ण पारिवारिक वातावरण में योगदान देता है।

लग्न – कन्या

आपकी माता का व्यवहार आपके प्रति बहुत बढ़िया होगा, लेकिन वे किसी बीमारी से ग्रसित हो सकती हैं। आपके भाईयों एवं बहनों की संख्या ज्यादा हो सकती है।

पारिवारिक जीवन के मुख्य बिन्दु

(1) बुध आपकी कुण्डली में लग्नेश हैं, और भाव संख्या 3 में स्थित है। अपने छोटे भाई--बहनों के साथ आपके बहुत मधुर संबंध रहेंगे।

(2) शुक्र आपकी कुण्डली में द्वितियेश हैं, और भाव संख्या 5 में स्थित है। आपको अपनी संतानों के उपर कुछ अधिक खर्च करना पड़ सकता है।

(3) मंगल आपकी कुण्डली में तृतियेश हैं, और भाव संख्या 8 में स्थित है। अपने भाई--बहनों के साथ आपका वैचारिक मतभेद और शत्रुता हो सकती है। आपके भाई--बहनों को स्वास्थ्य संबंधित कुछ गंभीर परेशानियां हो सकती हैं।

(4) गुरू आपकी कुण्डली में चतुर्थेश हैं, और भाव संख्या 5 में स्थित है। आपको अपनी संतानों से बहुत अधिक खुशियां प्राप्त होंगी।

(5) शनि आपकी कुण्डली में षष्ठेश हैं, और भाव संख्या 10 में स्थित है। अपने पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है।

(6) सूर्य आपकी कुण्डली में द्वादशेश हैं, और भाव संख्या 4 में स्थित है। आपको पारिवारिक शांति प्राप्त नहीं हो सकती है।

सुखी वैवाहिक/पारिवारिक जीवन के लिए क्या उपाय करें ?

ब्यक्ति के विवाहोपरान्त दाम्पत्य जीवन की शुरुआत होती है। यह जीवन का वह भाग है जिसमें व्यक्ति का सर्वाधिक समय व्यतीत होता है। इसलिए इसके सुखमय अथवा कष्टमय होने से व्यक्ति का सारा जीवन प्रभावित होता है। दाम्पत्य जीवन पति-पत्नी दोनों के आपसी समझ, सामंजस्य, प्रेम, समर्पण, सहानुभूति, मधुरता, अपनापन आदि से मिलकर बनता है। यदि इनके विपरीत गुणों का समावेश दाम्पत्य जीवन में होने लगता है, तो परिस्थिति सुखमय होने की बजाय कष्टमय होने लगती है। सामान्यतः पति-पत्नी दोनों की ही यह जिम्मेदारी होती है कि वे अपने-अपने दायित्वों का पालन निष्ठा व प्रेम से करें। जिससे कि घर-परिवार में कलह क्लेश की स्थिति उत्पन्न न हो, परन्तु किन्हीं कारण वश ऐसा सदैव कर पाना संभव नहीं हो पाता है और दाम्पत्य सुख लुप्त होने लगता है। ज्योतिषशास्त्र में दाम्पत्य जीवन में होने वाले वाद-विवाद, कलह, अशांति आदि को दाम्पत्य सुख में बाधक माना गया है, जो कि ग्रहों के प्रतिकूल होने के कारण उत्पन्न होता है। यदि ग्रहों की प्रतिकूलता को पहले ही ज्ञात करके उसके अनुसार आचरण व उपाय किया जाय तो दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाया जा सकता है।

(1) दाम्पत्य सुख के लिए अपने शयनकक्ष में राधा-कृष्ण की तस्वीर जरुर लगायें।

(2) आपके शयनकक्ष में कोई शीशा न हो या ऐसा कोई कांच जिसमें आपकी परछाई नजर आती हो।

(3) आपके घर में फल-फूलों वाले पौधे जिसमें कांटे ना हो जरुर लगायें, बुध और शुक्र दाम्पत्य सुख की वृद्धि करते हैं।

(4) गुलाब की पत्तियां, जामुन की पत्तियां, अशोक के पत्ते आपने शयन कक्ष में रखें। सूखने पर बदलते रहें।

(5) उं सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके शरणये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते का जाप घर में सुख समृद्धि और मांगलिक कार्यों को प्रेरित करेगा।

(6) पूर्णिमा, संक्रांति और अमावस्या पर नौ अनाज भिंगोकर (9 किलो) अगर पक्षियों को डाला जाए तो दाम्पत्य सुख की हर बाधा का नाश होता है।

(7) अगर शराब पीने की वजह से परिवार में अशान्ति आती है तो भैरो जी को पिता के रुप में मानते हुए सवा किलो जलेबी का प्रसाद चढ़ाए और समस्या के समाधान की आस्थापूर्वक प्रार्थना करें।

(8) बबूल के पेड़ को, पीपल के पेड़ को, बरगद को जो वीराने में खड़े होते हैं - जिन्हें कोई जल नहीं देता, देसी शक्कर - सफेद तिल और जल मिलाकर अर्पण करें - दाम्पत्य सुख बना रहेगा।

(9) गरीब कन्याओं को लाल जोड़ा या हरा जोड़ा - शादी के लिए दान किया जाये तो भी दाम्पत्य सुख बना रहता है।

जीवन शैली और सामाजिक स्थिति

आपके वैदिक ज्योतिष चार्ट में लग्न और विभिन्न भावाधिपतियों की स्थिति का विश्लेषण करने से आपकी जीवनशैली और सामाजिक स्थिति के बारे में गहन जानकारी मिल सकती है। ये भविष्यवाणियाँ आपको इस बारे में मार्गदर्शन कर सकती हैं कि आप कैसा जीवन जी सकते हैं और समाज में आपकी स्थिति क्या है। इन्हें समझने से आपको अपना मार्ग अधिक प्रभावी ढंग से संचालित करने और अपने ज्योतिषीय स्थिति की क्षमता का दोहन करने में मदद मिल सकती है। यह ज्ञान आपको रणनीतिक निर्णय लेने की दूरदर्शिता से सुसज्जित करता है, संभावित रूप से आपकी सामाजिक स्थिति एवं जीवनशैली में सुधार करता है, इस प्रकार समग्र खुशी और सफलता में योगदान देता है।

लग्न – कन्या

आपको बड़ी गाड़ियों का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। धन होने के बावजूद आप जीवन का आनंद प्राप्त नहीं कर सकते हैं। आपके पास जमीन-जायदाद होगी लेकिन पाप ग्रह के दशा के दौरान वह बर्बाद हो सकता है। आपका जीवन परेशानियों एवं क्लेश या समस्याओं से भरा हो सकता है। आपके मित्रों का दायरा बड़ा होगा एवं आप बहुत अधिक धार्मिक नहीं हो सकते हैं।

जीवन शैली और सामाजिक स्थिति के मुख्य बिन्दु

(1) बुध आपकी कुण्डली में लग्नेश हैं, और भाव संख्या 3 में स्थित है। आपके विचार बहुत प्रगतिशील होंगे। आप अपने जीवन में सफल होंगे तथा कला की तरफ आपका झुकाव हो सकता है।

(2) गुरू आपकी कुण्डली में चतुर्थेश हैं, और भाव संख्या 5 में स्थित है। आप अपनी शैक्षणिक सफलताओं एवं सम्मानों की वजह से प्रसिद्ध होंगे एवं लोग आपको याद रखेंगे।

(3) शनि आपकी कुण्डली में पंचमेश हैं, और भाव संख्या 10 में स्थित है। आपको यश की प्राप्ति होगी।

(4) शनि आपकी कुण्डली में षष्ठेश हैं, और भाव संख्या 10 में स्थित है। आप धार्मिक नहीं हो सकते हैं तथा पुराने रीति रिवाजों की आलोचना कर सकते हैं। आप दूसरे धर्म को अपना सकते हैं।

(5) मंगल आपकी कुण्डली में अष्टमेश हैं, और भाव संख्या 8 में स्थित है। आप घुड़दौर, जुआ, लॉटरी या सट्टा आदि के आदि हो सकते हैं।

(6) शुक्र आपकी कुण्डली में नवमेश हैं, और भाव संख्या 5 में स्थित है। आपको पौराणिक और धार्मिक ग्रंथों को पढ़ने और जानने का शौक होगा। आप बहुत धार्मिक होंगे और दूसरों को शिक्षित करेंगे।

मकान/आवास सुख के लिए क्या उपाय करें ?

मनुष्य का जीवन प्राप्त होने के बाद उसके जीवन में तरह-तरह की जरूरतें आती हैं, परन्तु जो मूलभूत आवश्यकताएं हैं उनमें से सबसे पहले वह भोजन और फिर वस्त्र के बारे में सोचता है और जब उसे पूरा कर लेता है तो उसके बाद उसे अपने रहने के लिए एक ऐसे आवास की जरूरत महसूस होती है जिसमें वह सुख-शांति से अपने परिवार के साथ रह सके। चूंकि प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा होती है कि उसके पास उसका स्वयं का घर व सभी प्रकार की भौतिक सुख सुविधाएं हों, परन्तु वास्तव में सब कुछ हासिल कर पाना इतना आसान भी नहीं होता है। इन्हें प्राप्त करनें में अनेक बाधाएं आती हैं। किसी के जीवन में ये बाधाएं अधिक होती हैं तो किसी में कुछ कम एवं किसी को बहुत आसानी से सब कुछ उपलब्ध हो जाता है। ज्योतिष में इसी उतार-चढ़ाव के खेल को ग्रहों व भाग्य का खेल कहा जाता है जो कि सबका अलग-अलग होने के कारण सबको अलग-अलग परिस्थितियों में जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

(1) जिस घर में या भूमि पर रहते हैं रोजाना भूमि को प्रणाम करें, दूध से धुलाई करें और हनुमान जी की उपासना करें। भाग्यानुसार और कर्मानुसार आपको आवास सुख शानदार मिलेगा।

(2) अपने घर के पृथ्वी तत्व यानि दक्षिण-पश्चिम यानि राहु के स्थान पर बड़े और भारी पेड़-पौधे लगायें, घर में बरकत और सुख समृद्धि बनी रहेगी। अपने भाई से हमेशा बना कर रखें।

(3) अपनी पत्नी के भाई के साथ स्नेह भाव रखें।

(4) मकान खरीदने में अगर समस्या आती है तो हनुमान जी की उपासना करें,। सिन्दूर का चोला चढ़ायें और आंखों में सफेद सुरमा लगायें।

(5) मंगल की शुभता के लिए शहद और सफेद तिल मंगलवार को, वीरवार को, रविवार को पहली होरा में पेड़ों के नीचे जीव-जंतुओं को डालें। कभी भी अमंगल नहीं होगा।

(6) पिछले जन्म के पितृ भ्रमण और पापकर्म की वजह से मकान सुख नहीं है, तो बेजुबानों की सेवा करें, वृक्षों को जल दें, बंजर भूमि को सींचें।

अच्छे वाहन सुख के लिए क्या उपाय करें

आधुनिक समय में भौतिक भोग विलास की वस्तुएं इस प्रकार से जीवन में अपना स्थान बनाती जा रहीं हैं कि उनके बिना जीवन कठिन प्रतीत होने लगता है। इस वैज्ञानिक युग में जितनी तेज गति से विकास हो रहा है व्यक्ति को भी उसी के अनुसार अपनी गति बढ़ानी पड़ रही है। अब वो समय नहीं रहा कि लोग बैलगाड़ी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर कई–कई दिन में जाएं। इसके लिए आधुनिक वाहनों का जीवन में महत्व बढ़ता ही जा रहा है, बल्कि ये कह सकते हैं कि यह इच्छा ही नहीं आवश्यकता बन गई है। चूंकि सभी के लिए वाहन आवश्यक होता जा रहा है, परन्तु यह आवश्यक नहीं कि सबको वाहन सुख प्राप्त ही हो। किसी के पास अनेकोनेक वाहन होते हैं तो कोई उसे लाख प्रयत्न करने के बाद भी प्राप्त नहीं कर पाता है, कोई व्यक्ति वाहन होते हुए भी उसका भरपूर सुख नहीं उठा पाता है आदि की तरह जीवन में अनेक ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं।

ज्योतिष की दृष्टि से देखा जाय तो यह अन्तर व्यक्ति के जन्म के समय में स्थित ग्रहों के प्रभाव के कारण होता है। यदि व्यक्ति अपने जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों के प्रभाव को पहले ही जान कर उसके अनुसार वाहन का जीवन में प्रयोग करे तो वह स्वयं की सुरक्षा के साथ–साथ वाहन का सुख भ भरपूर प्राप्त कर सकता है।

(1) लक्ष्मी जी और संतोषी मां की पूजा करें। श्री सूक्तम, कनकधारा और लक्ष्मी महातम का पाठ करने से वाहन सुख में कभी कमी नहीं आती।

(2) अपने हाथों से मीठी खील, दूध का छीटा देकर हर शुक्रवार को सूर्य उदय होने पर पेड़ों के नीचे – जहां कीड़े–मकौड़े हो डालें।

(3) वाहन अगर बार–बार खराब होता है तो सफेद गाय के मूत्र से छीटे दें।

(4) नारी जाति का सम्मान करें, मंदिर में रुई की बत्तियां, घी और मिट्टी के दीपक दे, गायों की सेवा करें।

(5) घर में नंगे पैर कभी न चलें।

भाग्यवृद्धि के लिए क्या उपाय करें ?

इस संसार में आस्तिक एवं नास्तिक दोनों की तरह के मनुष्य हैं। भले ही नास्तिक मनुष्य ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते हैं। इसलिए उनके लिए भाग्य भी जीवन में कोई मायने नहीं रखता है, परन्तु चाहे अनचाहे ढंग से सबको इस सत्य को कभी न कभी स्वीकार करना पड़ता है कि ऐसी कोई शक्ति अवश्य है जो हमारे कर्मों के आधार पर हमारे भाग्य का निर्माण करती है। ऐसी धारणा है कि व्यक्ति के पूर्व जन्म में किए गए कर्मों का फल उसे अगले जन्म में प्राप्त होता है एवं इस कर्मों के फल को ही सामान्य शब्दों में भाग्य का लिखा माना जाता है जो कि व्यक्ति को वर्तमान में प्राप्त होता है। इसलिए मनुष्य का जीवन केवल भाग्य से ही प्रभावित नहीं होता अपितु उसे उसका कर्म भी उतना ही प्रभावित करता है अर्थात व्यक्ति के भाग्य का निर्माण उसके कर्मों के आधार पर ही होता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि यदि हमारा भाग्य हमारे किए गए कर्मों से बनता है तो क्यों कोई व्यक्ति वर्तमान में इमानदारी, सच्चाई, परोपकार आदि सद्गुणों का अनुसरण करने के बाद भी जीवन में अनेक कठिनाईयों को झेलता है, जबकि दूसरा व्यक्ति कुमार्ग पर चलते हुए भी सुखी जीवन व्यतीत करता है। यदि ध्यान से देखा जाय तो यह ज्ञात होता है कि कुमार्ग पर चलकर अर्जित की हुई खुशियां अधिक समय तक नहीं टिकतीं हैं। जबकि व्यक्ति के सद्कर्म उसके भाग्य में आने वाले अवरोधों को समाप्त करने में मदद करते हैं। यह विषय अत्यंत जटिल एवं तर्क योग्य है कि भाग्य श्रेष्ठ है या कर्म तथा भाग्य की वास्तविकता क्या है ? साधारण शब्दों में कहा जा सकता है कि जैसे ईश्वर सत्य है उसी प्रकार व्यक्ति का भाग्य भी उसके साथ होता है जो कि उसके कर्मों के आधार पर परिवर्तित होता रहता है।

(1) दीन-दुखियों की सेवा करें।
(2) अन्न का दान जरुरतमंदों को करें।
(3) पशु-पक्षियों के लिए अन्न जल का प्रबंध करें।
(4) लूले, लंगड़े की सेवा, दवाई का दान, अंध विद्यालय, वृद्ध आश्रम और अनाथालय में सामर्थ्यनुसार सेवा करते रहें।
(5) कमजोर के प्रति दया भाव रखें।
(6) मां-बाप की सेवा करें। बुर्जुगों से आर्शीवाद लें।
(7) पीपल, बरगद और कीकर भी बुर्जुग ही हैं, सेवा करते रहें।
(8) मांस-मदिरा का सेवन न करें। तामसिक वृतियों से परहेज करें।
(9) पिंजरे से पक्षियों को आजाद करायें। कसाई से जानवर आजाद कराकर जंगलों में छोड़ दें।
(10) असहाय लोगों को जरुरतनुसार मदद करें, चाहे दवाई हों, अन्न, जूता या कपड़ा हों।
(11) अच्छे कर्मों से जीवन यापन करिये - वर्तमान में सुधरेगा तो भविष्य भी प्रबल होगा।

क्या है कालसर्प योग ?

जब कुण्डली में सारे ग्रह राहु और केतु के अंशो के बीच में आ जाते हैं, तो कुण्डली को कालसर्प योग से ग्रसित माना जाता है। यदि एक भी ग्रह राहु और केतु के अंशो के बाहर रह जाता है, तो पूर्ण कालसर्प योग नहीं माना जाएगा। हालांकि, सारे ग्रह केतू और राहु के अंशों के बीच में आ जायें, तो भी आंशिक कालसर्प योग माना जाएगा।

कालसर्प योग का सामान्य प्रभाव–

1– किसी भी शुभ और महत्वपूर्ण कार्य को करते समय परेशानियों का सामना करना।
2– मानसिक तनाव।
3– आत्मविश्वास में कमी।
4– स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां।
5– गरीबी और धन की कमी।
6– व्यापार में घाटा और नौकरी में परेशानी।
7– उत्तेजना और बेकार की चिंताएं।
8– मित्रों और शुभचिन्तकों से मनमुटाव।
9– मित्रों और शुभचिन्तकों की तरफ से विश्वासघात।
10– मित्रों, शुभचिन्तकों और रिश्तेदारों की ओर से किसी भी तरह का सहयोग नहीं प्राप्त होना।

आपकी कुण्डली में कालसर्प योग मौजूद नहीं है।

मांगलिक दोष (कुज दोष)

मांगलिक दोष (कुज दोष) निर्धारण के नियम

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजः।
मन्गलिक दोषवान्नारी पुंसां स्त्रीविनाशिनी।।

यदि कुण्डली में मंगल लग्न से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

यदि कुण्डली में मंगल चंद्रमा से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

यदि कुण्डली में मंगल शुक्र से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

आपकी कुण्डली में मांगलिक दोष (कुज दोष)

आपकी कुण्डली में, मंगल लग्न से आठवीं राशि में स्थित है। आपकी कुण्डली में कुज दोष (या मांगलिक दोष) उपस्थित है।

आपकी कुण्डली में, मंगल चंद्र राशि से आठवीं राशि में स्थित है। आपकी कुण्डली में कुज दोष (या मांगलिक दोष) उपस्थित है।

आपकी कुण्डली में, मंगल शुक्र राशि से चौथी राशि में स्थित है। आपकी कुण्डली में कुज दोष (या मांगलिक दोष) उपस्थित है।

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल शुक्र द्वारा अधिग्रहित राशि से चौथे भाव में स्थित है। यह आभासी रूप से कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। लेकिन, चूंकि मंगल अपनी ही राशि में स्थित है, अतः यह एक अपवाद है– जैसाकि यह दोष स्वतः समाप्त हो जाता है। आपकी कुण्डली में कुज दोष तकनीकि रूप से अनुपस्थित माना जाएगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल चर राशि में स्थित है। कुछ लोगों के अनुसार यह एक अपवाद है, जहां पर कुज दोष को जांचने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। आप मांगलिक दोष से मुक्त हैं– आप मंगली नहीं हैं। (हालांकि, इस विचार को बहुमत प्राप्त नहीं है।)

मांगलिक दोष (कुज दोष) का प्रभाव

मंगल दोष के प्रभाव से विवाह में देरी हो सकती है या विवाह होने में कई बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। विवाह होने के बाद वर या वधू या दोनों को शारीरिक, मानसिक या आर्थिक रूप से कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके प्रभाव से आपसी मतभेद/विवाद हो सकते हैं, एक–दूसरे पर दोषारोपण कर सकती हैं तथा तलाक की भी नौबत आ सकती है। दोष का प्रभाव अधिक होने की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति में से किसी की या दोनों की सेहत अक्सर खराब रह सकती है या अकाल मृत्यु के भी शिकार हो सकते हैं।

मांगलिक दोष (कुज दोष) का उपाय

मंगल दोष को दूर करने के लिए वैदिक ज्योतिष से निम्न उपाय करें :–

मंगलवार (सूर्योदय से अगले दिन सूर्योदय तक) को उपवास करें। दिन के दौरान नमक का सेवन ना करें और यदि संभव हो, तो केवल तरल पदार्थों जैसे, चाय, कॉफी, दूध फलों का रस एवं दही आदि का ही सेवन करें। शाम के समय रोली से किसी थाली में एक त्रिकोण बनायें एवं पंचोपचार (लाल चंदन, लाल फल, धूप, दीपक एवं भोज्य पदार्थ) से पूजा करें। उसके बाद सूर्यास्त से पहले

गेहूं के आटे की रोटी, घी एवं गुड़ का सेवन करें।

मंगल दोष का प्रभाव अधिक होने की स्थिति में लगातार 108 दिनों तक रोज 21 बार मंगल चंडिका स्त्रोत का पाठ करें। सुबह में पूर्वाभिमुख बैठकर पंचमुखी दीपक जलायें एवं अपने इष्ट देव तथा मंगल की पंचोपचार से पूजा करें और निम्नलिखित मंत्र का जाप करें।

रक्ष रक्ष जगन्मातर्देवि मंगलचंडिके । हारिके विपदां राशे हर्षमंगलकारिके ।।
हर्षमंगलदक्षे च हर्षमंगलदायिके । शुभे मंगलदक्षे च शुभे मंगलचंडिके ।।
मंगले मंगलार्हे च सर्वमंगलमंगले । सदा मंगलदे देवि सर्वेषां मंगलालये ।।

केमुद्रुम योग

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः। (11000 बार)

दधिशंखतुशाराभं क्षीरोदोर्णवसभवम् नवमि्।
भाशिनं भवत्या भाम्भोर्मुकुटभुशणम्।।

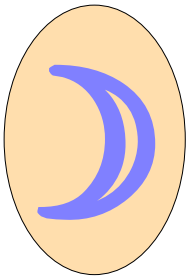

क्या है केमुद्रुम योग ?

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा के पहले और आगे वाले भाव में कोई ग्रह नहीं है, इस स्थिति में चन्द्रमा की स्थिति बहुत कमजोर मानी जाती है और केमुद्रम योग का निर्माण होता है। अक्सर ऐसे लोग निराश, अवसाद, अकेलेपन के शिकार रहते हैं – आत्मविश्वास की बहुत कमी पाई जाती है, समाज में आगे बढ़कर कोई काम नहीं कर पाते – मेहनत करने के बावजूद – मेहनत का फल नहीं मिलता। आपकी कुण्डली में चन्द्रमा अपने भाव में अकेला है, आपकी स्थिति और भी संघर्षमय हे जाती है, परन्तु आपके कर्मों के माध्यम से इस योग के दुष्प्राभाव से मुक्ति मिल सकती है।

उपाय क्या करें ?

(1) रुद्राष्टक का निरन्तर जप करें।
(2) सुबह केसर और दूध का सेवन करें।
(3) पंचामृत से भगवान शिव का अभिषेक करें।
(4) चांद की रौशनी में सफेद वस्त्र पहन कर गायत्री मंत्र का जाप करें।
(5) रात को सोते समय सफेद चंदन का लेप करें।
(6) अपनी मां से और सभी मां जैसी व्यक्ति से आर्शीवाद लेते रहे।
(7) विधवा औरतो की यथासंभव सहायता करते रहे।
(8) गरीब लोगों को दूध का दान करें।

जीवन रत्न

यह रत्न आपके लिये धन, पद, यश, स्वास्थ्य, आयु की वृद्धि करवाने वाला रहेगा।

ग्रह विवरण

लग्न	कन्या
नक्षत्र	हस्ता - 2
लग्नाधिपति	बुध
उच्चस्थ	---
मूलत्रिकोन	---
स्वराशिगत	---
अस्त	हाँ
नीचस्थ	---
वक्री	---
केन्द्रगत	---
त्रिकोनगत	---
मारक भाव में	---
त्रिक भाव में	---
केन्द्राधिपति	हाँ
त्रिकोनाधिपति	---
मारकेश	---
त्रिकभावपति	---

रत्न विवरण

रत्न	पन्ना (एमरल्ड)
उप-रत्न	
बैरूज(एक्वामेरीन), मरगज(नेफ्लाइट)	
दिन	बुधवार
नक्षत्र	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
विपरीत-रत्न	
मोती, मूंगा	
मंत्र	
ॐ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः (19000 जप)	
दान विवरण 1	
पन्ना, स्वर्ण, काँस्य, मूंग, खांड, घृत, कपूर, कस्तूरी	
दान विवरण 2	
हरा वस्त्रा, सर्वपुष्प, हाथी दाँत, शस्त्रा, फल	
रत्न कैसे धारण करें	
पन्ना तीन या छः रत्ती का स्वर्ण की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की कनिष्ठा अंगुली में बुधवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद बुध के तांत्रिाक मंत्रा की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंट के बीच धारण करना उत्तम फलप्रद रहता है।	

ओं चन्द्रपुत्राय विद्महे रोहिणीप्रियाय धीमहि तन्नो बुधः प्रचोदयात्।

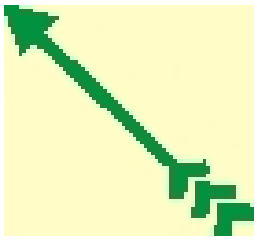

सौम्योदङ्मुख पीतवर्ण मगधश्चात्रेय गोत्रोद्भवो।
बाणेशानदिशः सुहृच्छनिभृगुः शत्रु सदा शीतगुः।।
कन्या युग्मपतिर्दशाष्ट चतुरः षड्नेत्रकः शोभनो।
विष्णुः पौरुषदेवते शशिसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

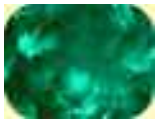

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः (19000 जप)

प्रोग्राम का निष्कर्ष

आपका लग्नेश बुध है। चूंकि यह ना तो नीचस्थ है और ना ही त्रिक भाव या मारक भाव में स्थित है। इसलिए आप बुध के लिए रत्न धारण कर सकते हैं।

यद्यपि इस प्रोग्राम में हम रत्न धारण करने या ना करने की बहुत सी कण्डीशन को चेक कर रहें हैं, फिर भी विद्वान ज्यातिषी की सलाह अंतिम मानी जायेगी।

ज्योतिषी का निष्कर्ष

भाग्य रत्न

यह रत्न आपके लिये सन्तान सुख, विद्या-विवेक दायक तथा नौकरी और व्यापार में वृद्धि कारक रहेगा।

♀

ग्रह विवरण

लग्न	कन्या
नक्षत्र	हस्ता - 2
नवमेश	शुक्र
उच्चस्थ	---
मूलत्रिकोन	---
स्वराशिगत	---
अस्त	---
नीचस्थ	---
वक्री	---
केन्द्रगत	---
त्रिकोनगत	हाँ
मारक भाव में	---
त्रिक भाव में	---
केन्द्राधिपति	---
त्रिकोनाधिपति	हाँ
मारकेश	हाँ
त्रिकभावपति	---

रत्न विवरण

रत्न	हीरा (डायमण्ड)
उप-रत्न	
वैक्रान्त(तुरमुली), सफेद हकीक(व्हाईट एगेट)	
दिन	शुक्रवार
नक्षत्र	भरणी, पू. फाल्गुनी, पू. आषाढ़ा
विपरीत-रत्न	
माणिक्य, मोती, मूंगा, पुखराज	
मंत्र	
ऊँ द्रां द्रीं द्रों सः शुक्राय नमः (6000 जप)	
दान विवरण 1	
हीरा, स्वर्ण, रजत, चावल, मिश्री, दूध, दधि, कपूर, घृत	
दान विवरण 2	
श्वेत वस्त्रा, श्वेत पुष्प, श्वेत अश्व, श्वेत चन्दन, श्वेत गाय	
रत्न कैसे धारण करें	
हीरा 46 सेंट का प्लेटिनम या चाँदी की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की कनिष्ठा अंगुली में शुक्रवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद शुक्र के तांत्रिक मंत्रा की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंटे के बीच धारण करना श्रेष्ठ फलप्रद रहता है।	

ओं भृगुपुत्राय विद्महे श्वेतवाहनाय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्।

शुक्रो भार्गवगोत्रजः सितनिभः प्राचीमुखः पूर्वदिक्।
पञ्चाङ्गो वृषभस्तुलाधिप महाराष्ट्राधिपोदुम्बरः।।
इन्द्राणी मघवानुभौ बुध शनी मित्रार्क चन्द्रौ रिपू।
षष्ठो द्विर्दश वर्जितो भृगुसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

ऊँ द्रां द्रीं द्रों सः शुक्राय नमः (6000 जप)

प्रोग्राम का निष्कर्ष

चूंकि आपका नवमेश आपकी कुण्डली में किसी मारक भाव का स्वामी है, इसलिए नवमेश के लिए कोई रत्न धारण करना आपके लिए उपयुक्त नहीं होगा।

यद्यपि इस प्रोग्राम में हम रत्न धारण करने या ना करने की बहुत सी कण्डीशन को चेक कर रहें हैं, फिर भी विद्वान ज्यातिषी की सलाह अंतिम मानी जायेगी।

ज्योतिषी का निष्कर्ष

वैदिक उपाय

वैदिक ज्योतिष, लाल किताब और कार्मिक प्रथाओं से नक्षत्र स्वामी पर आधारित उपचार हमें ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के साथ संरेखित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे जीवन के प्रति दृष्टिकोण में सुधार होता है। ये अनुरूप उपाय नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, सकारात्मकता को बढ़ाते हैं और हमें ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। अंततः, वे व्यक्तियों को अपने भाग्य को संचालित करने की अनुमति देकर आत्म–जागरूकता, सद्भाव और संतुष्टि को बढ़ावा देते हैं।

आपका नक्षत्र
हस्ता (2)

नक्षत्राधिपति
चन्द्रमा

इन वैदिक उपायों को अपनायें

(1). चंद्रमा का रत्न मोती है। ऐसा माना जाता है कि इसका शांत प्रभाव पड़ता है और यह भावनात्मक संतुलन बनाए रखने और समग्र कल्याण को बढ़ाने में मदद कर सकता है। आप अपनी छोटी उंगली पर चांदी में जड़ा हुआ उच्च गुणवत्ता वाला मोती पहन सकते हैं।

(2). सूर्य के लिए सूर्य नमस्कार की तरह, चंद्र नमस्कार मन और शरीर को शांत करने के लिए फायदेमंद योग मुद्राओं का एक क्रम है। इसका अभ्यास शाम को चांदनी के नीचे सबसे अच्छा होता है। चंद्र नमस्कार करते समय लाभ बढ़ाने के लिए 'ओम सोम सोमाय नमः' मंत्र का जाप किया जा सकता है।

(3). सोमवार का व्रत करने से आपके स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है क्योंकि यह दिन चंद्रमा से जुड़ा होता है।

(4). चावल का दान करना, विशेषकर सोमवार के दिन, लाभकारी होता है क्योंकि चावल का संबंध चंद्रमा से होता है।

(5). चंद्रमा से संबंधित रंग सफेद है, जो शीतलता और शांति का प्रतीक है। विशेष रूप से सोमवार के दिन सफेद कपड़े पहनने से सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

(6). चंद्र यंत्र की पूजा करें, जो चंद्रमा से जुड़ा एक शक्तिशाली चित्र है। इसे अपने घर या कार्यस्थल पर स्थापित किया जा सकता है तथा सफेद फूलों और धूप से इसकी पूजा की जा सकती है।

(7). सोमवार के दिन दुर्गा चालीसा का पाठ करें। चंद्रमा को दुर्गा का भक्त माना जाता है, ऐसे में उनकी चालीसा का पाठ करना लाभकारी हो सकता है।

(8). चांदनी के नीचे ध्यान करने से, विशेष रूप से पूर्णिमा के दौरान, मन और शरीर पर सुखद प्रभाव पड़ सकता है, जिससे समग्र स्वास्थ्य में मदद मिलती है।

लाल किताब के उपाय

वैदिक ज्योतिष, लाल किताब और कार्मिक प्रथाओं से नक्षत्र स्वामी पर आधारित उपचार हमें ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के साथ संरेखित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे जीवन के प्रति दृष्टिकोण में सुधार होता है। ये अनुरूप उपाय नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, सकारात्मकता को बढ़ाते हैं और हमें ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। अंततः, वे व्यक्तियों को अपने भाग्य को संचालित करने की अनुमति देकर आत्म–जागरूकता, सद्भाव और संतुष्टि को बढ़ावा देते हैं।

आपका नक्षत्र
हस्ता (2)

नक्षत्राधिपति
चन्द्रमा

इन लाल किताब के उपायों को अपनायें

(1). लाल किताब के अनुसार चांदी पहनने से आपके जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, क्योंकि इस धातु का संबंध चंद्रमा से होता है।

(2). चंद्रमा से संबंधित समस्याओं को कम करने के लिए एक सरल उपाय यह है कि बहते पानी, जैसे नदी, में सवा किलो चावल प्रवाहित करें।

(3). सोमवार के दिन गाय को हरा चारा या घास खिलाने से लाभ हो सकता है।

(4). लाल किताब के अनुसार, महिलाओं, विशेषकर अपने परिवार की महिलाओं का आदर और सम्मान करना सकारात्मक प्रभाव ला सकता है क्योंकि चंद्रमा स्त्रीत्व का प्रतिनिधित्व करता है।

(5). लाल किताब कल्याण सुनिश्चित करने के लिए, कई सामान्य उपायों के विपरीत, विशेष रूप से सोमवार को दूध या चावल का दान नहीं करने का सुझाव देती है।

(6). शहद से भरा चांदी का बर्तन घर में रखने से आपके जीवन में सकारात्मकता बढ़ सकती है।

(7). सोमवार के दिन शिवलिंग पर जल चढ़ाने से सकारात्मक परिणाम मिलते हैं।

(8). लाल किताब के अनुसार, व्यक्ति को हमेशा अपनी मां और मातृतुल्य का सम्मान करना चाहिए तथा समृद्धि एवं सफलता के लिए उनका आशीर्वाद लेना चाहिए।

(9). गायों या अन्य दूध उत्पादक जानवरों की देखभाल करें, लेकिन लाभ के लिए उनका दूध न बेचें।

(10). चंद्रमा के सकारात्मक प्रभाव को बढ़ाने के लिए व्यक्ति को मांसाहारी भोजन से बचना चाहिए और विशेष रूप से सोमवार के दिन शराब का सेवन करने से बचना चाहिए।

कार्मिक उपाय

वैदिक ज्योतिष, लाल किताब और कार्मिक प्रथाओं से नक्षत्र स्वामी पर आधारित उपचार हमें ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के साथ संरेखित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे जीवन के प्रति दृष्टिकोण में सुधार होता है। ये अनुरूप उपाय नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, सकारात्मकता को बढ़ाते हैं और हमें ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। अंततः, वे व्यक्तियों को अपने भाग्य को संचालित करने की अनुमति देकर आत्म–जागरूकता, सद्भाव और संतुष्टि को बढ़ावा देते हैं।

आपका नक्षत्र
हस्ता (2)

नक्षत्राधिपति
चन्द्रमा

इन कार्मिक के उपायों को अपनायें

(1). रोजाना सचेतनता का अभ्यास करना शुरू करें। सचेत रहने का अर्थ है वर्तमान क्षण में रहना, पूरी तरह जागरूक रहना और आप जो कर रहे हैं उसमें लगे रहना। यह देखते हुए कि ज्योतिष में चंद्रमा मन को नियंत्रित करता है, यह अभ्यास आपको अपने नक्षत्र स्वामी के साथ तालमेल बिठाने में मदद कर सकता है।

(2). दूसरों की भावनाओं को समझने और साझा करने का सचेत प्रयास करें। इसमें वास्तव में दूसरों की बात सुनना और उनकी भावनाओं को मान्य करना शामिल है। यह सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण बेहतर पारस्परिक संबंधों को जन्म दे सकता है और अच्छे कर्म का निर्माण कर सकता है।

(3). अपने आस–पास के लोगों की सहायता करने के तरीके खोजें। मदद की पेशकश का भव्य होना ज़रूरी नहीं है; दयालुता के छोटे–छोटे कार्य भी आपके कर्म पर महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं।

(4). अपना धैर्य विकसित करें. यह एक ऐसा कौशल है जिसके लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है। जब आप निराश या अधीर महसूस करें तो कुछ गहरी साँसें लेकर शुरुआत कर सकते हैं।

(5). सकारात्मक मानसिकता को बढ़ावा देने के लिए पुष्टिकरण का उपयोग करें। चूंकि चंद्रमा मन और भावनाओं पर शासन करता है, इसलिए 'मैं शांत और संतुलित हूं' या 'मेरा मन शांतिपूर्ण और शांत है' जैसे दृढ़ कथन विशेष रूप से प्रभावी हो सकती है।

(6). अपने जीवन में क्षमा का गुण विकसित करें। क्रोध या आक्रोश को दबाए रखना आपको उस व्यक्ति से अधिक नुकसान पहुंचा सकता है जिससे आप परेशान हैं। क्षमा करने से आप नकारात्मक ऊर्जाओं को दूर कर सकते हैं।

(7). प्रकृति में समय बिताना, विशेषकर चांदनी में, आपको अपने नक्षत्र स्वामी की ऊर्जाओं के साथ तालमेल बिठाने में मदद कर सकता है। यह चाँद की रोशनी में टहलने जितना आसान हो सकता है।

(8). आत्म–देखभाल अनुष्ठानों में संलग्न होना आत्म–प्रेम का एक रूप हो सकता है जो अच्छे कर्म लाता है। अपनी जरूरतों का ख्याल रखना जरूरी है ताकि आप दूसरों की प्रभावी ढंग से सहायता कर सकें।

(9). वैदिक ज्योतिष में चंद्रमा को स्त्री ऊर्जा माना गया है। महिलाओं के मुद्दों का समर्थन करने या सिर्फ अपने जीवन में महिलाओं के लिए उपस्थित रहने पर विचार करें।

Disclaimer

(1) Please note that an astrological prediction is just an opinion of the astrologer on the basis of the Horoscope and has no scientific authenticity. These predictions are based upon the characteristics, placements, aspects, associations, strengths, weaknesses of the planets and the ability, command over the astrology subject and experience and competence of the astrologer in the Indian Vedic Astrology.

(2) Recommendation for astrological remedies such as gemstones, mantras, yantras etc are often prescribed after diligent study of the client's birth chart and with due exercise of his prudence and judgment. It must be clearly understood that every such prescription is accompanied by a prescribed method and procedure, which is expected to be followed by our clients with diligence MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) is not responsible for any claims for negative functioning of any prescription of astrological remedy provided. The remedies you receive should not be used as a substitute for advice, programs, or treatment that you would normally receive from a licensed professional, such as lawyer, doctor, psychiatrist, or financial advisor.

(3) The spiritual and material benefits stated with respect to various astrological forecasts, mantras, yantras, pujas, stones or any other spiritual items as well as other products and services are as per th ancient Indian Scriptures and literature. However, as the socio-economic and religious circumstances have changed a lot since then, neither MindSutra Software Technologies and its Software Users (Whicl Provided this Report) can be held responsible for non functioning or non fructification of the stated results.

(4) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) makes no guarantees or representations vis-a-vis the accuracy or consequence of any aspect of the astrological remedy and predictive advice imparted and cannot be held accountable for any interpretation, action, or use that may be made because of information given.

(5) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) ensures complete confidentiality of customer's identity, birth details and the prediction details. MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) further ensures that no use will be made of the information that may come to the knowledge of the management of the site or revealed in the horoscope of the customer. Such information will only be used to communicate to the customer or will be retained in the databank for referencing purpose if you may need to consult in future.

(6) Any type of Legal Claim shall be limited to any amounts you may have paid to MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) shall have no other Liability except to the extent permitted by applicable law. In no event will MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) be liable for any indirect, consequential, incidental, special, multiple, punitive, or similar damages.

(7) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) reserves the right to change, modify, add or delete portions of the Terms of Use at any time. Your continued use following any changes in the terms indicates your acceptance to the changes.